इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

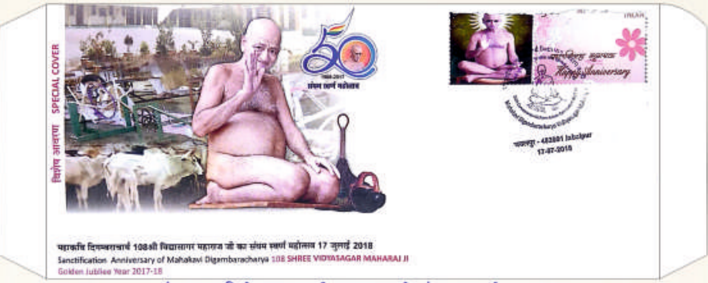

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		सितम्बर 2023	
16	शनिवार	प्रतिपदा	उत्तराफाल्गुनी
17	रविवार	द्वितीया	हस्त
18	सोमवार	तृतीया	चित्रा
19	मंगलवार	चतुर्थी	स्वाती
20	बुधवार	पंचमी	विशाखा
21	गुरुवार	षष्ठी	अनुराधा
22	शुक्रवार	सप्तमी	ज्येष्ठा
23	शनिवार	अष्मी	मूल
24	रविवार	नवमी/दशमी	पूर्वाषाढ
25	सोमवार	एकादशी	उत्तराषाढ
26	मंगलवार	द्वादशी	श्रवण
27	बुधवार	त्रयोदशी	धनिष्ठा-शतभिषा
28	गुरुवार	चतुर्दशी	पूर्वाभाद्रपद
29	शुक्रवार	पूर्णिमा	उत्तराभाद्रपद
30	शनिवार	प्रतिपदा	रेवती
		अक्टूबर 2023	
1	रविवार	द्वितीय/तृतीया	अश्विनी
2	सोमवार	चतुर्थी	भरणी
3	मंगलवार	पंचमी	कृतिका
4	बुधवार	षष्ठी	रोहिणी
5	गुरुवार	सप्तमी	मृगशिरा
6	शुक्रवार	अष्मी	आर्द्रा
7	शनिवार	अष्मी	पुनर्वसु
8	रविवार	नवमी	पुष्य
9	सोमवार	दशमी	आश्लेषा
10	मंगलवार	एकादशी	मघा दिन-रात
11	बुधवार	द्वादशी	मघा
12	गुरुवार	त्रयोदशी	पूर्वाफाल्गुनी
13	शुक्रवार	चतुर्दशी	उत्तराफाल्गुनी
14	शनिवार	अमावस	हस्त
15	रविवार	प्रतिपदा	चित्रा

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः सितम्बर-18,21,22
मशीनरी प्रारंभ : सितम्बर-18,21,22
वाहन खरीदनेः सितम्बर-27,30 अक्टूबर-5,7
संपत्ति क्रयः सितम्बर-21,22,28 अक्टूबर-5,12

तीर्थंकर कल्याणक

21 सितम्बरः भगवान सुपार्श्वनाथ गर्भ कल्याणक
23 सितम्बरः भगवान पुष्पदन्त जी मोक्ष कल्याणक
28 सितम्बरः भगवान वासूपूज्य जी मोक्ष कल्याणक
01 अक्टूबरः भगवान नमिनाथ जी गर्भ कल्याणक
15 अक्टूबरः भगवान नेमिनाथ ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 सितम्बरः लब्धिविधान व्रत प्रारंभ, बारहसौ चौतीस चारित्र शुद्ध व्रत प्रारंभ करने की तिथि
18 सितम्बरःत्रिलोक तीज (रोट तीज)
19 सितम्बरःलब्धिविधान व्रत पूर्ण, दशलक्षण व्रत प्रारंभ
20 सितम्बरःपुष्पांजलि व्रत प्रारंभ
22 सितम्बरःमुक्तावली व्रत, शील सप्तमी
24 सितम्बरःपुष्पांजलि व्रत पूर्ण, सुगंध दशमी व्रत,अनंत व्रत प्रारंभ
27 सितम्बरः रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
28 सितम्बरः दशलक्षण व्रत पूर्ण, अनंत व्रत पूर्ण, अनंत चतुर्दशी
29 सितम्बरः रत्नत्रय व्रत पूर्ण
30 सितम्बरः क्षमावाणी, षोडशकारण व्रत पूर्ण, मेघमाला व्रत पूर्ण
04 अक्टूबरःरोहिणी व्रत, मुक्तावली व्रत
12 अक्टूबरः मुक्तावली व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

17 सितम्बरः 06/12 बजे से 23/01 बजे तक ।
20 सितम्बरः 14/59 बजे से 30/15 बजे तक ।
21 सितम्बरः 06/15 बजे से 15/35 बजे तक ।
24 सितम्बरः 13/42 बजे से 30/16 बजे तक ।
25 सितम्बरः 11/55 बजे से 30/16 बजे तक ।
29 सितम्बरः 23/18 बजे से 30/18 बजे तक ।
01 अक्टूबरः 06/18 बजे से 19/27 बजे तक ।
03 अक्टूबरः 06/19 बजे से 18/04 बजे तक ।
04 अक्टूबरः 06/19 बजे से 30/19 बजे तक ।
06 अक्टूबरः 21/32 बजे से 30/20 बजे तक ।
08 अक्टूबरः 06/20 बजे से 26/45 बजे तक ।

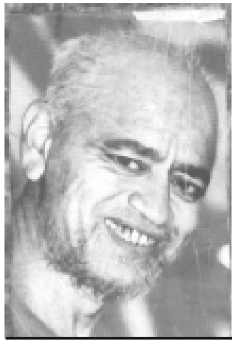

रजत वर्ष विशेषांक संस्कार सागर

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 293 • सितम्बर 2023
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

• रजत मुनि दीक्षा दिवसः संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह 08
• महाअर्चनाः आचार्य छत्तीसी विधान 20
• संस्कार सागर की समीक्षा और सुझाव 21
• जैन विद्या संस्कृति मंच 2023 24
• नारी चेतना मुखर हुई संस्कार सागर के माध्यम से 25
• संस्कार सागर एवं स्वास्थ्य 30
• बहुआयामी नवजागरणः संस्कार सागर 32
• पत्रकारिता के क्षेत्र में संस्कार सागर 50
• संस्कार सागर अवदान एवं मूल्यांकन 53
• संस्कार सागर का प्रतिस्पर्धा स्वरूप 55
• **वरिष्ठ नागरिकः** ढलती उम्र में भक्ति-प्रार्थना 57
• कब्ज की नब्ज कारण व नियंत्रण उपाय 59

बाल कहानी

• हिन्दी माध्यम का कमाल 62

कविता

• मुद्रा की गहराई 26
• शिक्षक 35
• सूअर का सवाल 52
• शिरपुर तीर्थ महान 58

कहानी

• पिता के आँसू 44

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 19
चलो देखें यात्रा : 24 • आगम दर्शन :27 • माथा पच्ची : 28 • पुराण प्रेरणा : 29
• कैरियर गाइड : 36 • दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानिये: 42 •दिशा बोध : 43
हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 00410501357 5 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, पूर्व न्यायाधीश ''विमला जैन'' का लेख ''स्वाध्याय बने जीवन का अंग'' मुझे बहुत पसंद आया जिसमें कहा गया है कि ग्रंथ के बिना ईश्वर-मौन, न्याय- निद्रा, ध्यान और दर्शन-लंगड़ा होता है शब्द गूंगे होते हैं। ग्रंथ से ही सबका जीवन आदर्श बनता है स्वाध्याय में क्रम बद्धता का ध्यान रखना भी अनिवार्य होता है। अक्रम से किया स्वाध्याय अनर्थ की जड़ है। ग्रंथों का चयन करते समय चारों अनुयोगों के समन्वय का ध्यान अवश्य रखें लेख की भाषा सरल सुबोध और प्रांजल है। सुझाव अनुकरणीय है।

दिव्या जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, विद्वान लेखक सुनील संचय के लेख ने मुझे बहुत कुछ सोचने को मजबूर कर दिया उनके ''रक्षा के संकल्प का पर्व रक्षाबंधन'' शीर्षक ने अपने लेख का मंतव्य स्पष्ट कर दिया है। इस लेख का यह परिच्छेद काफी चिन्तनीय अनुकरणीय है इसमें कहा गया है। पहले बहिन की स्त्री की सुरक्षा केवल घर की चार दीवारी के अंदर की जाती थी लेकिन आज जब हम इंटरनेट के युग में प्रवेश कर गये हैं। तब संबंधों के मायने में भी परिवर्तन आने लगा है अंधी प्रगति की दौड़ में पारिवारिक मान्यताएँ प्रथायें रीति रिवाज पर्व त्यौहार की मान्यताओं में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। नैतिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ाकर रख दी हैं। लेख उत्तम श्रेणी का है पठनीय, चिंतनीय और अनुकरणीय है।

रितु जेन, तेंदूखेड़ा

• सम्पादक महोदय, ट्विटर के सामने एक नया एप प्रारंभ हुआ है जिसको थ्रेड के नाम से जाना जायेगा अनेक अध्ययनों से मालूम चलता है कि इन दिनों हमारा सबसे अधिक समय सोशल मीडिया के साथ बीतता है। सोशल मीड़िया पर इंगेजमेंट का प्रभाव नकारात्मक और समय बर्बादी हमें कहाँ ले जायेगी यह कहा नहीं जा सकता है। पहले औसतन समय 2 घंटे 27 मिनट सोशल मीडिया के साथ बीतता था अब थ्रेडस आने के बाद परिवार के संबंधों में दूरी बढ़ने का खतरा मड़रायेगा। युवाओं की समझ जागृत करना आवश्यक है।

आकाश जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों से देश में समान नागरिक संहिता की बात बहुत जोर-शोर से उठ रही हैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी अपनी सभा में कह रहे हैं देश एक कानून दो कैसे चल सकते हैं। परंतु विपक्ष का कहना है कि विपक्षी एकता को असफल करने के लिये भाजपा ने अपना कार्ड फेंका है कुछ राजनैतिक विशेषज्ञों का मानना है कि चुनाव को देखते हुये सत्ता पक्ष ने अपनी असफलताओं को छुपाने के लिये समान नागरिक कानून लाने की बात कहकर जनता को भ्रमित करने की चेष्टा की परंतु इन सबके बावजूद भी देश में एक समान कानून बनाना सर्वमान्य न्याय की भूमिका प्रदान करता है। इसे लागू करने हेतु राजनीति से परे रखा जा सकता है।

जितेन्द्र पाटीदार, इंदौर

भक्ति तरंग
भूलि अनादि मिटाय दे

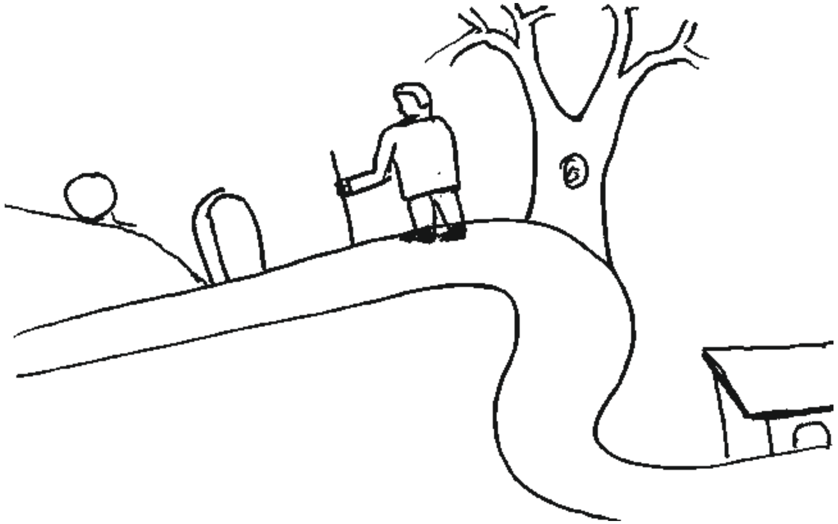

तेरो गुण गावत हूँ मैं, निजहित मोहि जताय दे ।। टेक ।।
शिवपुर मौकों सुधि नाहीं, भूमि अनादि मिटाय दे ।। तेरो ।।
भ्रमत फिरत हूँ भव वनमाहीं, शिवपुर बाट बताय दे ।
मोहू नींदवश घूमत हूँ नित, ज्ञान बधाय जगाय दे ।। तेरो ।।1।।
कर्म शत्रु भव भव दुख दे हैं, इनतैं मोहि छुटाय दे ।
'बुधजन' तुम चरना सिर नावै, एती बात बनाय दे ।। तेरो ।।2।।

हे प्रभु ! मैं आपके गुणों की स्तुति करता हूँ, क्योंकि वे ही मुझे यह बताने वाले हैं कि मेरा हित किसमें है । मुझे मोक्ष का ज्ञान नहीं है, यह मेरी अनादि की भूल है । मैं आपका गुण-स्तवन करता हूँ, आप मेरी इस भूल को सुधार दें, मिटा दें।

मैं मोह की नींद में गाफिल-अचेत होकर इस भवरूपी वन में भटक रहा हूँ। मेरे प्रमाद का नाशकर मुझे ज्ञान करा दें, बोध करा दें, मुझे चेता दें-जगादें। मुझे मोक्ष की राह बता दें।

ये कर्म मेरे शत्रु हैं, ये भव-भव में जन्म-जन्मांतर में मुझे दुख ही देने वाले है। इनसे मेरी रक्षाकर मुझे बचा दें, मुझे इनसे छुड़ादें। बुधजन आपके चरणों में शीश नमाते हुये विनती करते हैं कि हे प्रभु! मेरी इतनी सी बात बना दो, मेरी इतनी सी बात पूरी कर दो।

संस्कार प्रवाह

यात्रा 25 वर्ष की

जैन पत्रकारिता में 25 वर्ष से धूम मचाने वाली स्थापत्य पत्रिका संस्कार सागर कई कीर्तिमान स्थापित किये हे। पंथ के संकीर्ण विचारों को दर किनार करके अनेकांत और स्याद्वाद के मान्य मूल्यों का जन-जन पहुँचाने का काम जिस शैली में संस्कार सागर वह विशिष्ट सभी जैन मनीषियों को पसंद आई है । नवीनता मौलिकता और प्रमाणिकता की राह पर चलने वाली इस पत्रिका ने जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। 25 वर्ष के काल में कभी कोई अंक बाधित नहीं हुआ परंतु हम कोविड काल में लाचर हुये अतः दो वर्ष में 5 अंक प्रकाशन से बाहर रहे।

महिला, युवा, बाल, विद्वान वर्ग को ध्यान में रखकर सामग्री परोसना सचमुच एक कठिन कार्य है महिला वर्ग के जैन पाककला, माथापच्ची, वर्ग पहेली जैसे स्तंभ निर्धारित किये गये हैं । युवा वर्ग की दृष्टि से संस्कार सागर पत्रिका में कैरियर गाईड, दुनिया भर की बातें, इसे भी जानियें, दिशाबोध, कहानी जैसे स्तंभों के माध्यम से सामग्री प्रकाशित की जाती है। विद्वान वर्ग के लिये संस्कार प्रवाह, आगम दर्शन, पुराण प्रेरणा, हमारे गौरव जैसे स्तंभ से संस्कार सागर गरिमा सम प्रस्तुति देने में सफल रहा है।

बाल साहित्य की दिशा में इस पत्रिका ने खूब बाहबाही बटोरी है। संस्कार गीत, संस्कार खेल, बाल कहानी, बाल कविता जैसे निर्वाण स्तंभों ने समाज की बाल पीढ़ियों में निर्माण का बेहतर कार्य किया है।

तीर्थ रक्षा के उद्देश्य गठित दिगम्बर जैन युवक संघ ने दिगम्बर जैन संस्कृति के वैशिष्ट्य को घर-घर तक पहुंचाने हेतु संस्कार सागर पत्रिका का प्रकाशन 18 अप्रैल 1999 से प्रारंभ किया। पंथजाति, संत संघवाद से ऊपर उठकर दिगम्बर समाज का संगठन करना संगठन का संकल्प था। अब देखना यह है कि हम अपने सपने को साकार करने में कितने सफल हुये और कितने असफल इसको पाठक के ऊपर छोड़ देना ही हम उचित समझते है गर्वेक्ति करने की अपेक्षा हम अपनी त्रुटियों को अधिक स्वीकार करेंगे क्योंकि पत्रिका के माध्यम से हमें तीर्थो की रक्षा करना है और जिनशासन की महिमा जन-जन तक पहुँचाना अज्ञान तिमिर नष्ट करना हमारा लक्ष्य है। इसे पाने के लिये हम कृत संकल्पित हैं ।

रजत मुनि दीक्षा दिवसः संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह

प्रस्तोताः अभिनंदन सांधेलीय पत्रकार, पाटन (जबलपुर)

अक्षय तृतीयाः 22 अप्रैल से 23 अप्रैल 2023

अध्यात्म सरोवर के राजहंस, श्रमण संस्कृति के उन्नायक, धर्म प्रभाकर, ज्ञान सूर्य, चारित्र चक्रवर्ती , सिद्धांत रत्न, महाकवि, अहिंसा के अग्रदूत, जीव दया के मसीहा, युग प्रवर्तक संत, महावीर के लघुनंदन, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज मंगल आशीर्वाद एवं उनके प्रभावक शिष्य मुनि श्री विमलसागर जी मुनिराज, मुनिश्री अनंतसागरजी मुनिराज, मुनि श्री धर्मसागर जी मुनिराज एवं मुनि श्री भावसागर जी मुनिराज के पावन सान्निध्य में रजत मुनि दीक्षा दिवसः संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह अक्षय तृतीयाः 22 अप्रैल से 23 अप्रैल 2023 तीर्थंकर वाटिका इंदौर में श्री दिगम्बर जैन युवा संघ एवं श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट इंदौर के आयोजकत्व में धूमधाम के साथ श्रद्धा और भक्ति पूर्वक सानंद सम्पन्न हुआ।

22 अप्रैल 2023 शनिवारः अक्षय तृतीया- प्रथम दिवस

रजत मुनि दीक्षा दिवस एवं संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह का मंगलचरण ब्र. जय निशांत के आचार्यत्व में अभिषेक-शांतिधारा तथा पूजन-अर्चन हर्ष और उल्लास के साथ सानंद संपन्न कराया संगीतकार पंकज जैन इंदौर ने।

पूजन-अर्चन के बाद मुनिद्वय की मंगल आगवानी गाजे-बाजों के साथ हुई। तीर्थंकर वाटिका के प्रवेश द्वार पर **ब्र. जिनेश मलैया** ने मुनिराजों का पाद प्रक्षालन किया। तत्पश्चात आचार्य श्री संगीत सभी पूजन सुधी श्रावकों एवं श्राविकाओं ने अष्ट द्रव्यों से श्रद्धा-भक्ति के साथ संपन्न की।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चित्र का अनावरण श्री संजय जैन, श्रीमती विधि जैन गंजबासौदा डॉ. ज्योति जैन खतौली, ब्र. जय निशांत, पं. विनोद जैन रजवांस, सुनील संचय ने किया। मुनिद्वय का पाद प्रक्षालन डॉ. संदीप जैन, गौरव जैन एवं आगत विद्वत समाज ने किया। मुनिराजों को शास्त्रदान किया श्री संजय जैन, श्रीमति निधी जैन एवं आगत विद्वत समाज ने किया। गुणानुवाद किया हुकुमचंद जी सांवला उपाध्यक्ष अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष विश्व हिंदु परिषद ने।

मुनि श्री अनंतसागर जी मुनिराज- ने महती धर्मसभा को उपदेशामृत का पान कराते हुये कहा कि आचार्यों ने संसार से छुटकारा पाने के लिये संयम के मार्ग को अंगीकार करने कहा है।

आज के दिन 23 ब्रह्मचारी भाइयों पर कृपा कर गुरुदेव ने दीक्षा दी। दीक्षा उन्हें प्राप्त होती है जिनका पुण्य प्रबल होता है। हम लोगों ने संकल्प कर लिया था, जब भी दीक्षा लेंगे गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी से लेंगे। गुरुवर को जब देनी होगी तब मिल जायेगी। हमें राह तो मिले। गुरुदेव से समय पाकर व्रत मिला। अक्षय तृतीया के तीन दिन पहिले आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत मिला।

1998 में सागर (म.प्र.) निवेदन का घर जाने की आज्ञा मांगी। चातुर्मास स्थापना के एक दिन पूर्व आ जाने की बात कहकर गुरुदेव ने आज्ञा प्रदान की। आचार्य श्री के सान्निध्य में हम लोगों की साधना चलती रही। एक-एक दिन वर्षों जैसे लगता था।

गुरुदेव का संकेत पाकर पुनः संघ में आ गये। गुरुवर ने चर्चा में कहा कि हमारे भाव मुनि बनाने के है । किसी से चर्चा नहीं करना। सवा पांच लाख जप करना है, चाहे दीक्षा भी हो जाये। अभ्यास करते रहे। 8 फरवरी को केशलोंच भी कर लिये। प्रतिमा के व्रत मांगे, गुरूदेव ने कहा तुम्हें इकट्ठा मिलेगा।

कुण्डलपुर से नेमावर का 463 किलोमीटर का विहार हुआ। दीक्षा से पहिले तीर्थयात्रा के भाव थे। गुरूकृपा से वह भी पूर्ण हुई। पहिले रात्रि भोजन भी किया। गुरुवर का ऐसा जादू चला सब कुछ छूट गया।

अक्षय तृतीया पर तारंगा जी में दीक्षा की जानकारी मिली वहां गये। अपनी भावना गुरुवर से कही, चर्चा भी हुई। सभी बातें सुनी, घर जाने की आज्ञा मांगी गुरुवर ने कहा आज सोला नहीं पहिनना है ? सोला पहिना और गुरुदेव का पड़गाहन मिला।

संयम का अर्थ होता है, मन पर लगाम का होना। जहाँ संयम नहीं वह असंयमी मार्ग होता है। घोड़े को लगाम लगा रहता है वह गंतव्य पर पहुंच जाता है। संयम लेने भर से काम नहीं चलता है, जागृत भी रहना पड़ता है। गाड़ी एक बार ली जाती है। पेट्रोल, जीवन भर लिया जाता है।

संयम लेने भर से काम नहीं चलता, विषय कषायों से संयम को बचाना भी पड़ता है। संयम को निश-दिन याद रखों।

गुरुदेव ने कहा हमने दीक्षा नहीं दी हैं, तुमने स्वयं ली है। जो भी संकेत गुरुदेव से मिलते रहे उसी के अनुसार संयम मार्ग पर चलने का प्रयास करते रहे। अरिहंतों और सिद्धों को नमस्कार करते रहो, संयम को प्रशस्त करते रहो। संयम सुरक्षा के उपाय भी दिये। धर्म आराधना भी कराई।

एक ही बात बार-बार याद आती हमने संयम लेने में देरकर दिया। संसार सागर से पार करने के लिये श्रमण धर्म अंगीकार किया। बेलगाम घोड़े को संयमित कर दिया। गुरुदेव कहते है कोई चिंता नहीं करना। बुखार आया है, चला जायेगा। दुःखों से छुटकारा और संसार का अभाव करना है तो संयम मार्ग पर चलें।

देवों, नारकी और तिर्यंचों में संयम नहीं होता। मनुष्य पर्याय में ही संयम पल सकता है। केशलोंच और प्रतिक्रमण में निराश्रित नहीं होना चाहिये खुद करना चाहिये। **निर्दोष चर्या को पालन करने वाले पर की अपेक्षा नहीं रखता। विशुद्धि बढ़ती रहे। संसार भ्रमण समाप्त हो जायेगा।**

द्वितीय सत्र- दोपहर 2.30 बजे से द्वितीय सत्र प्रारंभ हुआ। जिसकी अध्यक्षता ब्र. जय निशांत जी ने की। सत्र के मुख्य अतिथि रहे हुकुमंचद जी सांवला और विशिष्ट अतिथि रहे ब्र. सुदेश कोठिया। मंगलाचरण प्रस्तुत किया डॉ. शुभि मारौरा ने।

सुनील संचय- ने संचालन करते हुये **संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह** के वैशिष्ट पर प्रकाश डालते कहा 200 वर्ष प्राचीन है जैन पत्रकारिता का एक शतक पूर्ण हुआ। न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका के साथ पत्रकारिता को चौथा स्तंभ कहा गया है।

राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर से 7000 (सात हजार) प्रश्न किये थे। जैन पत्रकारिता ने कभी व्यापक स्वरूप नहीं रखा है। उसका एक मात्र लक्ष्य था समाज सुधार। उसी के साथ समाज में एक रूपता के लिये कार्य किया। आज से 25 वर्ष पूर्व **संस्कार सागर** प्रारंभ हुआ। उतार- चढ़ाव आये पर

कभी प्रकाशन बंद नहीं हुआ। संस्कार सागर अपने दृढ़ संकल्प के लिये सजग एवं कटिबद्ध है।

डॉ. मुकेश जैन (विमल) - ने संस्कार सागर की विज्ञापन नीति एवं आप दंडो पर प्रकाश डालते हुये द्वितीय सत्र के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जानकारी दी।

गुरुचरण पड़ते ही ऊर्जा का संचार हमारे अंदर आ जाता है। बच्चों से बूढ़ों तक, ज्ञानी से अज्ञानी तक संस्कार सागर सभी के लिये उपयोगी सामग्री रहती है।

एलक सिद्धांत सागर जी इसके प्रेरणा स्त्रोत है। संस्कार सागर के प्रथम अंक से आज तक विज्ञापन को प्राथमिका नहीं दी है ? जैन समाज की इंडिया टुडे है संस्कार सागर। प्रारंभ से हमारी जो रीति नीति है उसका अक्षर सहपालन हो रहा है जो स्तंभ प्रारंभ से शुरु हैं , आज भी उनका स्वरूप नहीं बदला है। आज 6000 प्रतियां छप रही हैं। प्रसार और प्रचार के लिये कई नीति अपनाई जा रही है।

जैन युवा संघ द्वार पत्रिका का संपादन और प्रकाशन होता है। **संस्कारों का शंखनाद श्रमण परंपरा के लिये है। सभी संयुक्त अंक नहीं निकाला। प्रतिमाह पत्रिका के प्रकाशन में प्रमुख भूमिका रहती है, ब्र. जिनेश मलैया की।**

सुनील संचय ने संस्कार सागर की यात्रा के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला है। **चातुर्मास विशेषांक के कारण संस्कार सागर पूरे भारत वर्ष में चर्चित है।** संपूर्ण जानकारी खोज पूर्ण एवं श्रमसाधक है। उसे शोध ग्रंथ कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। **ब्र. जिनेश मलैया** का समर्पण अभिनंदनीय है।

डॉ. आशा जैन- ने संस्कार सागर और संयममय सेहत विषय पर अपनी बात रखते हुये कहा स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ मन का निवास रहता है। हमारे भोजन की थाली हमारे स्वास्थ्य का रक्षक है। **जैसा खाये अन्न वैसा होगा मन।** घर का भोजन होटलों के भोजन से श्रेष्ठ रहता है। हमारी रसोई भी एक औषधालय का कार्य करता है, आवश्यकता है उसकी जानकारी की। संयुक्त परिवार में दादी/नानी के अचूक नुस्खों से हमें वैद्य/डाक्टरों की जरूरत नहीं पड़ती।

संस्कार सागर की स्वास्थ्य सामग्री से कई लाभान्वित हो रहे है। साधारण बीमारी का उपचार हमारी रसोई में समाहित है। **एक अंक स्वास्थ्य के लिये संरक्षित किया जावे। जिसमें नुस्खों की जानकारी हो जो रसोई सामग्री से हो तो पत्रिका उपयोगी और लाभप्रद भी होगी।**

डॉ. संगीता विनायका- ने संस्कार सागर और आवरण सज्जा पर अपनी बात रखते हुये कहा कि धार्मिक, सामाजिक, संस्कृति एवं मनोरंजन की विषय वस्तु को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। इसमें प्रतीकात्मक चित्र होते है जो बिना कहे सब कुछ कह जाते है। 25 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रहा है। संपादक मंडल श्रमसाध्य कार्यकर समाज में जन चेतना की अलख जगा रही है। यह अनुकरणीय है। निश्चित ही युवा पीढ़ी भी अपने ज्ञान को परिमार्जित करेगी। समाज को दिशा निर्देश क्षेत्र देने में जागरूक, करने में, सांस्कृतिक चेतना के लिये पत्रिका सतत प्रयत्नशील है।

डॉ. शुभि मारौरा- संस्कार सागर और सामाजिक विषय पर अपने विचार रखते हुये कहा कि भारत में विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकायें में अपने क्षेत्र में मानव को ज्ञानवान एवं विवेकवान

बनाने में अग्रणी है। जिनके हाथों में समाज की डोर है वे स्वयं भटक गये है।

दिगम्बर जैन युवा संघ के माध्यम से 24 वर्ष पूर्व जिन प्रसंगों के लिया पत्रिका का प्रकाशन हुआ था। आज भी वे प्रासांगिक हैं। बहुयामी स्तंभो के माध्यम से समाज की दिशा/दशा बदलने में संस्कार सागर अग्रणी है। मनन-चिंतन और प्रवचन के माध्यम से हमारी संस्कृति का दिशा बोध करा रही है। पत्रिका/स्तंभों के माध्यम से पत्रिका मनमोहक एवं संग्रहणीय है।

मुख्य अतिथि की आसंदी से हुकमचंद सांवला ने कहा कि सम सामायिक विषयों पर मुनिराज एवं आचार्यगण मार्गदर्शन दे। विश्व की एक ज्वलंत समस्या से धर्मसभा को संबोधित करते हुये उन्होंने कहा समलैगिकता पर सुप्रीम कोर्ट में कैस चल रहा है। देश के सामने बढ़ा संकट खड़ा हो रहा है। बोलने की आजादी का दुरुपयोग हो रहा है। **इस विषय में जैन आचार्यों का क्या मत है।** विदेश के 35 देशों में मान्यता है। उनकी संस्कृति और हमारी संस्कृति में अन्तर है।

दिगम्बर जैन युवा संघ को भी पत्रिका के माध्यम से समाज को जागृत और सक्रिय करना आवश्यक है। साधु संस्था के बिहार के लिये जागृति आवश्यक है। **मंदिरो की सुरक्षा दायित्व किसका है। कौन करेगा मंदिरों की सुरक्षा ?**

संस्कार सागर इस समय प्रभावशील है। पद विहारी साधुओं से संपर्क करना भी जरूरी है। आई.ए.एस एवं आई.पी.एस. के स्थानातरण की सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान को दी जाते जिससे हमें उनका सहयोग मिलता रहे।

आस्था का अर्थशास्त्र क्या है ? देश के 55 प्रतिशत व्यक्ति यात्रा करते हैं 648907 (छह लाख अड़तालीस हजार नौ सौ सात) मंदिर है। सात लाख मस्जिद है। 35 हजार चर्च है।

सम्मेद शिखर जी में 5 हजार डोली है। 15 हजार व्यक्ति उठाते हैं जो 80 गांव के लोग है। हमें उनके लिये भी सोचना होगा। महाकाल वाराणसी का विकास हुआ। हमारे मंदिरों और तीर्थों का विकास कैसे हो इस पर भी विचार आवश्यक है। दुष्परिणाम पर चिंतन जरूरी है।

ब्र. जय निशांत- ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन कहा कि सभी वक्ताओं ने अपने विषय का अच्छे ढंग से निर्वाहन किया। सुनील संचय ने कुशलता से संचालन किया है। एलक सिद्धांत सागर जी को सोच, उनका श्रम, उनका मार्गदर्शन वंदनीय है। चातुर्मास का अंक सभी को व्यवस्थित भेजा जाता है। कई विधा के व्यक्ति यहाँ उपस्थित है उनकी विधाओं का सही उपयोग संस्कार सागर को मिलना चाहिये।

निशांत जी ने कुछ समसामायिक विषयों पर समाज का ध्यान आकृषण करते हुये कहा कि बढ़ती हुई मंदिरों की संख्या, घटती हुई समाज की संख्या चिंतनीय है। त्यागी-व्रती, माता-पिता है, उनका त्याग भरे जीवन का निर्वाह होगा विचारणीय है ? समाज के बढ़ते विखराल को रोकना होगा मीडिया में अच्छे संदेश खोते जा रहे है। हमें व्यक्ति से नहीं व्यक्तित्व से जुड़ना है और चारित्रता पर विराम लगाना होगा।

तृतीय सत्र- सायंकाल आचार्य भक्ति मुनिराज द्वय के सान्निध्य में सम्पन्न होकर तीर्थंकर वाटिका के स्थापित अस्थाई जिनालय में विराजमान श्री जी भक्तिभाव से श्रद्धालुजनों आरती कर

अपने को सौभाग्यशाली माना तदुपरांत श्रीमती संगीता मेहता जी की अध्यक्षता में आज का तृतीय सत्र प्रारंभ हुआ।

पं. विनोद कुमार रजवांस ने- संस्कार सागर की समीक्षा कर सुझाव भी प्रस्तुत किये। संस्कार सागर अनेक विषयों पर समृद्ध है। बहुत सी पत्रिकायें सामान्य वर्ग की होती है। परन्तु इस पत्रिका में सभी वर्गों के लिये पर्याप्त सामग्री रहती है। पत्रिका की यात्रा निरंतर चल रही है। चातुर्मास अंक का सभी को इंतजार रहता है। देश की संत परंपरा के सही आंकड़े इसमें समाहित रहते है। समस्या पूर्ति के माध्यम से यह विधा जीवित है।

सैद्धांतिक लेख, सामान्य लेख के साथ ही साथ आगम विरूद्ध कार्यों को उद्घाटित किया जाता है। **संस्कार प्रवाह** के नाम से संपादकीय लिखी जाती है। जिसमें कड़वी बात को मीठी चासनी के साथ शिष्ट भाषा में बताई जाती है।

संस्कार सागर का रजत विशेषांक निकाला जाये जिसमें सभी प्रकार की सामग्री रहे। शोधार्थी के शोधलेखों को भी स्थान दिया जाये। शोध पत्रिका निकाली जाये। संयुक्त अंक न निकालें।

डॉ. ज्योति जैन- महिला संपादक ने अपने विचार रखते हुये कहा कि आज समाज को सशक्त औऱ सुदृढ़ करने का दायित्व नारी वर्ग को है। पत्रिकाएँ समाज का आइना है। नारी चेतना की सर्वाधिक करता है। नारी, समाज का मुख्य अंग है और समाज का बलशाली बनाती है। समाज परिवार- संस्था संकट में है पर चिंता व्यक्त करते हुये कहा कि डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक कहते है समाज को जागरूक करने के लिये अच्छा साहित्य पढ़ों और पढ़ने दो। अतः हमारा दायित्व है कि नारी जन जागरण के लिये विशेष प्रयास करे। दामत्पय विशेषांक निकाला जाये जिसमें नारी की भूमिका कैसी हो यह बताया जाये। नीतिकारों ने कहा है कि मां ही बच्चों को प्रथम गुरु होती है।

डॉ. बाहुबलि जैन- ने कहा कि सामाजिक चेतना का निर्माण पत्रिका का मूल उद्देश्य है और उसमें वह सफल रही है। जनजागरण से समाज में चेतना और उत्साह बढ़ता है जो उत्थान में सहायक है।

23 अप्रैल 2023: द्वितीय दिवस - रजत मुनि दीक्षा दिवसः संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह के द्वितीय दिवस पर अभिषेक-शांतिधारा तथा पूजन-अर्चन श्रद्धा और भक्ति के साथ संपन्न हुई। तदुपरांत चित्र अनावरण एवं द्वीप प्रज्जवलन हँसमुख गांधी एवं तुलसी नगर जैन समाज तथा फास्ट अकादमी के छात्र -छात्राओं ने किया। मुनिसंघ को शास्त्रदान करने का सुअवसर पाया सुनील विलाला, हंसमुख गांधी, दिलीप मेहता, डॉ. संगीता मेहता, बिंदु दीदी राजकोट, सुभाष मोदी खिमलासा एवं आगत विद्वत समाज ने।

मुनिराज विमलसागर जी महाराज -ने महती धर्मसभा को अपने वचनामृत से लाभान्वित करते हुये कहा कि आज आपने सुना होगा। हमने कितने भगवानों की जय बोली है। मंगलाचरण के समय आप कहीं चले गये। जो मन-वचन-काय से मंगलाचरण में सम्मिलित हो जाता है। उसका कल्याण होना निश्चित है। मंगलाचरण तनमय होकर किया जाता है।

आदि का स्मरण किया। कल भी अक्षय तृतीया थी, आज भी है। आप लोग सौभाग्यशाली है। आपको दो-दो दिन मिले। जो वृती है अपने लिये भोजन बनाते हैं वे चाहते है कि हमारी भी अक्षय तृतीया हो जावे अक्षय द्वितीया भी होती है। आपके घर पर निग्रंथ दिगंबर महाराज

आ जायें वह आपकी तिथि भी अक्षय होती हैं और यदि आचार्य परमेष्ठी आ जायें तो कहना क्या। वह अक्षय पुण्य को प्राप्त कर लेता है।

आचार्य भगवंतों ने कहा है कि आहार की क्रिया साधारण नहीं है। अक्षय पुण्य संचय करने का अवसर देता है। पंचम काल के अंत तक भावलिंगी मुनिराज होगे।

नेमावर के पार्श्वनाथ की जय बोली वह अतिशयकारी प्रतिमा जी है। आचार्य श्री को भी रोक लिया। कई दीक्षायें हुई। कई चातुर्मास हुये। गुरुवर ने 28 मूलगुणों का रोपण किया। मेरी सभी चीजें बढ़ती जाती है। मुझे 25-50 से मतलब नहीं है। हमारी एक ही भावना है मैं अपना अंतिम समाधि महोत्सव मनाऊँ, मैं उसी में लगा हूँ।

एक संस्मरण सुनाते हुये मुनिराज ने कहा गर्मी का समय था। बहोरीबंद तीर्थं पर थे। समाज नहीं थी। दीक्षा दिवस कौन मनाये। हमने अपने बड़े महाराजों के सान्निध्य में उनको सुना और संस्मरण सुनायें।

जो अपने वैराग्य को बढ़ता चला जाता है उसी की दीक्षा सफल है। इंद्रियों के ऊपर विजय प्राप्त करना, ध्यान में आनंदित होना, एकाग्रता बढ़ाना। ये चीजें उन्हें ही प्राप्त होती है जिनका संसार परिभ्रमण निकट होता है। गुरुवर का मार्गदर्शन मिलता रहे।

संस्कार सागर पत्रिका को शुभाशीष देते हुये मुनिवर ने कहा **संख्या के ऊपर नहीं जाना। पत्रिका यदि संयमी के हाथ चली जाये तब आपकी पत्रिका की सार्थकता है। चातुर्मास अंक की सभी साधुओं को प्रतीक्षा रहती है।**

प्रदर्शन उथला- दर्शन गहरा- यह आचार्य श्री का कथन है। सहयोगियों के लिये आशीर्वाद है। अच्छे विद्वानों के , मुनिराजों के, आचार्यो के आलेख आना चाहिये।

भावना अच्छी रखो- प्रभावना होती चली जायेगी। भगवान महावीर की कृपा हुई गणधर मिले। परंपरा से चलते **शांति-ज्ञान मिले। आचार्य श्री मिले। गुरुदेव द्वारा महती प्रभावना हो रही है। लघु बनकर गुरु शरण में जाते हैं वे गुरुवर बन जाते है।**

मुनि श्री भावसागर महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुये कहा आज का यह पावन प्रसंग मिला। आप लोग मुनि दीक्षा का रजत वर्ष मना रहे है। संस्कार सागर का भी रजत वर्ष है। सभी में सागर जुड़े है।

''आचार्य श्री की भावना थी कि पत्रिका में अच्छे आलेख विद्वान दें। उन्हें अर्थ भी प्रदान किया जावे। संस्कार सागर पत्रिका में जो आलेख आते है वे सभी उच्चकोटि के होते हैं । चातुर्मास अंक के साथ-साथ शीतकाल एवं ग्रीष्मकाल की भी जानकारी देने का प्रयास होना चाहिये।''

आचार्य श्री निर्विवाद संत है। आज 77 वर्ष की उम्र में भी विहार कर रहे है। वे शरीर की परवाह नहीं करते है। गुरुदेव अपने ढंग से मूलाचार को ध्यान में रखकर चल रहे है।

ग्रीष्मकाल की तपन में नेमावर में 23 दीक्षायें दी थी। मुनि श्री विमलसागर जी सहृदयी है। वात्सल्य की मूर्ति है। ससत साधना शील रहते हैं। मुनिश्री अनंतसागर भी अपनी साधना में आगे बढ़ रहे हैं। मुनिश्री धर्मसागर की साधना सतत चलती रहती है।

आज दर्शन का कम प्रदर्शन का जमाना है। धर्म भी प्रदर्शन का विषय बनता जा रहा है। समाज

भी उदासीनता की और बढ़ रहा है। धार्मिक कार्यों में भाग लेकर जिनधर्म की प्रभावना करना आवश्यक है। पत्रिका समाज को संस्कार देते हुये आगे बढ़ती रहे।

विद्वान की नहीं विद्वत्ता का आदर करना जरूरी है। विद्वान भी हमारे देश की शान हैं। तिथि के अनुसार 27 अप्रैल को दीक्षा दिवस मनाया जायेगा। आप सभी पधारे तुलसी नगर के पंचकल्याणक में ।

ब्र. संगीता दीदी –ने अपने विचार रखते हुये कहा कि कल मुनिराज अनंतसागर जी को सुना। हमसे पहिले घर से निकले और दीक्षा प्रापत कर संसार भ्रमण को नाश करने का उपक्रम कर रहे हैं।

मुनि पद महान है, राजा के ऊपर महाराजा जैसे बरसते पानी की धारा गिनी नहीं जा सकती वैसे ही मुनि महाराज के गुणों का गुणानुवाद कैसे करें। जो इस कलिकाल में धर्म की आराधना करते हैं उन्हें 2-3 भव के बाद संसार भ्रमण से मुक्ति प्राप्त हो जाती है ऐसा आचार्यों ने कहा है।

राजेन्द्र महावीर सनावद- ने इस अवसर पर कहा कि आज अत्यंत गौरव का दिन है। हम 2-2 रजत जयंती मना रहे हैं। मुनिराजों की दीक्षा की जयंती का रजत वर्ष है। संस्कार सागर का भी रजत जयंती वर्ष है।

आचार्य श्री ने जो माइल स्टोन स्थापित किया है उस मार्ग पर चलना अब सरल नहीं है। मुनिवर ने जो पाया है वह वे ही जानते हैं।

आचार्य श्री विद्यासागर के समर्पण अद्वितीय है, **वे जैन धर्म की बात करते है परंतु पंक की बात नहीं करते है।** मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह भी गुरुदेव के साथ 10 किलोमीटर पैदल चले। देश के राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री भी आचार्य श्री की चर्या के हिसाब से मिलने का समय सेट करते है।

हंसमुख गांधी- ने इस अवसर पर अपने विचार प्रगट करते हुये कहा कि संस्कार सागर देश की एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसमें सब कुछ अच्छा आता है जो सभी के लिये उपयोगी है। पत्रिका के स्तंभों पर प्रकाश डालते हुये कहा कि भाषा वैशिष्ट निश्चित रूप से उच्च कोटिका है।

ब्र. बिन्दु दीदी राजकोट- मुनिराजों की त्याग-तपस्या वंदनीय है, अनुकरणीय है। हम भी उसी मार्ग पर आगे बढ़े। आचार्य श्री जी की कृपा को प्राप्त कर संयम के मार्ग पर आगे बढ़े। संस्कार सागर 100 वर्ष का कार्यक्रम पूर्ण करें ।

आचार्य श्री का 1996 में चातुर्मास महुआ पार्श्वनाथ गुजरात के था। गिरनार यात्रा के लिये सौराष्ट्र अंचल में विहार किया। राजकोट वाली प्रयासरत थे। गुरुवर के सान्निध्य पाने के लिये। आचार्य श्री का संघ भी बड़ा था। प्रश्न था कि राजकोट क्यों ? वहाँ जाने से दूरी भी बढ़ रही है। मंदिर भी नहीं है।

संत पुरुष के योग से अन्य मतावलंबी भी गुरुदेव की आगवानी के लिये जुट गये और सफल भी हुये। बड़ी संख्या में धर्म प्रेमी प्रवचन सभा में सम्मिलित हुये।

द्वितीय सत्रः दोपहर- रजत मुनि दिवस एवं संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह के द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी मुनिराज के आज्ञाकारी शिष्य मुनिश्री विमलसागर जी महाराज, मुनिश्री अनंतसागर जी महाराज, मुनिश्री धर्मसागर जी मुनिराज एवं मुनिश्री भावसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में शुभारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता सुरेश जैन (आई.ए.एस), मुख्य अतिथि श्रीमती रेणु जैन, कुलपति विश्वविद्यालय इंदौर एवं विशिष्ट

अतिथि हुकुमचंद सांवला अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विश्व हिन्दु परिषद रहे। मंगलाचरण प्रस्तुत किया पत्रिका की महिला संपादक डॉ. ज्योति जैन खतौली ने।

मुनिश्री विमलसागर जी महाराज ने अपनी मंगल देश में विद्वत समाज को संबोधित करते हुये कहा कि आप सभी यहाँ पर जिन प्रसंगों को लेकर उपस्थित हुये हैं।

आप सभी ने संस्कार सागर पत्रिका में निःस्वार्थ भाव से योगदान दिया है। सभी वर्ग लाभान्वित है। आप सभी प्रशंसा के पात्र है। जब तक आपकी बुद्धि चल रही है तब तक उसका उपयोग करते रहे। कभी-कभी प्रश्न उठता है विद्वान और धनवान में श्रेष्ठ कौन है ? दोनों महत्वपूर्ण है। विद्वान सद्बुद्धि का प्रयोग तो धन का सदुपयोग कर उपकार करेंगे। अन्यथा धन पाप के मार्ग में लगेगा।

बात संस्कारों की है दुरगुणों को दूर कर नैतिकता जीवन में उतारें। संस्कार के बिना जीवन शून्य है। संस्कार कैसे आते है। अच्छे लोगों की संगति से, अच्छे साहित्य पढ़ने से हमारे अंदर संस्कारों का प्रादुर्भाव होता है। संगति से संस्कार बनते हैं। अच्छी संगति से जीवन सुधारें। आज धर्म यदि जीवंत है तो संतो के कारण ही है।

डॉ. पंकज जैन ने अध्यात्म चेतना और संस्कार सागर पर विचार रखते हुये कहा कि अनेक विद्वत गोष्ठी में, अनेक परिचर्चा एवं ग्रंथों पर चर्चा में सम्मलित हुआ हूँ। आज एक पत्रिका विशेष पर चर्चा के लिये उपस्थित है। हम सभी संस्कार सागर पत्रिका जैन जगत की अनूठी पत्रिका है। जिसने समाज में चेतना जगाई है। 24 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। हम सब कह सकते हैं संस्कार 24 वर्ष के हो गये है। एलक श्री की सोच अलग है। उनकी सोच विकास की है।

अध्यात्म को जानना और समझता है। शरीर और आत्मा अलग-अलग है। बड़े-बड़े अध्यात्म योगी भी नाम के लिये सक्रिय हैं । अध्यात्म संकल्प विकल्प से मुक्त होता है। संस्कार सागर ने किसी से बांधकर नहीं रखा है, पंथभेद से अलग है।

संस्कारों के निर्माण में अध्यात्म की भूमिका अग्रणी है। पत्रिका अचेतन है, चेतना का संस्कार हमारे भावों से होता है। चरित्र निर्माण के लिये इसे जीवंत रखना होगा।

डॉ. सुशीला सालगिया ने सामान्य अध्ययन और संस्कार सागर पर अपने विचार रखते हुये स्थायी स्तंभों की विवेचना की। संस्कार सागर की प्रतीक्षा क्यों ? प्रतीक्षा उसकी होती है जिसकी चाहत होती है। पत्रिका का हर अंक नये आवरण के साथ आता है। उसमें प्रकाशित आलेख चाहे धार्मिक हो अथवा सामाजिक हों सभी पढ़ना चाहते है। सभी वर्गों के लिये पर्याप्त सामग्री होती है।

डॉ. अरविंद जैन मंत्री पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट ने विकास की गाथा बताते हुये कहा कि ब्र. धर्मचंद जी ने छोटी सी कुटिया में भगवान पार्श्वनाथ को स्थापित कर एक पौधा रौपा था। ब्र. सुरेश मलैया एवं ब्र. जिनेश मलैया ने बट वृक्ष बना दिया। दोनों की अहर्निश सेवायें वंदनीय है अभिनंदनीय है। संस्कार सागर ने निरंतर प्रगति की है। एलक श्री के निर्देशन में दिन रात दूनी बढ़ रही है।

डॉ. मुकेश विमल ने श्रुत शोध संस्थान की जानकारी देते हुये आगामी योजनाओं को प्रस्तुत करते कहा कि श्रुत का अन्वेषण संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी और प्राकृत के 5 जानकारों को साथ लेकर कार्य करता है। प्राच्य भाषा के साथ पुरानी लिपियों में भी कार्य करने संकल्पित है।

ब्र. स्वर्णा दीदी -संस्कार सागर पत्रिका रजत वर्ष और दीक्षा के 25वें वर्ष के आयोजन में यहाँ एकत्रित हुये है। पत्रिका का प्रकाशन श्रमसाध्य कार्य है। प्रतिमाह प्रकाशन में अहर्निश सेवायें देना महत्वपूर्ण कार्य है। 24 वर्षों से कार्य हो रहा है। समाज संस्कार विहीन होता जा रहा है। बच्चे माँ-बाप से लड़ रहे है। संस्कार माता-पिता से शुरु होना चाहिये।

हुकुमचंद सांवला- कल दो सत्रों में विचार रख चुका हूँ। आज पुनः बोलने कहा है। संस्कार सागर राष्ट्रीय चेतना को बढ़ाने, संस्कृति को पुष्ट करने और चरित्र निर्माण में अपना योगदान किस तरह दे सकता है। इस हेतु उन्होंने कई उदाहरण प्रस्तुत किये।

ब्र. सुदेश कोठिया कार्यकारी संपादक ने पत्रिका की रीति नीति पर पर्याप्त प्रकाश डालते कहा आज 25वें वर्ष के प्रवेश के उपलक्ष्य में यह समारोह आयोजित है। हमारा परम सौभाग्य है कि पत्रिका संस्कार सागर के 5वें पुष्प (भाग) से कार्य प्रारंभ किया। 278 अंका का संपादन किया। वर्ष में 2-3 आलेख गंभीर विषयों को लेकर प्रकाशित किये जा रहे है।

289 अंक अभी तक प्रकाशित हुये है, कोई अंक देर से प्रकाशित नहीं हुआ औन न ही कोई संयुक्त अंक निकाला। एलक श्री की पैनी निगाहों से अंक सुसज्जित होता है। चातुर्मास अंक का अपना वैशिष्ठ है। एक कहानी तात्कालिक महत्व को ध्यान में रखकर लिखी जाती है। मेरी आयु बहुत हो गई है। अब मुझे जिम्मेदारी से मुक्त किया जाये।

डॉ. अनुपम जैन इंदौर ने अपने विचार व्यक्त करते कहा ब्र. जिनेश मलैया ने जनमानस को पत्रिका से जोड़ा। अपनी मार्केटिंग शक्ति से आज समाज में लोकप्रिय पत्रिका बना दिया। चातुर्मास अंक का अपना वैशिष्ठ है। यह कार्य श्रमसाध्य, समय साध्य, व्यय साध्य भी है। समाज फोन पर जानकारी नहीं देती, चिट्ठियों का भी जबाब नहीं देती। इस सबके बाद प्रमाणिक जानकारी देना एक कला है जो भैया जी में विद्यमान है। संस्कार सागर ज्ञान का सागर है। एक मिशन को लेकर कार्य किया जा रहा है। पत्रिका के माध्य से समाज में जनजागरण हो रहा है।

न्यायमूर्ति विमला जैन, पूर्वजज म.प्र. उच्च न्यायालय ने संस्कार सागर की विशेषताओं की विवेचना करते हुये कहा कि पत्रिका में उच्च स्तरीय आलेख के साथ जैन संस्कृति की जानकारी रहती है। सभी वर्ग के लिये स्थायी स्तंभ है। ब्र. जिनेश मलैया कुशल नेतृत्व और दृढ संकल्प के साथ पत्रिका को प्रगति के पथ पर ले जा रहे है।

सुरेश जैन (आई.ए.एस) ने वर्तमान परिपेक्ष्य में संस्कार सागर की उपयोगिता पर अपने विचार रखते हुये कहा कि समाज की युवा पीढ़ी संस्कार विहीन होती जा रहा है। युवा वर्ग उच्च शिक्षित होकर घर से दूर होता जा रहा है। एकल परिवार की धारण परिपक्क होती जा रही है। संयुक्त परिवार में दादा-दादी, नाना-नानी से मिलने वाले ज्ञानोपयोगी संस्कारों का अभाव होता जा रहा है। इन परिस्थितियों संस्कार सागर समाज में राष्ट्रीय चेतना जगाकर, जैन संस्कृति को सुदृढ़ कर समाज को दिशा बोध देने में अग्रणी भूमिका निर्वाहन कर सकती है और पत्रिका को आगे आना ही होगा।

डॉ. रेणु जी कुलपति, विश्वविद्यालय इंदौर ने मुख्य अतिथि की आसंदी के अपने उद्‌गार में कहा कि दीक्षा दिवस और पत्रिका के रजत वर्ष समारोह में आना मेरा सौभाग्य रहा है। मुनि दर्शन

के साथ विद्वत्‌जनों को सुनकर मन प्रफुल्लित हुआ। एलक श्री की कहानियाँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक रहती है। मैं हमेशा पत्रिका की प्रतीक्षा करती हूँ।

संस्कार की बातें करने से काम नहीं चलेगा। उन्हें जीवन में उतारना जरूरी है। विश्व अंधकार की ओर बढ़ रहा है। जैन धर्म संस्कार ही सही मार्ग दिखा सकता है। ओर बड़ी भूमिका निभा सकता है।

तृतीय सत्र : सायंकाल- आचार्य भक्ति एवं आरती का कार्यक्रम मुनिराजों के सान्निध्य में संपन्न हुआ। तदुपरांत मुनि दीक्षा रजत वर्ष एवं संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह का समापन तृतीय सत्र के माध्यम से हुआ। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्रीमती रेणु जैन, कुलपति विश्वविद्यालय इंदौर की अध्यक्षता एवं सारस्वत अतिथि डॉ. ज्योति जैन खतौली रही। मंगाचारण प्रस्तुत किया ब्र. डॉ. समता जैन ने।

द्वितीय सत्र की भांति इस सत्र का संचालन करते हुये **डॉ. पंकज जैन** ने कहा कि संस्कार सागर पत्रिका नहीं एक संदेश है, विचार है। आचार-विचार-संस्कृति को जन-जन तक फैला रही है। साहित्य यात्रा के 24 वर्ष पूर्ण हो गये है। विद्वान ही विद्वान का परिश्रम जान सकता है।

डॉ. संगीता मेहता ने विषय वस्तु और वैशिष्ठ पर अपने विचार रखते कहा संस्कार सागर पत्रिका की गागर में सागर समाया है। पत्रिका ज्ञानवर्धक है। अपने अंदर सारे विषयों को समाहित किये हुये है। जीवन से जुड़े हुये अनेक विषय इसमें रहते है। प्राचीन साहित्य से लेकर अर्वाचीन साहित्य का ज्ञान कराती है। सूक्ष्म ज्ञान का दिग्दर्शन होता है।

एलक श्री पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यक्ति परक सभी विषयों का समावेश कराते है। आचार्य श्री के संयमोत्सव वर्ष में 13 विशेषांक का प्रकाशन एलक श्री के मार्गदर्शन में हुआ। सभी अंको की विषयवस्तु श्रेष्ठ थी। सभी संग्रहणीय थे।

डॉ. समता जैन ने प्रतिस्पर्धा स्वरूप पर अपने विचार रखते कहा मासिक पत्रिका है। सूचना का अंग है। प्रतिस्पर्धा संस्कारों में होना चाहिये। मूल्यों के साथ समझौता नहीं किया है। आर्थिक दृष्टिकोण से अलग है बहुप्रतीक्षित पत्रिका है।

अभिनंदन सांधेलीय- तीर्थ रक्षा अभियान और संस्कार सागर पर अपने विचार रखते हुये कहा तीर्थ हमारी आस्था का केन्द्र है, ये धार्मिक ओर आध्यात्मिक महत्व के स्थान होते है। तीर्थ संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है पाप से तारने, पार उतारने वाला।

तीर्थ रक्षा का महान कार्य हर युग में चलता रहा है। धर्म का प्रवाह तीर्थ क्षेत्र से ही प्रवाहित होता है। तीर्थ तीन प्रकार के होते है। निर्वाण या कल्याणक क्षेत्र, सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्र। सभी पूज्यनीय और वंदनीय है। तीर्थ हमारी संस्कृति के आधार स्तंभ है।

चलो देखे यात्रा- संस्कार सागर का एक स्थायी स्तंभ है। जिसमें एक तीर्थ क्षेत्र की संपूर्ण जानकारी दी जाती है। आज सभी क्षेत्रों में कोई न कोई संकट खड़ा है। कई क्षेत्रों का अस्तित्व खतरे में है। यह सब हमारी उदासीनता के कारण है। जैन तीर्थ पाश्चात्य संस्कृति एवं उपभोगतावाद के कारण पर्यटक केन्द्र में बदल रहे है जो हमारी संस्कति पर सीधी चोट है। पत्रिका समय-समय पर तीर्थरक्षा के लिये समाज को सजगत एवं सचेत करने में महती भूमिका का निर्वाहन कर रही है। हम सभी का दायित्व है हम अपने क्षेत्रों की रक्षा के लिये तन-मन-धन से समर्पित हो।

डॉ. रेखा जैन ने कहा कि पत्रिका सही दिशा में समाज का मार्गदर्शन का रही है अहिंसा मानवधर्म है। संतों की वाणी से समाज को दिग्दर्शन का कार्यकर रही है। संतों के प्रवचन, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक चेतना एवं धार्मिक चेतना को जन-जन तक पहुंचा रही है। संस्कार सागर अपने आप में पूर्ण है।

ब्र. डॉ. समता जैन ने बाल साहित्य और संस्कार सागर पर अपने विचार रखते कहा कि पत्रिका में बाल साहित्य बहुत है पर बालक, बाल साहित्य नहीं पढ़ रहे है। पाठशालाओं के बंद हो जाने से युवा पीढ़ी संस्कारों से वंचित है। पाठशालाओं को संस्कार सागर भेजा जाना चाहिये।

विद्वत संगोष्ठी का समापन और सम्मान- रजत मुनि दीक्षा दिवस और संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह का समापन 23 अप्रैल को तृतीय सत्र के बाद हो गया। अनेक विद्वानों ने अपने रचनात्मक विचारों से समाज को सजगत एवं सचेत किया।

श्री दिगम्बर जैन युवक संघ ने जिस उद्देश्य को लेकर 24 वर्ष पूर्व संस्कार सागर पत्रिका के माध्यम से मशाल जलाई थी। वह निरंतर प्रवाहमान होकर समाज को अपने दायित्व एंव कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक कर रही है। इस समारोह को मूर्तरूप देने में ब्र. जिनेश मलैया की सजगता और उदान्त भावनाओं की जितनी प्रशंसा की जाये कम है।

मुनिसंघ की चर्या में कोई कमी ना रही और विद्वानों के लिये समुचित प्रबंध किये गये थे।

विद्वत् गोष्टी के प्रारंभ में सभी विद्वत् वर्ग को किट प्रदान की गई थी एवं समापन दिवस पर द्वितीय एवं तृतीय सत्र के दौरान आगत अतिथियों और विद्वत् समाज को सम्मानित भी किया और उन्हें स्मृति चिन्ह के रूप में उपाधि पट्ट भी प्रदान किया गया।

यह नितांत सत्य है कि श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर को एक तीर्थ में बदल दिया जिसमें ब्र. सुरेश मलैया एवं ब्र. जिनेश मलैया महती भूमिका है।

जिसमें श्रीमती रेणू जैन (कुलपति) को **विद्यांजलि**, पं. रतनलाल जी शास्त्री को **संस्कार प्रणेता**, श्री गजेन्द्र जैन (गिन्नी ग्रुप) को **संस्कार शिरोमणि**, श्री हुकुमचंद जी सांवला को **संस्कार गर्जना**, ब्र. सुदेश कोठिया को **संस्कार वारिधी**, ब्र. जयकुमार निशांत को **संस्कार वाचस्पति**, ब्र. जिनेश मलैया को **संस्कार रत्नाकर**, श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) को **संस्कार भूषण**, श्रीमती विमला जैन (न्यायमूर्ति) को **संस्कार किरण**, पं. विनोद रजवांस को **संस्कार गौरव**, डॉ. अरविन्द जैन को **संस्कार सूर्य**, डॉ. ज्योति जैन (खतौली) को **संस्कार ज्योति**, डॉ. संगीता मेहता को **संस्कार देशना**, डॉ. मुकेश जैन विमल को **संस्कार रत्न**, डॉ. सुनील जैन (संचय) को **संस्कार श्री**, डॉ. पंकज जैन इंदौर को **संस्कार वीर**, अभिनंदन सांधेलीय को **संस्कार सूरी**, डॉ. महेन्द्र कुमार जैन (मनुज) को **संस्कार मनीषी**, डॉ. ब्र. समता जैन मारौरा को **संस्कार सरस्वती**, बिन्दु दीदी राजकोट को **संस्कार कोकिला**, जिनेन्द्र जैन (बाकल) को संस्कार सौरभ, ब्र. सुनीता दीदी को **संस्कार ध्वनि**, इंजी अभिषेक जैन को **संस्कार कीर्ति**, डॉ. राजेन्द्र जैन महावीर को **संस्कार अर्णव**, भरत भाई (राजकोट) को संस्कार मणि की उपाधियों से अलंकृत किया गया।

इस समारोह के आयोजन के लिये हम सबके आराध्य, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के श्री चरणों में पहुंचकर आशीर्वाद प्राप्त किया फलस्वरूप सभी कार्य सानंद संपन्न हुये।

हस्त मुद्रा और स्वास्थ्य

हमारा शरीर ब्रह्माण्ड का प्रतीक मॉडल है। मानव का शरीर भी ब्रह्माण्ड के समान पांच तत्व अग्नि, वायु, आकाश, जल व पृथ्वी से मिलकर बना है। इन पांच तत्वों में से किसी भी एक तत्व की कमी होने से हम रोगी हो जाते हैं।

मानव शरीर अनंत शक्तियों का भण्डार है। परमात्मा ने इसे पूर्ण आत्मनिर्भर व स्वस्थ बनाया है। मानव हजारों वर्षों की तरक्की के बाद भी मनुष्य जैसी कृति नहीं बना पाया है। यह ईश्वर की अनमोल रचना है। मनुष्यों के हाथों में से सदैव प्राण, ऊर्जा, विद्युतु, चुम्बकीय शक्तियाँ बहती रहती हैं। इसीलिये स्पर्श चिकित्सा, गुरुओं के हाथ का स्पर्श, आशीर्वाद हमें आरोग्यता प्रदान करता है। एक्यूप्रेशर चिकितसा में हाथों की हथेलियों पर विशेष दबाव देकर चिकित्सा की जाती है।

भारतीय ऋषि-मुनियों के मतानुसार हाथों की पाँचो अंगुलियाँ उक्त पंच तत्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

आधुनिक चिकित्सा वैज्ञानिक भी ऐसा मानते हैं कि हाथों की पांचों अंगुलियों से अलग-अलग प्रकार की ऊर्जा तरंगे निकलती हैं। इन अंगुलियों में अलग-अलग प्रकार आवृत्ति बनाने से इन पंच तत्वों की मात्रा को इच्छानुसार घटाया-बढ़ाया जा सकता हैं।

मुद्रा करने के सरल नियमः

1. इन मुद्राओं के सभी लिंग, आयु, वर्ग के लोग कर सकते हैं । इसे किसी भी अवस्था में किया जा सकता है। इसमें समय का भी बंधन नहीं है।

2. मुद्रा करते समय अंगुलियों का स्पर्श सहज होना चाहिये अनावश्यक दबाव व तनाव नहीं देना चाहिये। अंगुलियों की सहज भाव से सीधा रखें।

3. मुद्राएँ दोनों हाथों से करनी चाहिये, क्योंकि बायें हाथ से मुद्रा करने से शरीर के दाएँ भाग पर प्रभाव पड़ता है व दाएँ हाथ से मुद्रा करने पर शरीर के बाएँ भाग पर प्रभाव पड़ता है।

4. मुद्राएँ कम से कम 45 मिनिट अवश्य करना चाहिये तभी शारीरिक तत्वों में परिवर्तन होगा। शुरूआत में इसे 5-10 मिनिट करके धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाया जा सकता है। साथ ही एक साथ 45 मिनिट कर सकते तो 15-15 मिनिट तीन बार करके सम्पूर्ण लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

रोग की अवस्था में लेटकर अथवा अन्य किसी भी स्थिति में मुद्राओं को कर लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

महाअर्चनाः आचार्य छत्तीसी विधान

प्रस्तोताः अभिनंदन सांधेलीय पत्रकार, पाटन (जबलपुर)

रजत मुनि दीक्षा दिवस एवं संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह अक्षय तृतीया पर कराने की रूपरेखा पर ब्र. जिनेश मलैया इंदौर से फोन पर बात होती रही। ब्र. भैया जी दृढ़ संकल्पित थे कि यह समारोह श्रमण संस्कृति के महान उन्नायक, युग प्रवर्तक संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज की मंगल आशीष के तले ही करना है। आचार्य श्री के पास जाने का समय निश्चित नहीं हो पा रहा था। एक दिन फोन आया 13 अप्रैल को रहली/सागर में मिलें आचार्य श्री के पास चलता है।

13 अप्रैल की रात्रि विश्राम श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र रहली (पटनागंज) में कर प्रातः काल सभी जिमंदिर के दर्शन कर बीनाबारह के लिये निकल पड़े, जहाँ विराजित थे। आचार्य श्री के लघुनंदन एवं प्रथम निर्यापक श्रमण मुनिराज समयसागर जी। बीना (बारह) के सभी जिनालयों की वंदना कर मुनिसंघ के श्रीचरणों में नमोस्तु कर, समारोह के लिये आशीर्वाद प्राप्त कर अगले पड़ाव के लिये प्रस्थित हुये। नरसिंहपुर में निर्यापक श्रमण मुनिश्री संभवसागर जी महाराज के दर्शन कर उनका शुभाशीष प्राप्त कर डिंडोरी में रात्रि विश्राम कर प्रातः काल परम पूज्य गुरुदेव के दर्शनाथ निकल पड़े। गुरुदेव ससंघ विहार रत थे अमरकटंक से डोंगरगढ़ की ओर। जंगल में मंगल हो गया जब गुरुवर की विहार रत मनमोहती मुद्रा का साक्षात्कार हुआ। कुछ देर गुरुवर के साथ विहार किया। कुछ समय पश्चात् गुरुदेव विश्राम के लिये रूके। विश्राम के अनमोल क्षणों का उपयोग करते हुये ब्र. जिनेश भैया जी ने दोनों समारोह की जानकारी दी तथा कार्यक्रम के लिये आशीर्वाद मांगा।

गुरुदेव मंगलमयी शुभाशीष देकर गुरुचरण बढ़ गये और हमारा काफिला बढ़ चला अमरकटंक के आदिनाथ स्वामी के वंदन एवं पूजन-अर्चन के लिये।

20 अप्रैल को तीर्थंकर वाटिका में बनी वेदिका पर श्री जी को विराजमान कर अभिषेक , शांतिधारा, पूजन-अर्चन श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक शताधिक श्रावक एवं श्राविकाओं ने हर्ष और उल्लास के साथ संपन्न किया कि कल **आचार्य छत्तीसी विधान के लिये** पुनः मिलेंगे।

21 अप्रैल 2023 को तीर्थंकर वाटिका जो कि पंचबालयति जिनालय के सामने अवस्थित है। ब्र. जिनेश भैया जी ने विधिविधान पूर्वक अभिषेक-शांतिधारा संपन्न कराई। 25 मंडल परिसर में बनाये गये जिनमें 50 परिवारों ने श्रद्धा और भक्ति के साथ संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर के गुणानुवाद से परिपूर्ण **आचार्य छत्तीसी विधान** आर्यिकाश्री पूर्णमति माताजी रचित से विधान संगीत की स्वर लहरियों के बीच हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। तदुपरांत हवन क्रिया के साथ विधान की क्रियायें पूर्ण हुई।

दो दिवसीय भक्ति आराधना से तीर्थंकर वाटिका का संपूर्ण परिसर धार्मिक वर्गणाओं से परिपूर्ण होकर पवित्र क्षेत्र में परिणित हो गया। जहाँ 22 अप्रैल -23 अप्रैल 2023 को आयोजित **रजत मुनि दीक्षा दीक्षा दिवसः संस्कार सागर रजत वर्ष समारोह** पूर्ण गरिमा के साथ संपन्न होगा, इसमें दो मत नहीं है।

पंचबालयति मंदिर ट्रस्ट से जुड़े सभी साधर्मी बंधुओं एवं मंदिर जी के सेवा में लगे सभी सेवगण ब्र. जिनेश भैया के मार्गदर्शन में अहर्निश सेवा में देकर जिनधर्म की महिमा के उत्तरोत्तर विकास में रत है।

संस्कार सागर की समीक्षा और सुझाव

पं. सनत कुमार विनोद कुमार जैन, रजवाँस सागर

पत्र-पत्रिकाएँ संस्कारों की प्रदाता, धर्म और संस्कृति की संवाहिका एवं अध्ययन, लेखन और जिज्ञासाओं की जनक तो होती ही हैं साथ ही सम्पूर्ण जगत के समाचारों को प्रदान करती हैं। जिससे धर्म, संस्कार और संस्कृति का प्रचार-प्रसार स्वयंमेव ही हो जाता है। आज वर्तमान में अनेक पत्रिकायें प्रकाशित हो रही है। उनमें अग्रण्य पत्रिका है ''संस्कार सागर'' जिसने सूक्ति प्रदान की है। 'संस्कार सागर पढ़िये-संस्कार गढ़िये'। इस पत्रिका की अनेक विशेषतायें हैं। कुछ बिन्दुओं पर विचार करते हैं।

संस्कार सागर के संवाहक- संस्कार सागर का प्रकाशन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य एलक सिद्धांत सागर जी महाराज की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से प्रतिमाह की 1 तारीख को नियमित रूप से होता है।

प्रधान संपादक- ब्र. जिनेश मलैया, प्रबंध संपादक ब्र. जयकुमार निशांत, कार्यकारी संपादक ब्र. सुदेश जैन कोठिया, सलाहार संपादक श्री हुकुमचंद जी सांवला, पं. विनोद कुमार जैन रजवांस, डॉ. मुकेश जैन विमल, महिला संपादक डॉ. ज्योति जैन खतौली, डॉ. ब्र. समता जैन मारौरा, अतिथि संपादक डॉ. सुनील जैन संचय, श्री अभिनंदन सांधेलीय, डॉ. पंकज जैन, पं. विनीत जैन प्राचार्य, श्री अक्षय जैन अलया।

संयोजनाः इंजी. अभिषेक जैन एवं आतंरिक सज्जा आशीष कुशवाह हैं ।

प्रकाशनः श्री दिगम्बर जैन युवक संघ इंदौर द्वारा होता है।

संस्कार सागर सभी वर्ग के लोगों के लिये पठनीय ही नहीं संग्रहणीय सामग्री प्रस्तुत करती है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि इसका आकार छोटा होता है किन्तु सामग्री का विषय गंभीर और सारगर्भित होता है- इसमें जहाँ जैन दर्शन सिद्धांत के लेख होते हैं वहीं समसामायिक विषयों पर विषय विशेषज्ञ विद्वानों के लेख तो होते ही हैं साथ ही कहानी, कविता आदि रोचक विषय भी दिये जाते हैं नियमित स्तंभों की विशेषता-

1. मुख्य पृष्ठ- संस्कार सागर के मुख्य पृष्ठ की मौलिक विशेषता है कि वह हमेशा पेन्टिंग से बनाये गये चित्र पर आधारित होता है।

2. मुख्य पृष्ठ 2 पर- तीर्थंकरों के कल्याणकों की तिथियां, माह के प्रमुख व्रत, सर्वार्थ सिद्धियोग, शुभ मुहुर्त एवं एक माह का केलेण्डर नक्षत्र सहित होता है।

3. मुख्य पृष्ठ 3 पर- समस्या पूर्ती की एक पंक्ति दी जाती है जिस पर चार पंक्तियों की रचना की जाती है जिसमें दी हुई पंक्ति होना चाहिये। यह कविता की प्राचीन विधा है। जिसे संस्कार सागर जीवन्त बनाये हुये हैं।

4. मुख्य पृष्ठ 4 पर- संस्कार सागर कार्यालय में प्राप्त ग्रंथ पुस्तकें एवं अन्य सामग्री की

जानकारी दी जाती है। यह एक ऐसी पत्रिका है। जिसमें विज्ञापन के लिये स्थान निश्चित है किन्तु आवश्यक नहीं की विज्ञापन दिया ही जाये।

5. पाती पाठाकों की- इसमें पाठकों के खट्टे मीठे अनुभव दिये जाते हैं।

6. भक्ति तरंग- में प्राचीन कवियों के सारगर्भित भजनों को अर्थ सहित देते हैं।

7. संस्कार प्रवाह- यह संस्कार का सम्पादकीय होता है जिसमें गंभीर विषयों पर लेखनी चलती है। अवश्य पठनीय होता है।

8. संयम स्वास्थयोग- इस स्तंभ में रोगों के निदान के साथ चिकित्सा विविध प्रकार से दी जाती है जैसे- आयुर्वेद, प्राकृतिक, योग आदि।

9. चलो देखें यात्रा- इसमें तीर्थ क्षेत्रों का परिचय, महत्त्व, जाने का मार्गदर्शन सुविधायें एवं सम्पर्क सूत्र भी दिये जाते हैं।

10. आगम दर्शन- इस स्तंभ में ग्रंथों का परिचय, विषय वस्तु लेखक की जानकारी ग्रंथ का रचनाकाल, गाथा संख्या आदि की विस्तृत जानकारी होती है। जिससे पाठक ग्रंथ से परिचित होता है।

11. माथापच्ची- इसमें शब्दों को अक्रम में दिया जाता है जिसे क्रम में स्थापित कर शब्दों के माध्यम से वाक्यों का सृजन किया जाता है।

12. पुराण प्रेरणा- इसमें पुराणो ग्रंथ के प्रेरक प्रसंगों के श्लोकों का अर्थ सहित प्रस्तुत किया जाता हैं जिसमें अनेक ग्रंथों का स्वाध्याय स्वयमेव हो जाता है।

13. केरियर गाइड- इसमें युवाओं को अपने केरियर बनाने के अवसर कहां और कैसे प्राप्त हो सकते है इनकी परीक्षा कब और कहां होती है इसकी जानकारी दी जाती है। जिसकी आज बहुत आवश्यकता है।

14. दुनिया भर की बातें - इस स्तंभ में दैनिक समाचार पत्र के मुख्य, मुख्य समाचार दिनांक सहित एक माह के दिये जाते हैं जिससे हम एक माह के समाचार सहज ही जान लेते हैं और विस्मृत समाचार याद रहते हैं।

15. इसे भी जानिये- इसमें विश्व स्तरीय किसी प्रकार की जानकारी की सारिणी एवं बिन्दुओं के माध्यम से दिया जाता है अनोखी जानकारी होती है।

16. दिशाबोध- इसमें ग्रंथों आचार्य प्रणीत नीति वाक्यों को संचय किया जाता है। जिससे हम अपने महापुरुषों का परिचय प्राप्त करते हैं।

17. हमारे गौरव- इसमें जैन धर्म के गौरवशाली व्यक्तित्व का परिचय कृतित्व के साथ दिया जाता है जिससे हम अपने महापुरुषों का परिचय प्राप्त करते हैं।

18. हास्य तरंग- इस स्तंभ में शिष्ट भाषा के चुटकुले दिये जाते हैं जो बाल मन को गुद गुदाते हैं।

19. शरीर विकास के कुछ खेल- इसमें खेलों के प्रकारों के साथ उनकी सम्यक् विधि भी दी जाती है।

20. बाल संस्कार डेस्क- इसमें बच्चों को संस्कारित करने के लिये बाल कहानी दी जाती है।

21. संस्कार गीत- इसमें संस्कारों को गढ़ने वाले गीत दिये जाते हैं।

22. बाल कविता- इसमें बच्चों की मनभावन कवितायें होती है।

23. वरिष्ठ नागरिक- इसमें वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं के समाधान दिये जाते हैं।

24. वर्ग पहेली- इसमें वर्गों के माध्यम से शब्द संयोजना के संकेत द्वारा दायें से बाये और ऊपर से नीचे अंकों के द्वारा दिये जाते हैं।जिससे पाठकों का शब्द भंडार समृद्ध होता है।

25. समाचार- इसमें जैन जगत् के महत्त्वपूर्ण समाचारों को संक्षिप्त में दिया जाता है।

चातुर्मास विशेषांक- प्रतिवर्ष चातुर्मास प्रारंभ होते ही संस्कार सागर का चातुर्मास विशेषांक प्रकाशित किया जाता है। जिसमें सम्पूर्ण भारत देश में जहाँ आचार्यों, उपाध्याय, साधु आर्यिका, एलक, क्षुल्लक आदि व्रती जनों के चातुर्मास होते हैं वहाँ उनके नाम स्थान का नाम, साधुओं की संख्या, उनके गुरु का नाम एवं वहाँ की समिति का सम्पर्क सूत्र फोन, मोबाइल नम्बर आदि दिये जाते हैं जिसकी पाठकों के साथ साधुओं को भी इंतजार रहता है। इस अंक को वह चार माह संजोकर रखते हैं।

इस प्रकार यह अनेक स्तंभ रूपी पुष्पों का गुलदस्ता प्रति माह आपके परिवार के प्रत्येक अबाल वृद्धजनों को सुवासित करने आपके पास आता है। इसे अवश्य पढें।

कुछ सुझाव-

1. संस्कार सागर की स्थापना वर्ष अवश्य अंकित होना चाहिये।

2. इसमें एक स्तंभ अंग्रेजी भाषा का हो तो युवा पीढ़ी अवश्य लाभान्वित होगी।

3. पूर्वाचार्यों का परिचय क्रम से उनके समय और रचनाओं सहित दिया जा सकता है।

4. वर्तमान में धर्म परिवर्तन जैसे प्रसंगो पर युवाओं को संबोधन करने वाले विषयों को उनके मन को जैन धर्म में स्थित करने की विषय वस्तु देना चाहिये।

5. जिन कारणों से युवाओं का मन अन्य धर्मों के प्रति आकर्षित होता है उनका निराकरण करने वाले स्तंभ जोड़ें।

6. वर्तमान की समस्याओं के निराकरण एवं स्वाध्याय प्रेमियों की शंकाओं के निराकरण हेतु जिज्ञास-समाधान दिया जा सकता है।

संस्कार सागर पत्रिका को सम्यक् संस्कारित समाज निर्माण के लिये सशक्त एवं सम्पूर्ण पत्रिका माना जा सकता है। ऐसी श्रेष्ठ तम पत्रिका का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार होना चाहिये। प्रत्येक घर इसकी दस्तक होना चाहिये जिससे संस्कारों का शंखनाद हो और विसंगतियों का पलायन हो सके। इसे मंगाने के लिये सम्पर्क सूत्रः- कार्यालय संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर सत्यम गैस के सामने ए.बी. रोड़ इंदौर-10 फोन 0731 4003506 मो. 8989505108, 6232967108 website: www.sanskarsagar.org, email- sanskarsagar@yahoo.co.in

चलो देखें यात्रा

शांतिनाथ का तीर्थ रामटेक

महत्व एवं दर्शनः क्षेत्र पर 15 मंदिर हैं। मुख्य मंदिर में चौथे काल की शांतिनाथ भगवान की 13 फुट ऊँची प्रतिमा है। चरण चौकी जमीन के अंदर है। आचार्य विद्यासागर जी के कई चातुर्मास हो चुके हैं।

वर्तमान चौबीसी एवं पंचबालयति जिनालय का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है। पंचकल्याणक हो चुका है। कार्तिक सुदी 13 से 15 तक मेला लगता है। श्री दिगम्बर जैन परवार मंदिर नागपुर द्वारा संचालित।

मार्गदर्शनः रामटेक- नागपुर-सिवनी रोड पर नागपुर से 45 किमी. है। रामटेक स्टेशन से क्षेत्र 5 किमी एवं बस स्टेण्ड से 3 किमी है। एस.टी.डी. होटल, बस स्टेण्ड से क्षेत्र 2 किमी. है। बाजारगांव-45, कामटी-35, मढ़िया जी- 250 (जबलपुर)

नाम एवं पता- श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, रामटेक, जि. नागपुर (महाराष्ट्र) 441106

फोनः 07114-255117, प्रबंधक- श्री संजय जैन मो. 9423545081, संपर्क सूत्रः श्री जिनेन्द्रलाला जी अध्यक्ष मो 9225211744, श्री सतु मामा मंत्री -9829151106 श्री शीतल पूर्णचंद जैन नागपुर 09421778089, 9604157079।

सुविधायें - सुविधायुक्त 37 कमरे एवं सामान्य 60 कमरे तथा 3 हॉल है। भोजन अनुरोध पर उपलब्ध है।

विशेषः- रामटेक हिन्दुओं का भी प्राचीन तीर्थ क्षेत्र है। जैन मंदिर से कुछ दूर पहाड़ी पर 600 वर्ष प्राचीन राम एवं लक्ष्मण मंदिर है। कहा जाता है कि प्रवास काल में राम, लक्ष्मण एवं सीता यहां आये थे। कवि कालीदास ने इस जगह का सौंदर्य वर्णन किया है। मेघदूत काव्य उन्होंने यही लिखा था। उनका यहां स्मारक भी है। पास में अम्बा झील है। क्षेत्र से रोड द्वारा 5 किमी. हैं।

जैन विद्या संस्कृति मंच 2023

आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का शताब्दी महोत्सव तथा पूज्य गणेशप्रसाद वर्णी जी का 150 वां जन्म जयंती महोत्सव एवं प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प का जन्म शताब्दी महोत्सव के अवसर पर आयोजित जैन विद्या संस्कृति मंच प्रतियोगिता में प्रथम पुरुस्कार 1 लाख रूपये, द्वितीय पुरुस्कार 51 हजार रूपये, तृतीय पुरुस्कार 31 हजार रुपये एवं सांत्वना पुरुस्कार रखे गये हैं। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये आप संस्कार सागर कार्यालय मो. 8989505108, 6232967108 सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रत्येक माह इन ग्रंथा से 100-100 प्रश्न पूछे जायेंगे। चारित्र चक्रवर्ती, मेरी जीवन गाथा (दो भाग), पुष्पांजलि, सम्यक्तव मंजूषा, विशाल व्यक्तित्व (आ.विज्ञानमती जी), संस्कार सागर अगस्त 2023 चातुर्मास विशेषांक, श्वेताम्बर मत समीक्षा, तत्त्व विचार सार (आ. वसुनंदी, संपादन- मुनि मार्दवसागरजी) अपरोजितेश्वर शतक भाग-1, (महाकवि श्री रत्नाकर वणी), आराध्य सूत्र (संपादन- मुनिश्री निर्दोषसागर जी, मुनिश्री निर्लोपसागर जी)

प्रतियोगिता के प्रश्न पुस्तिका के रूप में तथा बेबसाईट www.sanskarsagar.org पर डाउनलोड कर सकते हैं। तथा सभी ग्रंथ कार्यालय में उपलब्ध हैं। यदि ऑनलाईन प्राप्त करना चाहते हैं बेबसाईट से डाउनलोड कर सकते हैं।

नारी चेतना मुखर हुई संस्कार सागर के माध्यम से

डॉ. ज्योति जैन, खतौली (उ.प्र.)

विश्वजननी नारी सृष्टि के विकास का मूल आधार है। नारी परिवार समाज एवं राष्ट्र की धुरी है। जैन धर्म एवं संस्कृति में नारी का स्थान उच्च रहा है। वह तीर्थंकरों की जननी है। बहिन, माता, पत्नी, पुत्री के रूप में समाज में सम्मानीय स्थान पाती है। जैन धर्म में नारी सत्ता भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर और भगवान महावीर से लेकर आज तक बनी हुई है। धर्म के प्रति नारी की अगाध श्रद्धा उसे सहधर्मिणी बनाती है। वह अपने घर और परिवार को संस्कारित कर गृहस्थ धर्म निर्वहन करती है। नारी का स्वस्थ और सकारात्मक चिन्तन उसे विवेकपूर्ण कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। उसका शिक्षित होना उसके व्यक्तित्व का विकास करता है। अपने कर्त्तव्यों का पालन कर वह संपूर्ण परिवार के सदस्यों को अपना बनाने की अदभुत क्षमता रखती है। इतिहास गवाह है कि नारी ने अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुये सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। वह एक सुखद परिवार स्वस्थ समाज एवं सुदृढ राष्ट्र का निर्माण करती है। इसी कढ़ी में यदि हम देखें तो पत्रकारिता, लेख, नाटक कविताएं आदि लेखन क्षेत्र में अनेक महिलायें अपनी साहित्यिक प्रतिभा दिखा रही हैं।

संस्कार सागर पत्रिका का रजत जयन्ती वर्ष पत्रिका की सार्थकता/लोकप्रियता को सिद्ध करता है। महिला संपादिका के रूप में एक नारी की सक्रिय भूमिका विषयक अनेक लेखों ने पत्रिका में स्थान पाया है।

भूमंडलीकरण और इंटरनेट के युग में एक नई पृष्ठ भूमि में नारी चेतना और नारी अधिकारों की नई परिभाषा गढ़ी जाने लगी है। वर्तमान में नारी प्रत्येक क्षेत्र में समानता के अधिकार को लेकर मुखर हुई हैं इसके अच्छे एवं बुरे दोनों परिणामों से नारी जीवन प्रभावित हुआ है। एक ओर नारी ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सफलता के झंडे लहराये तो दूसरी ओर परिवार व्यवस्था छिन्न भिन्न हो रही है। सामाजिक विसंगतियां बढ़ती जा रही हैं।

संस्कार सागर ने नारी सबंधी अनेक समस्याओं को समय समय पर लेखों आदि के माध्यमों से उठाया है। महिला लेखिकाओं ने अपनी कलम शक्ति का भरपूर उपयोग किया है।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में जैन महिलाओं की सक्रिय भूमिका का सजीव चित्रण पत्रिका में हुआ। नारी को जागरुक करने वाले लेख प्लास्टिक से बचें पानी का अपव्यय ना करें, भाव हिंसा से कैसे बचें, बच्चों में अहिंसा सबंधी संस्कारों का बीजारोपण कैसे करें। संस्कृति से जुड़े नाम रखें, बच्चों के पढ़ने के प्रति रूचि कैसे बढ़ायें, बच्चों को संवेदन शील कैसे बनायें, बच्चों के खिलौने कैसे हों, मोबाइल से दूर रखें आदि लेखों के माध्यम से रखा गया।

नारी को समर्पित संस्कार सागर का दाम्पत्य संस्कार विशेषांक अपने आप में अनेक विशेषताओं को लिये था। पहला सुख निरोगी काया, नाउ यू डोंट केयर फॉर भी, आकर्षक व्यक्तित्व आपके हाथ, अपने दिल को संभाले, दाम्पत्य जीवन में अहं की अहम् भूमिका, कामकाजी महिलायें, आधुनिकता ही होड़ में खो रहे हैं। रिश्ते से पत्नी पर हाथ उठाना ? आदि आदि। पत्रिका में आहार संबंधी अनेक लेख लिखे जा चुके हैं और आज भी प्रमुखता से छप रहे हैं। व्हाइट इज व्यूटी और सुंदरता का कोई मापदंड नहीं होता जैसे लेखों से प्रशंसा बढ़ी है। परम्परा गीतों की गूंज हो रही खत्म, दिन में करायें शादी, मिलाये सेहत की कुंडली जैसे लेख चर्चा में रहे। महिला विषयक लेखों की संख्या बहुत हैं। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग विषयक लेख आर्यिका माताओं ब्रह्मचारिणी दीदियों के लेख प्रकाशित हुये।

संस्कार सागर का पूरा संपादक मंडल और इससे भी आगे पूज्य एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज की परिकल्पना, सोच, विचार, चिंतन, साज सज्जा ने पत्रिका को लोकप्रिय बना दिया एलक सिद्धांतसागरजी महाराज ने जिस तरह स्तंभों का निर्धारण किया उससे हर आयु वर्ग का पाठक पत्रिका उठा सकता है।

हम सभी जैन महिलायें सौभाग्यशाली हैं कि हमें विरासत से ही समृद्ध पराम्परा मिली है। डिजिटल युग में नई-नई चुनौतियाँ हमारे सामने हैं। आज जिम्मेदारियां बढ़ती हुई दिखाई दे रही हैं। आइये सदसंस्कारों से युक्त अपनी विरासत अगली पीढ़ी को सौपें बीजारोपण करें ताकि यह परम्परा अनवरत चलती रहे और नारी चेतना मुखर रहें।

कविता

मुद्रा की गहराई

हर मुद्रा की गहराई में जाकर हमने निहारा है
हाथों की मुद्रा पैरो की नयनों ने तड़फाया है
एक झलक पाने को आतुर रागी बढ़ता जाता है
अंधा बनकर कामी नर निज काम गर्त में गिरता है
नीलांजन का नृत्य देखकर सभी सभाजन मोहित थे
ऋषभ देव ने मृत्यु देखी उनके नेत्र अचंभित थे
दृश्य आवरण लुभा ने पाया मन वैराग्य बड़ा भारी
दीक्षा लेकर ऋषभ देव तो बने दिगम्बर अविकारी
एक बार जिन मुद्रा देखो कोई न मुद्रा मन भाती
जिनबिम्बों की महिमा लखकर विपदा तत्क्षण भाग जाते
अंतरिक्ष प्रभु पार्श्वनाथ की मुद्रा सत्य दिगम्बर है
संकट हरता शिवसुख वरता गहा तीर्थ यह शिरपुर है

आगम दर्शन

अपभ्रंश भाषा का ग्रंथ परमात्म प्रकाश

जो इंद्र अध्यात्मवादी है, कवि नहीं। अपभ्रंश में शुद्ध अध्यात्म विचारों की ऐसी सशक्त अभिव्यक्ति अन्यत्र नहीं मिल सकती है। इनके ''परमात्मप्रकाश'' में दो अधिकार हैं। प्रथम अधिकार में 126 दोहे और द्वितीय में 219 हैं। इन दोहों में क्षेपक और स्थलसंख्या बाह्य प्रक्षेपक भी सम्मिलित हैं। ब्रह्मदेव के मतानुसार परमात्मप्रकाश में समस्त 345 पद्य हैं इनमें पांच गाथाएँ, एक स्त्रग्धरा और एक मालिनी हैं। किन्तु इन पद्यों की भाषा अपभ्रंश नहीं है। एक चतुष्पादिका भी है और शेष 377 दोहे हैं। जो अपभ्रंश में निबद्ध हैं।

विषय वर्णन की दृष्टि से प्रारंभ के सात पद्यों में पंचपरमेष्ठि को नमस्कार किया गया है। आठवें, नवें और दसवें दोहे में भट्ट प्रभाकर जोइंदु से निवेदन करता है-

हे स्वामिन्! इस संसार में रहते हुये अनंतकाल बीत गया, परंतु मैंने कुछ भी सुख प्राप्त नहीं किया। प्रत्युत महान् दुख ही पाता रहा। अतः चारों गतियों के दुखों से सन्तप्त प्राणियों के चारों गति सम्बंधी दुखों का विनाश करने वाले परमात्मा का स्वरूप बतलाईये। उत्तर में जोइंदु ने आत्मा के तीन भेदों का कथन किया है। 1- मूढ़, 2. विचक्षण, 3. ब्रह्मा।

जो शरीर को ही आत्मा मानता है, वह मन है। जो शरीर से भिन्न ज्ञानमय परमात्मा को जानता है। वह विचक्षण या पण्डित है। जिसने कर्मों का नाश कर शरीर आदि पर द्रव्यों को छोड़ ज्ञानमय आत्मा को प्राप्त कर लिया है वह परमात्मा है।

द्वितीय अधिकार में मोक्ष, मोक्ष का फल एवं मोक्ष के कारण का कथन किया है। जोइन्दु देव ने पुण्य और पाप की समता बतलाते हुये लिखा है कि जो जीव पुण्य और पाप को समान नहीं मानता, वह मोह के वशीभूत होकर चिरकाल तक भ्रमण करता है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अगस्त 2023

आजादी का मेला

प्रथम-

नीलगगन में धूम मची हैं
भारत माँ जयकारों की
अमर शहीदों की कुर्बानी
स्मृतिमय शुभ नारों की
दिल्ली के जनपथ में देखों
वीर जवानों का रेला
नरनारी सब जमा हुयें हें
ये आजादी का मेला

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

आजादी का उत्सव अनुपम
बूढ़े का रेला
घर-घर में लहराये तिरंगा
ये आजादी का मेला

आकाश जैन, गुना

तृतीय-

लाल किला के अंदर देखो
जमघट है दीवानों का
आजादी जश्न मनाने
भारत माँ पखानों का
दिल से उत्सव सभी मनाते
राजनीति का नहीं खेला
बच्चे हाथ तिरंगा थामे
ये आजादी का मेला

आयुषी जैन, गंजबासौदा

वर्ग पहेली क्र. 285
जुलाई 2023 के विजेता

प्रथम : श्रीमती पल्लवी जैन, सागर
द्वितीय : राजेश जैन, इंदौर
तृतीय : प्रियंका जैन, ललितपुर

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

पाप का सर्प

किन्तु ध्रुवो वियोगोऽत्र रागात्मकमिदं सुखम्।
रागी बहनाति कर्माणि बन्धः संसारे कारणम्॥

यह इन्द्रियजन्य सुख रागरूप है, रागी जीव कर्मों की बांधता है, बन्ध संसार का कारण है, संसार चतुर्गति रूप है और चारों गतियाँ दुःख तथा सुख को देने वाली है अतः मुझे इस संसार से क्या प्रयोजन है? यह तो बुद्धिमानों के द्वारा छोड़ने योग्य ही है।

विधाय सङ्गे भङ्ग तत्कीतिमिव नर्तकीम्।
तामाहरद् गते पुण्ये कस्य किं कोऽत्र नाहरत्॥

विन्ध्यश कितने युद्ध में राजा सुषेण को पराजित किया और उसकी कीर्ति के समान नृत्यकारिणी को जबरदस्ती छीन लिया सो ठीक ही है क्योंकि पुण्य के चले जाने पर कौन किसकी क्या वस्तु नहीं हर लेता है।

दन्तभङ्गे गजेन्द्रस्य दष्ट्रभङ्गे गजद्विषः।
मानभङ्गो महीभर्तुर्महिमानमपहुते॥

जिस प्रकार दाँत का टूट जाना हाथी की महिमा को छिपा लेता है, और दाढ़ का टूट जाना सिंह की महिमा को तिरोहित कर देता है उसी प्रकार मान-भङ्गराजा की महिमा को छिपा देता है।

ब्रह्मवत्करदौ नैतो दुर्मदेनापि दापितौ।
दुष्टमाशीविषं गेहे वर्द्धमानं सहेत कः॥

वह सोचने लगा कि मैने समस्त राजाओं और किसानों की कर देने वाला बना लिया है परंतु ये दोनों भाई ब्राह्मण्ड के समान कर नहीं देते। इतना ही नहीं, दुष्ट गर्व से युक्त भी हे। अपने घर में बढ़ते हुये दुष्ट साँप को कौन सहन करेगा?

संस्कार सागर एवं स्वास्थ्य

डॉ. श्रीमति आशा जैन, इंदौर

''पहला सुख निरोगी काया''

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है शरीर एवं मन के स्वस्थ रहने पर धर्म साधना संभव है संस्कार सागर पत्रिका ने भी इस सूत्र को ध्यान में रखकर ''संयम स्वास्थ्य योग'' कॉलम पत्रिका में एक स्तंभ को स्वास्थ्य रक्षण हेतु संरक्षित कर दिया। इस स्तंभ में मात्र स्वास्थ्य संबंधी लेख प्रत्येक अंक में छपते हैं। मैंने इस स्तंभ में लिखने का प्रयास किया -

स्वस्थ रहने के उपाय, स्वास्थ्य रक्षण के नियमों सिद्धांतों का ज्ञान, जीवन में आचरण, संतुलित पौष्टिक स्वास्थ्य वर्धक भोजन का महत्व, आवश्यक समय स्थान, रसोई घर का स्वरूप, शुद्धि साफ सफाई, भोजन बनाने का उद्देश्य आदि बातों पर विस्तृत चिन्तन किया। क्योंकि ''हमारी भोजन की थाली स्वास्थ्य की रक्षक है तो भक्षक भी।'' संतुलित भोजन से ही हमारी प्रकृतियाँ इसकी द्योतक हैं।

''जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन
जैसा पीवे पानी, वैसी बोले वाणी''

एक गृहणी जब अपने परिवार के लिये भोजन तैयार करती है तो बड़ा सुख अनुभव करती है। प्रत्येक सदस्य की पंसद एवं रूचि के अनुरूप शुद्ध सात्विक भोजन बनता है। वही भोजन जब भोजनालय या होटलों में नौकरों द्वारा बनाया जाता है तो उसके स्वरूप में गुणों में कितना अन्तर होता है। यह सर्व विदित है। इन सभी विषयों पर संस्कार सागर पत्रिका के माध्यम से आप सभी तक पहुंचाने का प्रभाव किया गया है।

शारीरिक शुभ्र, भ्रमण, व्यायाम, योग, ध्यान, नियम, व्रत उपवास का शरीर एवं मन पर प्रभाव रात्रि भोजन का तन एवं मन पर प्रभाव, पानी छानने का महत्व एवं मन पर प्रभाव आदि विषयों को संस्कार सागर पत्रिका में स्थान दिया गया है। वस्तु अपने अन्दर औषधि तत्वों में समाहित हैं।

हमारी रसोई ही औषधिशाला है। जिसके प्रत्येक मसाले, अन्न, सब्जियां, फूल, मेवे, दूध, दही, छाछ, शक्कर, गुड़, घी तैल, यहाँ तक जल भी अपने अंदर औषधी तत्त्व लिये हुये हैं। आवश्यकता है उचित जानकारी की।

प्राचीन काल में संयुक्त परिवार हुआ करते थे। परिवार में बुर्जुगों महिलाओं का अनुशासन रहता था। कब कौन बीमार हुआ, किसको क्या दवा देना है यह सब बुर्जुगों के हाथ में रहता था। आज हम इन्हें दादी-नानी के नुक्शे कहते हैं।

उस समय ये नुक्शे पुस्तैनी चला करते थे। उनका मानना था कि बीमारी का कारण देखकर उसका निवारण करें। यदि बीमारी का कारण हटा दिया तो बीमारी स्वतः ही ठीक हो जायेगी। उसके लिये अन्यथा प्रयास कर दवाई आदि देने की जरूरत नहीं है। इस संबंध में भी विस्तृत उल्लेख संस्कार सागर पत्रिका के माध्यम से आप सब तक पहुंचाया गया है। एवं जन सामान्य का

मन मानस बदलने की भरपूर कोशिश की गई है। यदि आप संस्कार सागर पत्रिका में उल्लेखित नुक्शों को अजमायेंगे तो निश्चित तौर पर लाभ होता है।

''जहाँ काम आवे सुई, क्या करे तलवार।''

अर्थात् जब हम अपने घर में ही स्वास्थ हो सकते हैं तो जरा जरा सी बीमारियों में डॉक्टरों के चक्कर लगाने एवं केमिकल्स युक्त औषधियाँ लेने से बचें यही संस्कार सागर पत्रिका का उद्देश्य है। हम श्रावकगण तो फिर भी अनेकानेक साधनों से ठीक हो सकते हैं। परन्तु कभी हमारे साधु संतों के बारे में तो सोचिये। जो अपनी तप साधना में निरन्तर लीन रहने पर भी कभी-कभी अस्वस्थ हो जाते हैं। उनके लिये तो तत्कालीन औषधि के रूप में सिर्फ स्पर्श चिकित्सा ही उपयोगी होती है। हमारे आसपास मौजूद द्रव्यों से तत्कालीन चिकित्सा कैसे की जाये इस पर पत्रिका में विशेष उल्लेख समय-समय पर दिया जाता है।

इस सन्दर्भ में मुनि श्री प्रमाण सागर जी एवं क्षमासागर जी से विशेष चर्चा हुई। उन्होंने इन सब नुक्शों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की सलाह दी। अनेकों दीदी एवं ब्रह्मचारी भैया जी वगैरह ने अपने डायरी में इन्हें संकलित किया। जो कि साधु संतों के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। जैसे कि प्रत्येक रसोई में हींग मौजूद रहती है। हींग के नाम पर आप सिर्फ हिंग्वाहक चूर्ण से परिचित हैं।

हींग- चने के बराबर हींग की डली पानी में घोलकर लेप करने से गैस, अफारा, दस्त, सर्दी जुकाम, खांसी, श्वांस, निमोनिया आदि में पेट पर नाभि के आसपास छाती पर गले पर लेप करने से लाभ होता है। यदि संभव न हो तो साधु जहाँ आराम कर रहे हैं उनके आसपास रख दे। श्वांस प्रश्वांस के साथ रस की गंध शरीर में प्रवेश कर बीमारी से राहत दिलायेगी।

खूबकला- खस-खस के समान महीन लालरंग के दाने अपने नाम को चरितार्थ करते हैं। चाहे कैसा भी ज्वर (फीवर) हो, सर्दी जुकाम, लू, मलेरिया, पीलिया, म्यादी बुखार आदि इसे तखत पर फैला दें। एवं मुट्ठी में रखें शरीर के निरन्तर स्पर्श में रहने से यह सभी तरह के ज्वरों में लाभप्रद है।

अनेकों उपाय है जो यहाँ पर चर्चा नहीं हो सकती आप सबके पास संस्कार सागर पत्रिका के माध्यम से पहुंचते रहते हैं।

भाषा और माध्यम प्रतियोगिता आयोजित

इंदौर- राष्ट्रहित चिंतक आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ससंघ की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से पुस्तक अंग्रेजी माध्यम का भ्रमजाल पर हिन्दी दिवस के अवसर पर पर दिनांक 10 सितंबर से 14 सितंबर प्रतियोगिता आयोजित की गई है। आप इंस्टाग्राम, फेसबुक,ट्विटर, व्हाट्सअप, यूट्यूब, एप स्टोर, प्ले स्टोर आदि के माध्यम से जुड़कर 51 आकर्षण पुरुस्कार प्राप्त कर सकते हैं। उपरोक्त पुस्तक संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर के साथ-साथ सभी मुनिसंघ, आर्यिका संघ के चातुर्मास स्थल से प्राप्त कर सकते है। तथा बेवसाई www.vidyasagar.guru से डाउनलोड भी कर सकते हैं।

बहुआयामी नवजागरण : संस्कार सागर

अल्पना जैन (शुभि) मारौरा, इंदौर

लगभग 200 वर्षों के नवजागरण युग में सांस्कृतिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना को स्फुटित करने का एक बहुत बड़ा साधन पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन और प्रचार-प्रसार रहा है। जैन समाज अत्यधिक अल्पसंख्यक होते हुये भी अधिकांशतः एक शिक्षित और प्रबुद्ध समाज रहा है, अतः आधुनिक साधनों का जैनों ने भी पर्याप्त उपयोग किया है। उन्होंने स्वयं अपनी अनेक उत्तम पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित कीं तथा उनका सुयोग्य सफल संचालन किया है।

भारत की विविद्य भाषाओं में प्रकाशित होने वाले जैन पत्र-पत्रिकाओं की संख्या बहुत बड़ी है। इनके द्वारा धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में जैन समाज की प्रगति की दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान योगदान रहा है। हमारी पत्र पत्रिकाएं कमाई के ख्याल से कभी प्रकाशित नहीं हुई और ना ही होगी।

हर पत्रिका का यही मिशन रहा है कि वह अपने क्षेत्र में मानव समाज को अधिक ज्ञानवान प्रखर और विवेकवान बनाने की गरज से उसके हाथ में पहुंचे, संस्कार सागर के माध्यम से पाठकों के हाथ में एक से एक बढ़िया रत्न हमारे ग्रंथों से निकाल कर रख रहे हैं उन्हें परिभाषिक शब्दावली कंठाग्र करवा रहे हैं, ध्यान, धारणा, उपवास, पूजा-पाठ की विधियां समझा रहे हैं, जैन दर्शन का उच्चतम अध्यात्म प्रस्तुत करने वाले धर्मपत्रिका में संस्कार सागर अपना विशेष स्थान रखती है।

आज के इस भौतिकवादी युग में अपसंस्कृति का बढ़ता मूल्य जीवन के मूल्य को घटाता जा रहा है। पद प्रतिष्ठा प्रदर्शन का लोभ संस्कार निर्माण की दिशा में विशुद्ध नेतृत्व प्रदान नहीं कर पा रहा है। जिनके हाथ में समाज परिवार को दिशा देने का अधिकार है विस्मय की बात तो यही है कि वे स्वयं दिशा भटक चुके हैं। अपसंस्कृति के जुनून में हमारे नेता, धर्म नेता, समाज नेताओं तक को घेर रखा है, ऐसी परिस्थिति में संस्कारों की पुनः स्थापना करने के प्रति निराशा ही हाथ लगती है, पर यह सत्य है कि छोटा सा भी किया गया प्रसास कुछ ना कुछ अपना प्रभाव अवश्य छोड़ता है, श्री दिगम्बर जैन युवक संघ के प्रयासों, ब्र. जिनेश भैया जी की मेहनत एवं ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से संस्कार हिंदी मासिक पत्रिका का प्रारंभ हुआ था और यह पत्रिका जिन उद्देश्यों को लेकर प्रारंभ हुई थी वे आज भी प्रासंगिक बने हुये हैं। संस्कार सागर पत्रिका पढ़ना हर पाठक की दिनचर्या का अंग बन गई है। हर वर्ग जाति समाज के हृदय में संस्कार सागर अपना स्थान बनाये हुये है। यह पत्रिका काफी ज्ञानवर्धक है, इससे जीवन में कुछ करने, कुछ बनने की प्रेरणा मिलती है।

संस्कार सागर बहुआयामी पत्रिका है। यह पत्रिका हर वर्ग के पाठकों को ध्यान में रखकर 18 अप्रैल 1999 से निरन्तर (बिना किसी संयुक्तांक बिलंब) मासिक नियमित प्रकाशित की जा रही है। इसमें विभिन्न स्तंभ समाहित किये जाते हैं, जिनमें से सामान्य ज्ञान, कैरियर, युवावर्ग के लिये अनेक प्रकार की सामग्री प्रस्तुत की जाती है। इस पत्रिका का कथा साहित्य ज्ञानोपयोगी हैं।

समाज, अंधविश्वास, संस्कार निर्माण जैसी समाज सुधार कार्यक्रम को व्यक्तिगत व्यक्त करते हुये सूचित किया जाता है। इसके अग्रलेख सामाजिक चिन्तन को प्रस्तुत करते हैं। संस्कार सागर पत्रिका का मुख्य पृष्ठ सजग और नवीन होता है तथा प्रकृति से जुड़े हुये चित्रों को प्रस्तुत करते हुये समाज में सभी वर्गों को एक सामाजिक संदेश देता है। इसकी पैन्टिंग नैसर्ग और नैतिकता से ज्यादा होती है। संस्कार प्रवाह संपादकीय पठनीय होते हैं, दुनिया भर की बातें, बाल कवितायें तथा कहानी इसके स्थाई स्तंभ हैं।

पूज्य ऐलक सिद्धांतसागर जी ने प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में संस्कार संस्थापन के क्षेत्र में अपनी सतत साधना मनन चिंतन एवं प्रवचनों के माध्यम से अत्यधिक योगदान दिया। संस्कार सागर पत्रिका विविध जनोपयोगी जानकारी के माध्यम से परिवार के सभी सदस्यों को अधिक उपयोगी जानकारी प्रदान करती है यह पत्रिका हर व्यक्ति को सरलता से अपनी संस्कृति से परिचित कराती है राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय, आध्यात्मिक भौतिक एवं व्यवसायिक पक्षों का अनुपम संतुलन भी इस पत्रिका समाहित है।

स्थापत्य कला को वैज्ञानिक ढंग से विश्व के समक्ष स्थापित करने की दिशा में संस्कार पत्रिका के माध्यम से जो प्रयास हुये हैं वह सराहनीय है, संपूर्ण जगत को उच्च कोटि की समसामयिक सामग्री प्रदान करने वाली माथापच्ची, प्रश्नोत्तरी वर्ग पहेली आदि इस पत्रिका ने सभी स्तंभों को स्थान देकर इसे मनमोहक संग्रहणीय और सुरूचिपूर्ण बना दिया है।

इसके प्रवेशांक के संपादकीय (संस्कार प्रवाह) के प्रमुख अंश निम्न हैं। जिसे लेकर यह आज भी चिंतित है। चारित्र निर्माण 21वीं सदी की सबसे बड़ी समस्या बनकर रह जायेगी। चिनतन और चरित्र का अभाव जिस तरह से समाज में हो रहा है वह निश्चित तौर पर बुद्धिजीवी समाज शिल्पियों के लिये चिनता का विषय बनता जा रहा है। यदि भविष्य की कल्पना की जाये तो ऐसा लगता है कि ज्यादा नहीं तो आगामी 10 वर्षों बाद विश्व घोर प्रदूषण, भ्रष्टाचार, अराजकता, हिंसा, स्वार्थ, पदलौपुता, वासना के अंधेरे पथ में भटक जायेगा और भोगवाद के भयावत गर्त में पतित हो जायेगा। भविष्य के प्रति सावधान करना हर संत, ऋषि, बुद्धिजीवी दूरदृष्टा का कर्त्तव्य रहा है और रहेगा।

गोवंश रक्षाः- गोवंश रक्षा का भी संस्कार सागर के माध्यम से बहुत प्रचार प्रसार किया गया संपूर्ण भारत में अप्रैल 1999 से 20 रथों का प्रवर्तन हुआ यह सभी रथ 1310 दिन तक प्रवर्तन करते हुये 5275 गांव से संपर्क किया वं 1064600 व्यक्तियों से संपर्क साधे हुये 73 जिलों में 2057 गौ रक्षक समितियों का गठन करते हुये 31627 गोवंश को असामाजिक लोगों से छुड़वा कर अभय दान दिया गया था 90 गौशालाओं का स्थापना रथ के माध्यम से हुई थी।

चिकित्सा आरोग्यः इसी के साथ प्राण चिकित्सा आरोग्य पत्रिका के माध्यम से प्राण चिकित्सा के संदर्भ में ऐलक श्री सिद्धांसागर जी द्वारा पत्रिका के माध्यम से बहुत ही सरल तरीके से बताया गया है कि प्राण चिकित्सा पद्धति को वर्तमान में रेकी के नाम से पुकारा जाता है यद्यपि भारतीय योग साधकों ने युग के आदि में ही इस साधना को ऊंचाईयां प्रदान की थी।[1] जिसे अंक

11 मार्च 2000, पेज 6-7 में स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है।

आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्राण चिकित्सा पद्धति की यह महत्वपूर्ण प्रक्रिया वैज्ञानिक व तर्कसंगत सिद्ध होती है। इस प्रक्रिया में तंत्र-मंत्र विद्या, धर्म संप्रदाय व अंधविश्वास, हिंसा का कोई स्थान नहीं है। किंतु मन को केंद्रीभूत स्थित करने पर शरीर मे विद्यमान हो सकती चाहे वह जैन विद्युत जैव चुम्बकत्व या ऊष्मीय रूप में हो। किसी भी एक केन्द्र पर ध्यान के माध्यम से केंद्रित हो जाते हैं जिनके माध्यम से हम किसी भी रोगी तक हम अपनी शक्तियों का प्रयोग करना चाहते हैं कर सकते हैं। इस प्रकार की जानकारियां भी हमें संस्कार सागर के हमेशा माध्यम से मिलती रहती है।

स्वास्थ्य संबंधित उपयोगी जानकारियाँः- स्वास्थ्य संबंधित जानकारियां भी हमें संस्कार पत्रिका के माध्यम से प्राप्त होती है। आयुर्वेदिक चिकित्सा के द्वारा हर बीमारी की समस्या का समाधान यहां मिलता है। पथरी में किस चीज का सेवन करें, बवासीर आदि अनेक बीमारियों के निवारण इस पत्रिका में समय-समय पर प्रकाशित किये जाते हैं।[2]

बीजों में स्वास्थ्य किस चीज के बीज किस बीमारी में फायदा करते हैं, इसका भी बहुत अच्छा वर्णन किया गया। कद्दू के बीज में आयरन कैल्शियम जिंक और प्रोटीन होते हैं जो स्ट्रेस और तनाव को दूर करने में काफी सहयोगी होते हैं। तरबूज के बीज इनमें भी आयरन, पोटेशियम, विटामिन, फैट और कैलोरी होती है। सूरजमुखी के बीज गर्भवती महिला को स्वस्थ रखने के लिये काफी अहम भूमिका निभाते हैं, यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि सूरजमुखी के बीज कैंसर से बचने में भी कारगर हैं। मैथी के फायदे पेट दर्द, जलन, रक्त, सभी बवासीर, मधुमेह, चोट, अतिसार, गाठिया, महिलाओं की समस्या संबंधी बीमारी में फायदेमंद है।

आंवले के भी कई फायदे बताये गये हैं। नकसीर, खूनी बवासीर, पेशाब की जलन, मधुमेह, कब्ज, दस्त और श्रमण शक्ति बढ़ाने में भी आंवला बहुत कारगर सिद्ध हुआ है। इसके अलावा आर्थराइटिस, मोटापा आदि इन समस्याओं का निवारण आयुर्वेदिक चिकित्सा के माध्यम से संस्कार पत्रिका में किया जा चुका है।

साधु साध्वियों की जानकारीः- देश के समस्त जैन साधु साध्वियों की जानकारी एवं चातुर्मास स्थल के पते के साथ साथ वहां के संपर्क सूत्र भी देना, कितना श्रम साध्य कार्य है, इसका अनुमान वही कर सकता है जिसने इस तरह का कोई कार्य कभी किया हो। उसे ही श्रम का आकलन ज्ञात होता है। वर्तमान में संतु साधुओं की समग्र जानकारी देने वाली जैन समाज की इकलौती पत्रिका संस्कार सागर है जिसके माध्यम से हम पता कर सकते हैं कि वर्तमान में कितने साधु संत विराजमान है।

सामाजिक क्रांति एवं समाज सुधारकः समाज के सभी वर्गों एवं सामाजिक क्रांति के आधारभूत संगठनो का वर्णन किस सन में किस समाज के प्रमुख द्वारा किया गया इन सभी की जानकारी भी हमे संस्कार पत्रिका के से प्राप्त होती है।[3] ऐसी जानकारी किसी ऐतिहासिक पुस्तक

में भी एक साथ प्राप्त नहीं हो सकती और प्राप्त हो भी तो उसके लिये अथक परिश्रम करना पड़ेगा पर संस्कार पत्रिका के माध्यम से ये हमे सरलता से प्राप्त हो जाती हैं।

- वेद समाज सन् 1867 आचार्य केशवचंद्र सेन
- सत्यशोधक समाज सन् 1873 ज्योतिबा फुले
- अलीगढ़ मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज सन् 1875 सर सैयद अहमद खा
- इंडियन लीग सन् 1875 शिशिर कुमार घोष
- आर्य समाज सन् 1875 स्वामी दयानंद सरस्वती
- इंडियन एसोसिएशन सन् 1876 आनंद मोहन बोस, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
- थियोसोफियल सोसायटी सन 1882 मैडम ब्लॉकवस्की एवं कर्नल अलकाट
- रामकृष्ण मिशन 1897 स्वामी विवेकानंद

इसके अलावा और भी अन्य कई सारे सामाजिक क्रांति के आधारभूत संगठनो का वर्णन हमें संस्कार सागर पत्रिका के माध्यम से समय-समय पर पढ़ने को मिलता रहा है।

- संस्कार सागर पत्रिका ने समय समय पर सामाजिक मुद्दों को उठाकर समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। इसके इन्हीं बहुआयामी प्रकल्पों के कारण यह सम्पूर्ण जागृतकारी समाज में अपना क महत्त्वपूर्ण स्थान बनाये हुये हैं। हमारी अपनी यह पत्रिका निरन्तर प्रगति करते हुये नवजागरण की दिशा में उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती रहे यही मंगल कामना करते हैं।

1. मार्च 2000, पृष्ठ 6-7
2. अप्रैल 2014 पृष्ठ 12
3. जुलाई 2013 पृष्ठ 38, सामाजिक क्रांति के आधारभूत संगठन समाज

कविता

शिक्षक

शिक्षा देवी ज्ञान देवी
सरस्वती उनके वरदपुत्र शिक्षक
निस्सीम अनुभव के धनी
साधना पथ के सफल साधक
विद्या के आराधक हम सबके मार्गदर्शक
सचेतक गुरु शिक्षक
गर तुम न होते बीच भंवर में
फंसी नौका न खेते तो डूब जाते
जीवन का होता अंत दुख मिलता अनंत
अज्ञान के घने तम में तुमने थमी तुम मशाल
जली ज्योति विशाल ज्ञान के प्रकाश की भेंट दी
अतः मानव जाति बच गई
दानव बन नहीं पाई उपकार आपका
महान अतः हमने शिक्षक की महिमा हर दम गाई।

केरियर

योग प्रशिक्षक के रोजगार अवसर

योग एक ऐसी विद्या है जिसके द्वारा स्त्री, पुरुष, बच्चे, वृद्ध सभी लाभ पा सकते हैं। योग द्वारा विभिन्न रोगों का इलाज किया जा सकता है। जब योग उत्तम स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है तो योग को रोजगार के रूप में भी अपनाया जा सकता है । योग सिखाने के लिये कुशल व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। इसी कारण योग अध्यापकों की माँग बढ़ती जा रही है।

आयः योग को कैरियर के रूप में अपनाकर अच्छे योग अध्यापक के तौर पर 25,000 से 10,0000 मासिक तक कमा सकते हैं।

कार्य के क्षेत्रः आज कल पांच सितारा होटलों में योग अध्यापकों की निरंतर मांग रहती है। इसके अलावा हेल्थ क्लबों में भी योग प्रशिक्षिकों की मांग रहती है। योग प्रशिक्षक निजी तौर पर भी योग सिखा सकते हैं।

प्राकृतिक उपचार व योग संस्थानः- प्राकृतिक चिकित्सा व योग हमारी राष्ट्रीय धरोहर है। निम्न योग संस्थानों से योग का प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है। और फिर योग को कैरियर के रूप में अपनाया जा सकता है।

दिल्ली के संस्थान- कृष्ण दत्त स्वास्थ्य केन्द्र, केन्द्रीय योग अनुसंधान संस्थान, भारतीय योग संस्थान, योग साधना केन्द्र, योग प्रसार समिती, योग मंदिर आदि।

इसके अतिरिक्त अन्य राज्यों में भी योग संस्थान है । निम्न विश्वविद्यालयों द्वारा भी योग के पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं । सागर विश्वविद्यालय, पूना विश्वविद्यालय, नागपुर विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय, गुरुकुल विश्वविद्यालय, मंगलौर विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ कर्नाटक विश्वविद्यालय, योग व प्राकृतिक चिकित्सा विश्वविद्यालय मैसूर, शिवनिंद मठ व योगश्रम, कलकत्ता में भी और उस्मानिया विश्वविद्यालय आदि।

दुनिया भर की बातें

जुलाई 2023

■ 1 जुलाई

- बुलढ़ाणाः नागपुर से पुणे जा रही निजी ट्रेवल्स बस में सड़क हादसे में आग लगने से 25 जिंदगी खाक हुईं चालक क्लीनर सहित 6 लोग घायल हुये ।

- अहमदाबादः गुजरात हाईकोर्ट ने तीस्ता शीतलवाड़ की नियामत जमानत याचिका खारिज कर दी गुजरात के गोधराकांड में निर्दोषों को फंसाने का आरोप उन पर है।

- रायगढ़ (उड़ीसा) नक्सलियों ने पत्थर तोड़ने वाली नौ मशीनों को जलाया।

■ 2 जुलाई

- अजित पंवार ने 5वीं बार उप मुख्यमंत्री पद की शपथ ली उनके साथ राकांपा के 8 विधायक भी मंत्री बने।

- इजरायल कोर्ट को कमजोर करने के खिलाफ एक बार फिर जनसैलाब उमड़ा।

- बाल्टीमोरः अमेरिका के इस शहर में अंधाधुंध गोलीबारी हुई दो लागों की मौत व 28 घायल हुये।

■ 3 जुलाई

- मुंबईः आई एस आई एस संबंध रखने वाले को गिरफ्तार करने के लिये एन आई ए ने 5 जगह छापे मारे 4 लोगों को गिरफ्तार किया।

- इजरायल ने फिलस्तान के जेनिन पर हमला किया 8 की मौत हुई।

- अनिल कुमार मिश्र दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक बने।

■ 4 जुलाई

- काबुलः तालिबान ने ब्यूटी पार्लर बंद कराये।

- पूर्व कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष अब पंजाब भाजपा के प्रदेषाध्यक्ष नियुक्त हुये। झारखंड प्रदेशाध्यक्ष भाजपा बाबूलाल मरांडी बने।

- सेन फ्रॅंसिस (अमेरिका) खालिस्तानियों ने भारतीय वाणिज्य दूतावास में आग लगाई।

■ 5 जुलाई

- इम्फालः मणिपुर के थौबल जिले में भीड़ ने भा. आरक्षित वाहनी के मकान में आग लगाई।

- बिहार में 24 घंटे बारिश एवं बाढ़ से 36 लोगों की मौत हुई।

- वाशिंगटनः व्हाइट हाउस से सफेद पाउडर कोकीन मिला शक की सुई राष्ट्रपति बाइडन के बड़े बेटे पर रूकी।

■ 6 जुलाई

- सी.ए. की अंतिम वर्ष परीक्षा में अक्षय जैन (अहमदाबाद) ने पूरे देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

-म.प्र. के सीधी में आदिवासी युवक के मुख्यमंत्री ने पैर धोये आरती उतारी यह लघुशंका कांड से पीड़ित था प्रवेश शुक्ला ने लघुशंका की थी।

- ट्विटर को टक्कर देने नपा एप्प थ्रेड लांच हुआ।

■ **7 जुलाई**

- हाईकोर्ट गुजरात ने मोदी सरनेम वाली टिप्पणी मामले में राहुल गांधी को दोषी सिद्धि पर रोक नहीं लगाई।

- भाजपा ने म.प्र. का चुनाव प्रभारी भूपेन्द्र यादव को सहप्रभारी अश्विनी वैष्णव को नियुक्त किया।

- अगरतलाः त्रिपुरा वि.स. के 5 विधायक कार्यवाही में व्यवधान पैदा करने से निलंबित हुये।

■ **8 जुलाई**

- फिल्म आदिपुरुष पट कथा लेखक मनोज मुंतशिर ने विवादा स्पद डायलॉग के माफी मांगी।

- कोलकाता : पश्चिम बंगाल के पंचायती चुनाव में खूनी खेल हुआ 15 लोगों लिये की मौत हुई।

- मास्कोः रूस में पुतिन से वगावत करने वाले वैगनर प्रमुख घर पर छापा पड़ा

■ **9 जुलाई**

- पुंछः अचानक आई बाढ लांस नायक तेलुराम एवं नायब सूबेदार कुलदीप सिंह बहे उनके शव बरामद हुये।

- श्रीलंका में 15 भारतीय मछुआरे गिरफ्तार हुये।

- पेरनामबुको (ब्राजील) एक जीर्णशीर्ण इमारत ढहने से 6 बच्चों सहित 14 लोगों की मौत हुई।

■ **10 जुलाई**

- भारतीय खिलीड़ी लक्ष्मीसेन ने बेडमिंटन में कनाडा ओपन खिताब जीता।

- जोर्डन के विशेष सुरक्षाबल ने 3 भगोड़े आतंकियों को मार गिराया।

- लागोस (नाइजीरिया) बस ट्रक की टक्कर में 20 लोगों की मौत हुई बस में 20 लोग सवार थे।

■ **11 जुलाई**

- काठमांडूः विदेशी यात्रियों को ले जा रहा था हैलीकाप्टर क्रैश हुआ 6 लोगों के शव बरामद हुआ।

- कुल्लुः व्यास नदी के बहाव में 30 लोग एवं सेंज बाजार की 40 दुकानें बही। 3 दिन में 23 मौंते हुईं।

- राजौरीः जिले की नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ की कोशिश नाकाम हुई एक आतंकी ढेर हुआ।

■ **12 जुलाई**

- इंडियन मुजाहिदीन के 4 आतंकियों को 2012 में सरकार खिलाफ युद्ध छेड़ने के आरोप में एक कोर्ट ने साल की सजा सुनायी।

- ललितपुर (उ.प्र.) सीरोना कला में मोबाइल फटने से अजय (17) की मौत हुई।

- चीन में पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट होने से 5 लोगों की मौत हुई दो लापता हैं।

■ **13 जुलाई**

- राज्य सभा के पूर्व सांसद विजय दर्डा सहित पूर्व कोयला सचिव एस सी गुप्ता कोल ब्लॉक आवंटन घोटाला में दोषी करार हुये।

- पटलः विधानसभा की ओर बढ़ रहे भाजपा नेताओं पर पुलिस के लाठी चार्ज के कारण 5 सांसद विजय सिंह का निधन हुआ 50 से ज्यादा घायल हुये।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फ्रांस यात्रा पर रवाना हुये भारतीयों की भीड़ ने स्वागत किया।

■ **14 जुलाई**

- भारत के इसरो संस्था ने श्री हरिकोटा ने चंद्रयान3 को चांद की ओर लांच किया।

-राकांपा के नेता अजित पवार महाराष्ट्र के वित्त मंत्री बने।

- फ्रांस के राष्ट्रपति मैकों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को फ्रांस के सर्वोच्च सम्मान ग्रैंड फ्रांस आफ द लीजन ऑफ ऑनर से सम्मानित किया।

■ **15 जुलाई**

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विदेश यात्रा के दूसरे पड़ाव में संयुक्त अरब अमीरात पहुंचे राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान से मिले।

- कांग्रेस नेता राहुल गांधी मोदी सरनेम वाली टिप्पणी मामले में गुजरात हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देने सुप्रीम कोर्ट गये।

■ **16 जुलाई**

- ओमप्रकाश राजभर की सुभासगा राजंग में शामिल हुईं।

- भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने नहीं सहेगा राजस्थान अभियान की शुरुआत की।

- इटली में एयरपोर्ट कर्मचारी और पायलटों ने हड़ताल कर दी जिससे हजार भारतीय पर्यटक फंसे।

■ **17 जुलाई**

- ममी लॉडरिंग मामले में जेल बंद राकांपा नेता नवाब मलिक ने अंतरिम जमानत याचिका को वापिस लिया।

- यूक्रेन के ड्रोन ने रूसी टैंक के परखचे उड़ाये।

- पुंछ/जम्मूः नियंत्रण रेखा के पास घुसपैठ की कोशिश करते 2 आतंक वादियों को मार गिराया।

■ **18 जुलाई**

- राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष विजय सांपला ने अपने पद से इस्तीफा दिया।

- केरल के पूर्व मुख्यमंत्री ओमन चांडी का निधन हुआ वे 79 वर्ष के थे।

- कांग्रेस सहित 26 विपक्षी दलों ने अपने गठबंधन का नाम इंडिया रखा।

- भाजपा ने दिल्ली में 38 दलों के साथ बैठक कर ताकत दिखाई।

■ **19 जुलाई**

- सियाचिनः बंकर में शार्ट सर्किट के चलते आग लगी कैप्टन अंशुमन सिंह

शहीद हुये 3 जवान झुलसे।

- उत्तराखंड के चमोली नमामिगंगे प्रोजेक्ट के सीवर प्लांट में करंट फैलने से 17 लोगों की मौत हुई।

- कर्नाटक में 5 संदिग्ध आतंकी को पुलिस ने गिरफ्तार किया ये लश्कर के संपर्क में थे।

■ **20 जुलाई**

- रायगढ़ः इरशालबाड़ी में भूस्खलन में 16 लोगों की मौत हुई। 21 लोग घायल हुये।

- इम्फालः मणिपुर के हिंसा रेप से पीड़ित तीन महिलाओं की वीडियो वायरल से सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया प्रधानमंत्री गुस्से में आये।

- डेरा सच्चा सौदा प्रमुख दुष्कर्म दोषी गुरमीत राम रहीम को ढ़ाई साल में 7वीं बार पैरोल मिली।

■ **21 जुलाई**

- अदालत ने ज्ञानवापी परिसर में वैज्ञानिक सर्वे करने का आदेश ए.एस.आई को दिया।

- श्रीलंका के प्रधानमंत्री विक्रम सिंधे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिले।

- पाक के सिंध प्रांत में हिन्दू 3 बहनों का अपहरण करके जबरन निकाह मुसलमान पुरुषों से कराया।

■ **22 जुलाई**

- गोंदिया (महाराष्ट्र) अनंत सोंटू जैन के छापे में 15 किलो सोना 200 किलो चांदी और 18 करोड़ नगद जैन के घर पुलिस ने दबिश की।

- राजस्थान के मंत्री राजेन्द्र सिंह गुढ़ा को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से बर्खास्त किया।

- तेलअर्पावः इजरायल से न्यायिका सुधार फैसले के खिलाफ 5 किमी लंबी रैली निकली।

■ **23 जुलाई**

- सांबा (जम्मू) अंतराष्ट्रीय सीमा पर बी.एस.ए ने बारूदी सुरंग नष्ट की।

- मोतीहारीः आव्रजन अधिकारियों ने अवैध रूप से घुसे 2 चीनी नागरिकों को गिरफ्तार किया।

- रूस के हमले में यूक्रेन के शहर ओडिसा में चर्च क्षति ग्रस्त हुआ 1 व्यक्ति की मौत हुई। 22 घायल हुये।

■ **24 जुलाई**

- ज्ञानवापी में 26 जुलाई एक ए.एस.आई के सर्वे पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगाई।

- इजरायल की संसद में न्याय पालिका अधिकार कम करने वाला बिल पास हुआ भले ही जनता सड़कों पर प्रदर्शन करती रही है।

- बदीनाथ हाईवे का हिस्सा ध्वस्त हुआ 1000 तीर्थ यात्री फंसे।

■ **25 जुलाई**

- पुणेः पुलिस ने आतंकी मो. यूनिस, मो. इमरान को गिरफ्तार किया।

- चंद्रयान-3 का 5वां कक्ष उन्नयन सफल रहा।

- इजरायल के 30 हजार डॉक्टर हड़ताल पर गये रिजर्व सैनिकों ने ड्यूटी से इंकार किया।

■ **26 जुलाई**

- लोकसभा में इंडिया विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव चर्चा के लिये मंजूर हुआ।

- पूर्व राज्यसभा सदस्य विजय दर्डा एवं उनके बेटे देवेन्द्र दर्डा और मनोज जायसवाल को एक अदालत ने कोयला घोटाले में 4 साल की सजा सुनाई।

- पाक की शीर्ष अदालत ने इमरान खान की याचिका को (तोशखाना मामले) खारिज किया।

■ **27 जुलाई**

- श्रीनगरः शिया समुदाय के ताजिये 34 साल बाद गालियों से गुजरे।

- नाइजर की सेना ने तख्ता पलट कर राष्ट्रपति मोहम्मद बज्म को गिरफ्तार किया।

- श्री लंकर से रिहा हुये 5 मछुआरे चेन्नई पहुँचे।

■ **28 जुलाई**

- मणिपुर में सुरक्षा बल से मुठभेड़ हुई 3 उपद्रवी मारी गये।

- पूर्व राज्यसभा सदस्य विजय दर्डा समेत 3 लोगों को दो दिन जेल में रहने के बाद हाईकोर्ट दिल्ली ने अंतरिम जमानत दी।

- सव्य मंगलम अभयारण्य में बाघ के शिकार के आरोप में 7 लोग गिरफ्तार हुये।

■ **29 जुलाई**

- कार्पोरेट मंत्रालय के 2 अफसर संयुक्त निर्देशक सहित 4 लोग अनैतिक व्यावसायिक मामले में गिरफ्तार हुये।

- बंगाल की खाड़ी में 36 मछुआरो को नौसेना ने बचाये।

- राष्ट्रमंडल युवा पुरुस्कारों की सूची में चार भारतीय शामिल किये गये।

■ **30 जुलाई**

- इंडिया के सांसद ने मणिपुर का दौरा किया और उन्होंने राज्यपाल अनसुइया उइके को ज्ञापन सौंपा।

- पाकिस्तान के खैबर पख्तून ख्वा प्रांत में एक राजनैतिक दल के अधिवेशन में बम विस्फोट हुआ । जमीयत उलेमा ए इस्लाम फजल के कार्यकर्ता के अनुसार 35 लोगों की मौत हुई। 150 लोग घायल हुये।

- रूस की राजधानी मास्को पर ड्रोन हमला यूक्रेन ने किया।

■ **31 जुलाई**

- आर.पी.एफ के कांस्टेबल चेतन कुमार चौधरी ने ए.एस.आई टीकाराम राम मीणा सहित 4 लोगों की गोली मारकर हत्या की और भाषण भी दिया।

- बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालूप्रसाद यादव एवं उनके परिवार की सम्पत्तियों ई.डी ने कुर्क की।

- यूक्रेन राष्ट्रपति के गृहनगर कीणा पर रूस ने मिसाइले बरसाई।

इसे भी जानिये

भारत के उत्कृष्ट पुरुस्कार

पुरुस्कार सम्मान	पुरुस्कार प्रदान करने वाले	पुरुस्कार का विवरण	वर्ष	राशि
भारत रत्न	भारत सरकार	कला, साहित्य, विज्ञान एवं सार्वजनिक सेवा या जीवन में असाधारण एवं अत्युतम कोटि की उपलब्धि हेतु	1954	
पद्म विभषण	भारत सरकार	सरकारी कर्मचारियों द्वारा की गई सेवा सहित किसी भी क्षेत्र में असाधारण एवं उत्कृष्ट सेवा हेतु	1998	
पद्म भूषण	भारत सरकार	सरकारी कर्मचारियों द्वारा की गई सेवा सहित किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा हेतु	सदैव	
पद्म श्री	भारत सरकार	सरकारी कर्मचारियों द्वारा की गई सेवा सहित किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा हेतु	सदैव	
भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार	भारतीय ज्ञानपीठ	देश की मान्यता प्राप्त किसी भी भारतीय भाषा मे लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार द्वारा किये गये उत्कृष्ट योगदान हेतु	1965	5 लाख
मूर्तिदेवी पुरुस्कार	भारतीय ज्ञानपीठ	भारतीय जीवन के शाश्वत मूल्यों को उभारने के लिये किसी भी भारतीय भाषा या अंग्रेजी में रचित साहित्य पर	1984	51,000

दिशा बोध

खेती

1. व्यक्ति जहाँ चाहें घूमें पर अन्त में अपने भोजन के लिए हल का ही सहारा लेना पड़ेगा। इसलिए हर तरह से सस्ती होने पर भी कृषि सर्वोत्तम उद्यम है।
2. किसान देश के लिए धुरी के समान हैं, क्योंकि जोतने–खोदने की शक्ति न होने के कारण जो लोग दूसरे काम करने लगते हैं , उनको रोजी देने वाले वे ही किसान लोग हैं।
3. जो लोग हल के सहारे जीते हैं,वास्तव में वे ही जीतेहैं और सब लोग तो दूसरों की कमाई हुई रोटी खाते हैं।
4. जहाँ के खेत लहलहाती हुई शस्य की श्यामल छाया के नीचे सोया करते हैं , वहाँ के राजा के छत्र के सामने अन्य राजाओं के छत्र झुक जाते हैं।
5. जो लोग खेती करके जीविका चलाते हैं, वे केवल यही नहीं कि स्वयं कभी भी न माँगेगे बल्कि दूसरे भीख माँगनेवालों को कभी इंकार किये बिना दान भी दे सकेंगे।
6. किसान यदि खेतों से अपने हाथ को खींच लेवें, तो उन लोगों को भी कष्ट हुए बिना न रहेगा, जिन्होंने समस्त वासनाओं का परित्याग कर दिया है।
7. यदि तुम अपने खेत की धरती को इतना सुखाओं कि एक सेर मिट्टी सूखकर चौथाई अंश रह जाय तो मुट्ठी भर खाद की भी आवश्यकता न होगी और फसल की पैदावार भरपूर होगी।
8. जोतने की अपेक्षा खाद डालने से अधिक लाभ होता है और जब निदाई हो जाती है, तो सिंचाई की अपेक्षा रखवाली अधिक महत्व रखती है।
9. यदि कोई आदमी खेत देखने नहीं आता है और अपने घर पर ही बैठा रहता है, तो पतिव्रता पत्नी की तरह उसकी कृषि भी रुष्ट हो जायेगी।
10. वह सुंदरी जिसे लोग धारिणी कहते हैं, अपने मन ही मन में हँसा करती है, जब वह किसी काहिल को यह कहकर रोते हुए देखती है कि हाय ! मेरे पास खाने को कुछ भी नहीं है।

कहानी

पिता के आँसू

लेखक: 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

मुंबई की भीड़ भरी महानगरी में पत्रकार गजू घूम रहा था। उसने जब आसमान की तरफ देखा तो काली काली घटायें घुमड़ करके आ रही थी। उसके हाथ में छाता भी नहीं था क्योंकि मुंबई में छाता लेकर के घूमना कहाँ तक संभव हो पाता है। नहीं जब वह वहाँ घूम रहा था पत्रकार की हैसियत से तब उसने देखा की एक दिन चाट की दुकान पर काफी बड़ी थी, भीड़ भी थी और वहां पर वह भी जा करके पहुंच गया। उसने देखा की वहां पर पानी से बचने का एक साधन अवश्य है। वह वहीं चला गया तो एक उसके पीपे पर जा करके बैठ गया। उसने कुछ नही कहा सब लोग खड़े-खड़े चाट खा निकल रहे थे पर उसकी दुकान में एक आदमी की बैठने की व्यवस्था थी। उस व्यवस्था को स्वीकार करके बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसने देखा दुकानदार काफी व्यस्त है, 3-4 लड़के लगे हुये हैं जो काम कर रहे हैं लेकिन दुकानदार सिर्फ निर्देशन कर रहा था और नजर रखे हुये था कि किससे कितना पैसा काटना और क्या काम करवाना है। चलते चलते उसने उन लड़कों के तरफ देखा तो उसमें एक लड़का काफी स्मार्ट और ऐसा लगा रहा था जैसे वह बहुत पढ़ा-लिखा हो परन्तु जब यह सोचा कि इससे बात करें, एक पत्रकार के नाते मेरा मन बार बार करवटें ले रहा था गजानन ने धीरे से उससे पूछा भाई तुम्हारा क्या नाम है तो उसने बोले भाईसाहब नाम-वाम मत पूछिये आपको क्या चाहिये है वो बोलिये। वह फिर पीपे पर बैठ गया शाम के 4.30 बज गये। धीरे-धीरे घड़ी और बढ़ती गई और जैसे 5.00 बजने के लगभग घड़ी पर पहुंची कांटा तो दुकान बंद होने की स्थिति पर आई। दीनू चाट वाले से मैंने पूछा कि भैया आपका नाम क्या है तो वो बोले मेरा नाम दीनदयाल गुप्ता है पर मुझे प्यार से लो दीनू बोलते आ रहे हैं इसलिये मेरा नाम दीनू है। मैंने उससे फिर पूछा

की आप कहा के मूल निवासी हैं तो उसने कहा हम राजस्थान से हैं आपको मराठी आती है तो उसने बोले मैं मराठी नहीं जानता हूँ। तो फिर मैंने पूछा जब आपको मराठी नहीं आती है तो फिर आप इस मुंबई में इतना बड़ा बिजनेस कैसे करते हैं आपके पास तो अक्सर मराठी लोग की आते हैं तो उसने बोला मुंबई में मराठी, गुजराती, हिंदी सब भाषाएँ चलती हैं और मैं ज्यादातर हिंदी में ही बात करता हूँ और हिंदी में बात करने के कारण से मुझे सब लोग बहुत पसंद करते हैं क्योंकि हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की सबसे श्रेष्ठ भाषा है इसलिये मैं हिंदी बोलना पसंद करता हूँ। मेरा दिमाग में आ गया की आज 14 सितम्बर है और हिंदी दिवस है और इस हिंदी विदस पर इस दुकानदार ने हिंदी की बात की है।

गजानन थोड़ी देर के लिये सोचने लगा कि यदि भारत में अंग्रेजी की जगह हिंदी भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में अपना लिया जाये तो हिंदी राष्ट्र भाषा अवश्य बन सकती है खैर उसने कुछ नहीं सोचा और आगे की बात की चर्चा-जारी रखी की दीनू भाई मैं आपसे पूछ सकता हूँ तो दीनू भाई ने कहा हाँ पूछिएँ क्या पूँछना है आपको ? तब मैंने पूछा दीनू भाई आप कहाँ तक पढ़े हो ? तो दीनू भाई ने कहा इतने संवेदनशील प्रश्न मुझसे न पूँछे क्यूंकि जब मुझे पढ़ने की बात पूँछता है तब मुझे रोना आ जाता है। उनके भीतर टटोलते हुये पूछा की दीनू भाई आखिर तुम्हें रोना आता क्यों है ? देखो ऐसा है हम राजस्थान के एक छोटे से गांवों में रहते थे और उस छोटे से गांव में हमारे लिये कोई धंधा पानी नजर नहीं आ रहा था। पिता जी अनपढ़ और बेरोजगार थे और वे हमें अच्छा इंसान बनाने की कोशिश तो करते थे पर उनके पास कोई ऐसा साधन नहीं था तो मैं वहां से एक दिन पिताजी के पैर छुकर के वे सो रहे थे और बोले मैं काम-धंधा के लिये कहीं जा रहा हूँ, आप मुझे ढूंढना नहीं मेरी कोई चिंता नहीं कीजियेगा और मैं घर से निकल पड़ा। निकलने के बाद जब मैं गांव से शहर ही तरफ गया, दूदू के तरफ गया, दूदू मे जाकर के मैंने ट्रेन का पता लगाया और ट्रेन जयपुर तक गयी जयपुर से मैंने सोचा जयपुर में नहीं और आगे धंधा करेंगे और मैंने एक बात मन में आयी की अपन जो हैं न सबसे बढ़िया काम चुनते हैं बहुत कमाई हो सकती है। सोचा कि फिल्मी दुनिया में कलाकार बनें और मैं कलाकार बनने का मन बना करके सीधा ट्रेन में बैठा और मुंबई चला आया। मुंबई में फिल्मसिटी में भटकता रहा वहां पर किसी ने घास नहीं डाला 115 दिनों तक मैं जूझता रहा कोई भी मेरे लिये पूछने वाला भी नहीं मिला मैं कई लोगों से मिला और बोले मैं कलाकारी जानता हूँ क्यूंकि बचपन में मैंने गांव में होने वाले नाटक में रोल करता था तो मुझे ऐसा लगता था कि मैं कोई अच्छा रोल कर सकता हूँ परन्तु कोई हमें जब एक महीने तक रेस्पॉन्स नहीं मिला तो मैंने कहा की ऐसे पड़े रहने से कोई फायदा नही होने वाला, वहीं पे एक मित्र बन गया था जिसका नाम ज्ञानचंद था। दीनू और ज्ञानू दोनों मिलकर के एक होटल में पहुंचे और उस होटल में हम दोनों ने कहा हम भूखे हैं

और हमारे पास पैसे भी नहीं है क्या भोजन की व्यवस्था हो सकती है दुकानदार ने कहा भोजन तो दोनों मिलके आराम से करो लेकिन भोजन के बाद हमारा कुछ काम कर देना तो हम तुम्हें रोज भोजन की व्यवस्था कर देंगे। यह बात सुनकर के हम दोनों को ऐसा लगा जैसे गर्मी में घूमते हुये किसी व्यक्ति को कोई छाया मिल जाती है तो हम दोनों उसके पास रहने लगा लेकिन वह होटल जिसका नाम राठौड होटल था और उस होटल में मुझे सब चीजें मिलती थी कपड़ा मिलता था, भोजन मिलता था और इसके साथ-साथ हमें पैसे भी मिलते थे परंतु बस एक बात थी हमें होटल से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। 6 साल तक लगातार हम दोनों बाहर नहीं निकल सके सिर्फ हम लोगों को होटल में ही सारी जिंदगी बितानी पड़ी। एक दिन हम लोगों ने सोचा मौका पा करके होटल से भाग गया और एक सिटी बस में बैठ करके चौपाटी आ गया लेकिन अब हमने देखा की क्या करें फिर वही होटल पर हमें एक हुनर आ गयी थी की हमें अच्छी चाट बनाना आ गया था। ज्ञानू से बोले की अपन दोनों मिलकर के साथ-साथ बिजनेस करें, हम दोनों ने साथ-साथ बिजनेस करने की कोशिश की लेकिन एक दिन ज्ञानू और हमारे बीच में साझेदारी ज्यादा दिन तक नहीं चल पाई और ज्ञानू जो हैं हमें छोड़ करके चला गया। मैंने अकेले ही चाट के धंधे की कोशि की, कमाई होने लगी एक खोली में किराये से ले ली और उस खोली मैं रहने लगा धीरे से एक दिन गांव गया और वहां जाने के बाद मेरे जीवन में शादी होने का प्रसंग आ गया और पिताजी ने मेरी शादी एक गांव की लड़की से ही कर दी और वह सुशील तो थी साथ में उसका नाम सुशीला भी था। सुशीला के साथ मेरी शादी हुई और सुशीला ने मुझे बहुत संभाला और मेरे धंधे में दुगुना पैसे कमाने की स्थिति बन गई और मैं पैसा तो कमा रहा था धीरे-धीरे छोटे-छोटे बच्चे भी हो गये मेरे तीन लड़के और एक लड़की हो गये। गजानन ये बात सब सुनता चला जा रहा था की तभी गजानन ने बोला की मैं एक पत्रकार हूँ, और मैं एक पत्रकार की हैसियत से मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि आप कहाँ तक पढ़े हैं तो इस प्रश्न का आपने अभी तक जबाब नहीं दिया।

तब दीनू बोले में बारहवीं तक पढ़ा हूँ और बारहवीं में फैल हो गया था इसलिये मैं मुंबई आ गया। तो ये आपका लड़का इसका क्या नाम है तो उसने बताया मेरे इस लड़के का नाम सौरभ है, एक बेटा गौरव और तीसरे का नाम सुमित है। मेरे बेटे हैं पर ये मेरा बेटा सौरभ पूरा मेरा धंधा भी संभालता है और नौकरी भी एक ग्लोबल कंपनी में करता है इसके पास पैकेज बहुत अच्छा है और लगभग ये जितना पैसा कमाता है वह हमें धंधे मे हाथ भी बटाता है। गजानन ने कहा सच कहता हूँ मैं बहुत देर से देख रहा हूँ इतना स्मार्ट और पढ़ा लिखा लड़का आपका फटाफट हर काम करता चला जा रहा था, अभी भी मैं देख रहा हूँ की वह बर्तन साफ कर रहा है तब मैं तो समझा था की आपका कोई ऐसा लड़का होगा जिस लड़के को अपने लिये नौकरी पर आपने रखा होगा

परंतु आपने अभी बताया की ये मेरा लड़का है तो ये कहां तक पढ़ा है तो दीनू ने कहा ये चार्टेड अकाउंटेंट है तो दीनू की बात सुनकर के गजानन ने आंख फाड़ करके उसकी तरफ देखा और दांतोतले उंगली दबाने की कोशिश की। सी.ए. लड़का ग्लोबल कंपनी में काम करने वाला लड़का चाट की दुकान पर बैठता और काम करता है उससे बात करने की कोशिश की तो ऐसी बीच में दीनदयाल ने बताया की एक बेटा मेरा एम.बी.ए. है जिसका नाम सुमित है और एक गौरव है उसने भी एम.बी.ए. कर ली, दोनों बेटे नौकरी करते हैं और एक मेरी बेटी है जो बेटी इंजीनियर है। तब गजानन के मन में एक प्रश्न आया और उसने प्रश्न दीनू सामने रख दिया की दीनदयाल भाई हमको ये बात बताइये कि तुम अपने सभी बच्चे को इतना पढ़ा लिखा रहे हो पर आप ये बताइये की इतना सारा तुमने ऊंचाइंयों पर पहुंचाया ऐसा तो नहीं लगता की आप इस धंधे से इतना कमा पाते हो क्यूंकि एम.बी.ए. की फीस और अच्छे कॉलेज की फीस देना हर आदमी के वश की बात नहीं है मैं भी पत्रकार हूँ, मेरा घर शिरपुर में है बहुत किसानी है ओर मैं वहां किसानी करता हूँ, परंतु मैं इसके बाद भी कमा नहीं पाता हूँ और अपने बच्चों के साथ में इतना फीस भरने का साहस नहीं जुटा पाता हूँ। तब गजानन की बात सुनकर के दीनदयाल ने कहा देखो भाई मैंने एक की कसम खाई थी और वह कमस इसलिये खाई थी की मैं एक बहुत बड़ी कहानी को याद कर लेता था। मैंने यह सोच करके रखा था की मैं फटे कपड़े पहन लूंगा, किराये के मकान में रह लूंगा और दो बार भोजन करने के अपेक्षा एक बार ही भोजन करना पसंद कर लूंगा। लेकिन मैं अपने सभी बच्चों को पढ़ाऊंगा और परिणाम मेरे सामने यही आया की मैंने जितना भी कमाया उसमें जितनी फीस लगती थी मैं सब बच्चों की फीस इसी छोटी सी दुकान से पूर्ति करता था। साथ मुझे ऊपर वाले ने भी दिया और ऊपर वाले का साथ लेकर के मैंने यह तय कर लिया कि सचमुच में मेरे लिये इतना साथ मिला है कि मेरी किस्मत बहुत अच्छी है, मेरी पत्नी भी मेरा साथ देती है और उसका नाम तो ऐसा ही है और सुशील स्वभाव की है परंतु आज भी मैं किराये के मकान में ही रह रहा हूँ। खोली किराये की है उसी में चारों बच्चो के लिये चारों स्टैण्ड पलंग हैं जिसपे चारों बच्चें सो जाते हैं और मैं और मेरी पत्नी भी वहीं सो जाते हैं। अब जरूर मेरे बच्चे मेरे से कहते हैं पापा अपन अच्छा वाला फ्लैट ले लें और शान की जिंदगी जियें क्योंकि जब चारों बच्चों को पैकेज 35-35 लाख रूपयो हो तो हम लोग क्यों ना अब अच्छी जिंदगी की और बढ़े।

मैं अपने बच्चों से कहता हूँ की वो दिन कभी नहीं भूलना जो हम गुजार चुके हैं क्यांकि हमें अपने परिवार का सबसे पहले संगठन बनाना है। मैं अपने बच्चों को एक ही बात कहता हूँ जिसके साथ परिवार खड़ा हो जाता है उसे विश्व की कोई शक्ति हरा नहीं सकती है और परिवार ने मेरा पूरा साथ दिया और परिवार ने जब मेरा साथ दिया उन्होंने कहा कि पिताजी आप चिंता मत करो हम आपके साथ हैं और

मैंने एक ही बात सोच ली की अब मैं ऐसे परिवार की रचना करूँगा जिस परिवार के सारे के सारे लोग पढ़े लिखे हों और अच्छे धंधे से लगे हों और मुझे इसमें सफलता मिली, बच्चों ने भी मेरा बहुत बड़ा सहयोग दिया। गजानन ने एक फोटो की तरफ ऊंगली उठाकर के कहा काका ये किसकी फोटो हैं ये फोटो देख करके कहा ये मेरे पिताजी का फोटो है । आपके पिजाती का फोटो वो तो पगड़ी वगैरह लगाये हैं और हमें ऐसे दिखते हैं कि कोई एक गांव के ही रहने वाले हैं तब दीनू ने कहा की देखा भाईसाहब आप पत्रकार हो सकते हैं और हम शहर में आकर के शहर का हो सकते हैं लेकिन अपने गांव को कभी भुला नहीं पाया हूँ और मैं गांव में साल में एक बार एक महीने तक अवश्य रहता हूँ। गांव के बीच में रहने के बाद इतना अच्छा लगता है कि वहां ऐसा लगता है कि जैसे मैं किसी स्वर्ग में आ गया हूँ। ना हमारे गांव में मच्छर काटते हैं, ना हमारे गांव में इतनी गर्मी पड़ती है, ना हमारे गांव में ऐसे प्रदुषण है यहाँ पर लोगों के बहुत जल्दी पोल्युशन के कारण फेफड़े खराब हो जाते हैं ऐसा हमारे यहाँ कुछ नहीं होता है, मैं गांव में रहना बहुत अच्छे से पंसद करता हूँ और मैं जब गांव में रहता हूँ तब मुझे ऐसा लगता है कि मैं बहुत अच्छे तरीके से जी रहा हूँ। जब गजानन ने पूंछा की आपके पिताजी कोई बड़े सेठ होंगे तब दीनदयाल जी ने कहा मेरे पिताजी कोई बड़े सेठ नहीं थे, पढ़े लिखे भी नहीं थे, वो तो गांव में रहने वाले थे परंतु उनकी एक प्रेरणा ने मुझे ये सब दिया है, उन्होंने एक कहानी मुझे सामने दी और मैं उस कहानी को जब भी याद करता रहा हूँ तब-तब मुझे एक ही बात भीतर से आई की बच्चों को पढ़ाना ताकि अनपढ़ न रह जाये, तब मुझे ऐसा लगता था जैसे कोई स्वर्ग से मुझे डंडा ठोक करके कह रहा हो कि दीनदयाल कुछ भी हो जाये लेकिन तुझे अपने बच्चों को किसी भी प्रकार पढ़ाना है, उन्हें किसी भी प्रकार का कमी नहीं रखना। प्रभु से एक ही प्रार्थना करता था कि प्रभु मेरे पिता जी तो नहीं पढ़े लिखे थे पर उनके नाती पोते कम से कम पढ़े लिखे होना चाहिये लेकिन दीनदयाल जी आपने अभी तक वो कहानी नहीं बताई जो बार-बार कह रहे हैं तो वा कहानी क्या है जिससे आपने प्रेरणा ली। आपका क्या नाम है भाईसाहब? मेरा नाम गजानन है, अच्छा गजानन जी आप क्या करते हैं ? तो उसने बोला की मैं पत्रकार हूँ, सकाल का पत्रकार हूँ, अरे सकाल का पत्रकार हो तो आप कुछ लिखेंगे क्या ! नहीं मैं आपकी जिंदगी लिखूंगा परंतु मैं ये सोच रहा हूँ कि लिखूं तो कैसे लिखूं वो कहानी जो आप अभी तक नहीं बता पायें वो कहानी तो बता दें तो दीनदयाल ने कहा कि एक दिन हम अपने गांव में चबूतरे पर बैठे थे कि हमारे ग्राम सचिव आये और ग्राम सचिव ने आ करके एक कागज मेरे पिताजी के सामने रख दिया और कहा इस पर आपके लिये हस्ताक्षर करना है, पिताजी ने कहा हमें हस्ताक्षर करने नहीं आता है हम पढ़े लिखे नहीं हैं और उनकी आँखों में आंसू टपकने लगे और उनकी हालत को देख करके सोचा कि अपने बच्चों को इतना बढ़ा बना दूंगा मेरे लिये बच्चों को पीछे मुड करके देखने की जरूर ना पड़े। यही मेरे पिजाजी के आँसूओं ने बच्चों को पढ़ानेकी प्रेरणा दी।

हमारे गौरव

आचार्य सुमतिसागर छाणी

अपने जीवन में पर्याप्त यश व गौरव प्राप्त करने वाले बालक नत्थीलाल का जन्म मुरैना जिले के श्यामपुर ग्राम के निवासी धर्मवत्सल भी छिद्दूलाल जी एवं माता श्रीमती चिंरोजीदेवी के यहां वि.सं. 1974 का आसौज शुक्ल चर्तुथी को हुआ।

घर पर विधिवत् शिक्षा न होने पर भी सत्संगीत एवं ब्रम्हचर्यकाल में सतत् स्वाध्याय एवं अध्ययन कर अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली थी।

बारह वर्ष की उम्र में वैवाहिक बन्धनों में बांधने के लिये रामश्री ने आपके जीवन में प्रवेश किया। जो कि धार्मिक स्वभाव एवं संयम-त्याग में अग्रणी थी। आपके सुशील एवं गुणज्ञ दो पुत्र एवं दो पुत्रिया थी।

आप तत्वज्ञान के प्रखर विद्वान पं. मक्खनलाल जी शास्त्री पं. सुमतिचन्द जी शास्त्री एवं ब्रम्हचारियो आदि के समागम में रहने लगे और नियमपूर्वक स्वाध्याय इनका व्यसन बन गया।

वि.स. 1921 में आचार्य शांतिसागर जी छाणी से द्वितीय प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर व्रती जीवन आरंभ किया। वि.सं. 2025 को चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को रेवाड़ी में आचार्य विमलसागर जी से ऐलक दीक्षा अंगीकार कर वीरसागर नाम पाया।

अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 को द्वितीय केशलोंच के अवसर पर गाजियाबाद में मुनि दीक्षा धारण कर सुमतिसागर नाम से जाने लगे।

मुनिश्री सुमतिसागर जी को मुरैना में वि. सं. 2030 ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के मंगल अवसर पर आचार्य पद से सम्मानित किया गया।

आचार्य श्री सुमतिसागर जी द्वारा संग्रहित, रचित, उपदेश से प्रकाशित साहित्य रत्नकरण्ड श्रावकाचार, छहढ़ाला, आत्मशुद्धि प्रकाश, जिनवाणी, आषमार्ग भाग, भक्तामर मोक्ष शास्त्र आदि है।

आचार्य श्री द्वारा दीक्षित साधुवृन्द 33, आर्यिका 16, ऐलक 8, क्षुल्लक 27, क्षुल्लिका 8 है।

अश्विन वदी बारस 3.10.1994 को सोनगिरी जी क्षेत्र पर संलेखना पूर्वक समाधिमरण हुआ।

पत्रकारिता के क्षेत्र में संस्कार सागर

डॉ. सुनील जैन (संचय) ललितपुर
अतिथि संपादक- संस्कार सागर पत्रिका

पत्रकारिता लोकतांत्रिक प्रशासन का एक अविभाज्य अंग है। प्रेस निरंतर गतिमान संसद है। पत्रकारिता जनभावना की अभिव्यक्ति, सद्‌भावों की पृष्ठभूमि और नैतिकता की पीठिका है। संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी होने के साथ ही यह जीवन में अभूतपूर्व क्रांति की भी अग्रदूतिका है। समय और समाज के संदर्भ में सतत् सजग रहकर नागरिकों में दायित्व का बोध कराने वाली कला है पत्रकारिता। पत्रकारिता कालधर्म की तीसरी आंख है। हमारे वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक और साहित्यिक जीवन में पत्रकारिता का अत्यंत महत्त्व है। इसके महत्त्व को इंगित करते हुये अकबर इलाहाबादी ने ठीक ही कहा था-

खींचो न कमान, न तलवाल निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो ।।

लोकतान्त्रिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा में पत्रकारिता का योगदान अप्रतिम है। सामाजिक दृष्टि से पत्रकारिता का अत्यधिक महत्त्व है। भारतीय समाज को जड़ता और कुरीतियों से मुक्त कराने में पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

भारत में पत्रकारिता की औपचारिक शुरुआत हुये लगभग दो शताब्दियां हो गई हैं। पत्रकारिता की इस विकास यात्रा में धार्मिक तथा सामाजिक पत्रकारिता की विशेष भूमिका रही है। इस पत्रकारिता का लक्ष्य मुख्य रूप से अपने धर्म व दर्शन का सार्वजननीन प्रचार-प्रसार करते हुये सांस्कृतिक चेतना जागृत करना रहा है, धार्मिक सामाजिक पत्रकारिता ने व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा से दूर रहते हुये सदा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक चेतना के विकास के साथ-साथ जनकल्याण और विश्व बंधुत्व की भावना का प्रचार-प्रसार किया है। इस क्षेत्र में जैन पत्रकारिता की अपनी विशिष्ट पहचान और भूमिका है।

जैन पत्रकारिता का एक शताब्दी का इतिहास अपने उद्‌भव और विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामाजिक-राजनीतिक सुधारों एवं आजादी प्राप्त करने की उत्कृष्ट अभिलाषा की पृष्ठभूमि में अंकुरित-पल्लवित हिन्दी जैन पत्रकारिता आज स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय चरित्र और संस्कार निर्माण के पवित्र संकल्प के प्रति प्रतिबद्ध है।

जैन पत्रकारिता का राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है आज भी प्रमुख समाचार पत्रों में जैन समाज के लोग प्रमुख भूमिका में हैं। टाइम्स ग्रुप, गुजरात में गुजरात समाचार, महाराष्ट्र में लोकमत, राजस्थान में पत्रिका, दक्षिण भार में मातृभूमि के मालिक जैन ही हैं। पंजाब केसरी के डायरेक्टर जैन ही हैं। जहां तक जैन पत्र-पत्रिकाओं की बात है तो एक जानकारी के अनुसार दिल्ली में आर.एन.आई कार्यालय में 700 से अधिक जैन पत्र-पत्रिकायें पंजीकृत हैं। शायद ही इतनी अधिक संख्या में कोई अन्य समाज की पत्र-पत्रिकाएं पंजीकृत हों। जैन पत्रकारिता का गौरवमयी इतिहास रहा है, लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बात करें तो जैन पत्र-पत्रिकाएं संघर्ष

करती नजर आ रहीं हैं। कुछ ही पत्र-पत्रिकाएं है जो वर्तमान इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में भी अपनी उपयोगिता, प्रासंगिकता और सार्थकता बनाये हुये हैं, उनमें एक पत्रिका का नाम प्रमुख है, वह है दिगम्बर जैन युवक संघ, श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर से ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज के मार्गदर्शन में प्रकाशित संस्कार सागर(मासिक)। यह पत्रिका अपनी शुरुआती दौर से ही समाज में अपनी उपयोगिता सिद्ध करती आयी है। पत्रकारिता के क्षेत्र में इस पत्रिका ने उल्लेखनीय योगदान दिया है।

'संस्कार सागर' पत्रिका का मुख्य लक्ष्य उच्च मानवीय नैतिक मूल्यों का विकास करते हुये सांस्कृतिक जागरण पैदा करना रहा है। पत्रिका का प्रकाशन लाभ-अर्जन अथवा अन्य संकीर्ण हितों की पूर्ति के लिये नहीं किया गया। यह पत्रिका विशुद्ध रूप से समाज सुधार के संकल्प तथा अपने धार्मिक आदर्शों और सांस्कृतिक जागरण के प्रचार-प्रसार के लिये प्रकाशित होती आ रही है। 'संस्कार सागर' की पत्रकारिता सादा जीवन, अहिंसक दृष्टि, सेवा धर्म, नैतिक उन्नयन, शाकाहार, जीवदया, क्षमा, प्रेम, मैत्री जैसे जीवन मूल्यों के विकास के लिये समर्पित है। संस्कार सागर पत्रिका का मुख्य धरातल धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्यों के विकास के साथ सम्बद्ध है। समय-समय पर धर्म के शुद्ध स्वरूप को विकृत करने वाली विकृतियों व आडम्बरों पर भी 'संस्कार सागर' पत्रिका ने प्रहार किये हैं। साधु व श्रावक के शिथिलाचार को भी पत्रिका ने समय-समय पर प्रकट किया है। इस पत्रिका ने नवीन साहित्यिक विधाओं यथा- निबंध, पद्य, प्रवचन, कहानी, एकांकी, इंटरव्यू, उपन्यास, यात्रावृत्त, पत्र, कला एवं पुरातत्व, पुस्तक समीक्षा, प्रश्नोत्तर आदि में रचनात्मक लेखन को प्रोत्साहन दिया है। प्राचीन जैन कला, शिल्प के वैशिष्ट्य को रेखांकित करते हुये तत्संबधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रकाशित कर पत्रका ने देश की सांस्कृतिक सम्पदा को अक्षुण्ण बनाये रखने में भी अपना योगदान दिया है।

प्रसन्नता की बात है कि 'संस्कार सागर' पत्रिका अपना रजत वर्ष समारोह मना रही है। किसी भी पत्रिका के लिये यह क्षण बहुत ही महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक पत्रिका नियमित और उपयोगी निकालना बहुत ही श्रमसाध्य, व्ययसाध्य और समयसाध्य कार्य है। संस्कार सागर पत्रिका ने विगत 24 वर्षों में अपनी निरंतरता बनाये रखकर समाज में अपनी लोकप्रियता, पठनीयता और आकर्षण को निरंतर बढ़ाया है। इस पत्रिका में सभी वर्ग के लिये पठनीय सामग्री का होना, इसकी सबसे बड़ी ताकत है। लेख कहानी, कविता, यात्रा, आगम न्याय, दिशाबोध, कैरियर, बाल संस्कार, हमारे गौरव, बात पते की जैसे स्थायी स्तंभ इस पत्रिका की उपयोगिता को बताते हैं। प्रत्येक अंक का संपादकीय अपनी विशिष्टता लिये होता है। कवर पृष्ठ को आप सभी ने देखा होगा, प्रत्येक अंक का बहुत की आकर्षक चित्रकला से बना कवर पृष्ठ सभी को मोह लेता है। कवर पृष्ठ तैयार करने में परम पूज्य ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज का अथक श्रम, सोच, चिंतन समाज को एक नयी दिशा दिखाता है। आज यदि यह पत्रिका निरंतर प्रगति कर रही है तो उसमें संपादक मंडल की बहुत बड़ी भूमिका है। खासतौर से आदरणीय ब्र. सुरेश मलैया जी और ब्र. जिनेश मलैया जी का पूर्ण समर्पण इस पत्रिका को नयी दिशा प्रदान कर रहा है। निश्चित रूप से संस्कार सागर पत्रिका संस्कारों की वाहक है।

हाल ही में हमारे देश की सर्वोच्च न्यायालय को मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड जी ने कहा था कि जैसे न्यायपालिका से पारदर्शी व निष्पक्ष न्याय व्यवस्था अपेक्षित है वैसे ही पत्रकारिता जगत् से यही अपेक्षा की जाती है। निश्चित रूप से पत्रकारिता पर समाज, देश को दिशा देने और जागरूक करने का दायित्व है। इस दायित्व को संस्कार सागर पत्रिका बखूबी निभा रही है। रजत वर्ष में प्रवेश कर चुकी इस पत्रिका की उल्लेखनीय बात यह है कि इतने वर्षों में कभी भी संयुक्तांक नहीं निकालना पड़ा। यू तो इस पत्रिका के सभी स्तंभ पठनीय है हीं लेकिन चातुमार्स के समय जो विशेषांक प्रकाशित होता है, इसकी समाज, श्रेष्ठि, पत्रकार, विद्वान, साधु-साध्वी सभी को इंतजार रहता है। इस अंक में प्रकाशित आकड़ों को सभी अपने आलेखों, प्रवचन, व्याख्यानों में उल्लेख करते हैं। इसमें सभी साधु-साध्वी का तथ्यात्मक शोधपूर्ण आंकड़ा प्रकाशित होता है जो बहुत ही श्रमसाध्य कार्य है, इसे पत्रिका प्रतिवर्ष निकाल रही है जो ऐतिहासिक दस्तावेज से कम नहीं है।

दिनांक 22 व 23 अप्रैल 2023 को पंचबालयति मंदिर विजयनगर इंदौर के तीर्थंकर वाटिका प्रांगण में परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य मुनि श्री विमलसागर जी के सान्निध्य में 'संस्कार सागर' पत्रिका रजत वर्ष समारोह में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। इस मौके पर सान्निध्य प्रदान कर रहे मुनिराजों का भी रजत मुनि दीक्षा दिवस मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आयोजन में 'संस्कार सागर' पत्रिका से जुड़े प्रमुख लोगों को उपाधियां प्रदान की गई मुझे भी 'संस्कारश्री' उपाधि ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हुआ।

इस मंगल अवसर पर मैं यही भावना भाता हूं कि 'संस्कार सागर' पत्रिका निरंतर गढ़ते हुये दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुये हमेशा समाज की सेवा करते रहे और निरंतर अपनी पैनी पत्रकारिता के माध्यम से समाज को जागरूक बनाये रखने में अपनी अहम् भूमिका का निर्वाहन सदियों तक करती रहे।

कविता

सूअर का सवाल

बाघ की रक्षा करती सरकार
फिर भी वह गुरीता है दहाड़ता है आदमी पर
चीते की मांग विदेशों से होती है
पर वह आदमी पर धोके से करता है वार
कुत्ते से भी आदमी करता है प्यार
जानवर बन जाते हैं इंसान के यार
फिर मैंने क्या बिगाड़ा है मानव का
मैं करता हूँ सफाई दूर करता हूँ बीमारी पर मुझे मिलती है दुत्कार
क्या मुझे नहीं हैं जीने का अधिकार पत्थर मारकर
क्या तुमने नहीं किया है धर्म को तार-तार
मैं निर्बल सूअर करता हूँ दरकार मुझे भी जीने का अधिकार

संस्कार सागर अवदान एवं मूल्यांकन

डॉ. संगीता दिलीप मेहता, इंदौर

संस्कार सागर का वर्ण्य विषय और वैशिष्ट्य

संस्कार सागर पत्रिका के रजत जयंती वर्ष पर संस्कार सागर के संपादक मंडल को हार्दिक बधाईयाँ ।

संस्कारों के सागर को पत्रिका की गागर में समाहित कर दिया है इस पत्रिका के 25 वर्ष सफलता पूर्वक पूर्ण होना इसकी लोकप्रियता और विशेषताओं को उद्घाटित करता है।

संस्कार सागर शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक कृधातु से धञ् प्रत्यय लगकर बना है। यह विशुद्धि, शिक्षा, प्रशिक्षण, पूर्ण करना आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त है।

संस्कार शब्द अपने में अत्यंत व्यापक अर्थ अपने में समाहित किये हुये हैं। उसी तरह इस पत्रिका में भी अनेक विषय समाहित है। जो व्यकित का बहुमुखी विकास करते हैं।

संस्कार सागर में एक और जैन धर्म, दर्शन और अध्यात्म है तो दूसरी और साहित्य और इतिहास के विषय भी हैं। जीवन से जुड़े हुये विविध विषय चिकित्सा, सामान्य ज्ञान और शिक्षा से संबंधित निबंध और आलेख भी है।

इसमें सामाजिक और पारिवारिक, सम सामायिक, प्रासंगिक अनेक विषय है तो दूसरी और संत परंपरा और उनके साहित्य के विविध पहलुओं का वर्णन भी है । जैन आयोजनों का समायोजन भी है । ऐतिहासिक जैन महापुरुषों से लेकर आधुनिक गौरवशाली व्यक्तित्व के परिचय भी इनमें मिलते हैं।

मनोरंजन के लिये कविताएं, कथाएं, लघु कथा, बाल कथाएं, चुटकुले और मनोरंजन पहेलियां है तो मस्तिष्क का व्यायाम भी करा देती है।

भारत राष्ट्र के प्रति प्रेम और भारतीय भाषाओं संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी आदि के प्रति निष्ठा दृष्टिगत होती है।

प्राचीन साहित्य से लेकर के अर्वाचीन साहित्य की समीक्षाएं न केवल साहित्य की विधाओं का परिचय कराती है। अपितु सभी का ज्ञान वर्धन भी कराती है।

मुखपृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक न केवल शब्द चित्र है अपितु रेखा चित्र अर्थात् चित्रकला संबंधी उद्धरण भी मिलते हैं । संगीत चित्रकला मूर्तिकला वास्तु कला और स्थापत्य के विषय भी इसमें यत्र तत्र हैं। जैन तीर्थ, व्रत, उत्सव, पंचकल्याण, शुभ मुहूर्त, वार, तिथि, नक्षत्र आदि ज्योतिषीय ज्ञान के साथ सामान्य ज्ञान के अनेक विषय समाहित है । इतना ही नहीं इसमें जीविकोपार्जन की दिशाएं भी हैं।

हर उम्र और हर वर्ग के लिये इस पत्रिका में ज्ञानवर्धक सामग्री है। इस पत्रिका के पृष्ठ को जो कोई भी खोलता है अपने अनुरूप सामग्री इसमें वह प्राप्त कर लेता है और आनंदित भी होता है।

संस्कार सागर में समय-समय पर विशेषांक का प्रकाशन भी होता है।

प्रतिवर्ष चातुर्मास विशेषांक निकलता है जिसमें पूरे देश में दिगंबर जैन संतों के चातुर्मास के स्थानों का और उनके अवदानों का उल्लेख होता है। साथ ही अनेक अवसरों पर विशेष अंकों की श्रृंखला है जिनमें महावीर जयंती विशेषांक, समाधि विशेषांक, दीक्षा गुरु महिमा विशेषांक, तीर्थ क्षेत्र विशेषांक आदि प्रमुख है। वर्ष 2018 में परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी के व्यक्तित्व कृतित्व और अवदान ऊपर केंद्रित करके 12 विशेषांक प्रकाशित हुये हैं। जिनमें शोध साहित्य विशेषांक, परिवार दर्शन विशेषांक, सामाजिक -राष्ट्रीय-शैक्षणिक-अर्थ चिंतन विशेषांक, विद्वानों की नजरों में संस्करण विशेषांक, साधना चर्या/वैशिष्ट्य, मूकमाटी विमर्श विशेषांक, आयोजन समायोजन विशेषांक, चेतन कृति विशेषांक आदि प्रमुख हैं।

नियमित स्तंभ भी अत्यंत रोचक है जैसे

पाती पाठकों की, भक्ति तरंग, संस्कार प्रवाह, संयम स्वास्थ्य योग, चलो देखे यात्रा, आगम दशन, पुराण प्रेरणा, माथापच्ची, कैरियर गाइड, दुनिया भर की बातें, इसे भी जानिय, दिशा बोध, आओ सीखें जैन न्याय, हमारे गौरव, डाक टिकट, जैन इतिहास, हास्य तरंग, बाल संसकार डेस्क, संस्कार गीत व बाल कविता, समाचार प्रतियोगितायें, अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षायें ओर वर्ग पहेली आदि है।

इस पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह इसका प्रकाशन बिल्कुल समय पर होता है। विलंब नहीं होता है। इसके प्रकाशन में कही बाधा नहीं आती है। जिसे वर्ण्य विषय में विविधता है, रोचकता है, भाषा में सरलता है, कहीं भी दुरुहता या प्रवाह में रूकावट नहीं आती है। पत्रिका की निरंतरता ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

यह पत्रिका प्रामाणिक है, पंजीकृत है इसमें प्राचीनता और आधुनिकता का समन्वय है। जैन संस्कृति, कला, साहित्य, इतिहास और जैन जीवन शैली का यह दस्तावेज है। इसमें चारों अनुयोगों, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग की विषय वस्तु सरल रूप में समाहित है। यह केवल पत्रिका नहीं अपितु जैन जीवन शैली का संक्षिप्त कोष है। इस पत्रिका के व्यापक परिदृश्य के लिये चित्रात्मक प्रस्तुति के लिये ऐलक सिद्धांतसागरजरी का अवदान वंदनीय है।

ब्र. जिनेश मलैया जी श्रमसाध्य कार्य का प्रतिफल अभिनंदनीय है।

भाषा की दृष्टि से, साज सज्जा की दृष्टि से, वर्ण्य विषय की विविधता की दृष्टि से देखें तो इस पत्रिका में संस्कार के सिंधु को पत्रिका के बिंदु में समाहित कर लिया है। यह पत्रिका अपने नाम को सार्थक करती हे।

प्रतिमाह 8000 प्रत्रिका का प्रकाशन होता है और पूरे देश में वितरण होता है।

रजत जयंती वर्ष को पूर्ण कर यह पत्रिका स्वर्ण जयंती वर्ष, हीरक जयंती की यात्रा का पथ प्रशस्त करे तथा और परिष्कृत और सुसंस्कृत होकर पत्रकारिता के क्षेत्र में नित नई ऊँचाईयों को प्राप्त करें।

संस्कार सागर का प्रतिस्पर्धा स्वरूप

❊ डॉ. समता अनुराग जैन, इंदौर ❊

संस्कार सागर एक मासिक पत्रिका है और पत्रिका का संबंध पत्रकारिता से होता ही है। यह भी सत्य है कि सूचना समाज का अभिन्न अंग है और सूचनाओं के प्रचार-प्रसार में माध्यमों और विषय सामग्री की महती भूमिका रहती है। संस्कार सागर के वैशिष्ट्य पर जितना कहा जाये कम है या हूँ कहे कि यह लघुकाय पुस्तिका गागर में सागर भरने वाली सूक्ति को चरितार्थ करते हुये अनवरत् विगत 25 वर्षों से सफलता की ओर अग्रसर है।

मैं अपने अवलोकन के आधार पर संस्कार सागर पत्रिका में संकलित सामग्री के प्रतिस्पर्धा स्वरूप को उद्घाटित करते हुये निष्पक्ष रूप से कहना चाहती हूँ कि संस्कार सागर पत्रिका यथा नाम तथा गुण के सूत्र वाक्य पर शब्दशः खरी उतरती है। इस पत्रिका में सभी आयुवर्ग के पाठकों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखते हुये हिन्दी की गद्य-पद्य विधाओं को जैसे-लेख, कविताएँ, कहानियाँ एवं बाल साहित्य, वर्ग पहेली, समस्या पूर्ति आदि को सरल बोधगम्य स्वरूप में संकलित कर परोसा गया है। जिनके रसास्वादन से अबालवद्ध के मन मस्तिष्क में सहज ही सकरात्मक विचारों का उद्वेलन होने लगता है और कुछ लोगों के अंर्तमन में तो स्वयं को संस्कार सागर के मंच से जोड़ने की भावना भी प्रबल हो उठती है। कथानक एवं काव्य की सरल, प्रांजल और सरस भाषा शैली पाठक को अनायास की आकर्षित करती है और वह बहुविषयक ज्ञान के संस्कार सागर में गोते लगाने लगता है।

इतना ही नहीं यह पत्रिका अबालवृद्ध सभी की क्षमताओं को परखने के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है। संस्कार सागर पत्रिका में एक और धार्मिक ग्रंथ पर आधारित स्वाध्याय परीक्षण हेतु प्रश्नोत्तरी रखी जाती है तो वहीं दूसरी और भाषा एवं शब्द ज्ञान अभिवृद्धि हेतु वर्ग पहेली भी रोचक एवं अतुलनीय विषय वस्तु सिद्ध होती है। माथापच्ची कॉलम में अक्रबद्ध वर्णो को क्रमबद्ध रूप में सार्थक शब्द निर्माण करने की प्रकिया में मानसिक व्यायाम तो होता ही है साथ-साथ इस कॉलम पर सक्रिय रहने वाले पाठक वर्ग का कान्संट्रेशन भी बढ़ता है। समस्या पूर्ति प्रतियोगिता के माध्यम से पाठक के मन में सृजनात्मक शीलता की भावना बलवती होगी तथा वे काव्य रचना करने की दिशा में अग्रसर होंगे। वर्ग पहेली के माध्यम से पाठक वर्ग भाषा ज्ञान शब्द व सामानय ज्ञान में अभिवृद्धि करता है।

वर्ग पहेलियों को हल करने से स्थापित रूप से कई शारीरिक मानसिक लाभ होते हैं, जिन्हें चिकित्सकों ने भी अपने विभिन्न शोधो से प्रतिपादित किया है। तार्किक परीक्षण के लिये समस्या पूर्ति कॉलम अपना अलग ही महत्व रखता है। नियमित रूप से वर्ग पहलेलियाँ भरने वाले भी अगले अंक का बेसब्री से इंतजार करने लगते हैं क्योंकि उनकी प्रतिस्पर्धात्मक वृत्ति उनके परिणाम की अनभिज्ञता में निमग्न है।

संस्कारो की सुरभि जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच के माध्यम से 25 वर्ष से 284 अंकों में अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा के माध्यम से संस्कृति प्रश्न मंच जनसाधारण को मनोरंजन के साथ-साथ तत्वज्ञान की बातें प्रदान करने का अभिनव प्रयोग करती आ रही है। परिणाम स्वरूप स्वाध्या में रूचि रखने वाले लोग भी अपने धार्मिक चिंतन मनन को सरल भाषा में गढ़कर अपने अर्जित ज्ञान को विभिन्न प्रकारों से रखने का सार्थक प्रयास करते हैं।

बदलते परिवेश में मोबाईल के बढ़ते प्रयोग से अबालवृद्ध सभी के मानस पटल पर स्वस्थ्य मानसिकता और प्रतिस्पर्धा की दिशा में संस्कार सागर के माथापच्ची शीर्षक कालम, समस्या पूर्ति आदि प्रतियोगिता एवं वर्ग पहेलियों ने पाठक वर्ग के पर सकारात्मक अमिट प्रभाव डाला है। प्रतिस्पर्धा के युग में पत्र-पत्रिकाओं के समक्ष एक बड़ी चुनौती है कि वह अपनी लोकप्रियता से अपना अलग स्थान कैसे अर्जित करें ? लेकिन संस्कार सागर पत्रिका के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि यह पत्रिका पिछले 25 वर्षो से लगातार निर्बाध गति से निकलती आ रही है। और अपनी लोकप्रियता से मासिक पत्रिका के रूप में सामाजिक, नैतिक और धार्मिक मूल्यों को सहेजते हुये अपने वर्चस्व बनायें रखने में सफल हुई है। विश्वास है आगे भी यह पत्रिका अपनी विषयवस्तु के माध्यम से उत्तरोत्तर प्रगति करते हुये सफलता के नये आयाम प्राप्त करेगी।

मासिक संपादन के लिये संपादक को एक लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। व्यक्तिगत रूप से कहा जाये तो मेरी दृष्टि में संस्कार सागर एकमात्र ऐसी पत्रिका है जिसमें जैन समाज के दिगंबर साधु-साध्वियों के चातुर्मास का उल्लेख (आवश्यक जानकारी सहित) समय-समय पर प्रकाशन होता रहता है। जो कि वर्तमान समय की किसी अन्य पत्रिका से उद्घाटित नही है। यह श्रम साध्य कार्य संस्कार सागर पत्रिका के लिये अद्वितीय है। नवीन तकनीकी में युग में तकनीकी माध्यमों के अनुप्रयोग से यह पत्रिका ऑनलाईन भी उपलब्ध है। ताकि इसका प्रयोग दुरस्थ लोग भी कर सके।

मैं संस्कार सागर पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े समस्त माननीय बंधुजनों को साधुवाद देते हुये, हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई देती हूँ। जिनके अथक संकल्पित प्रयासों से निर्बाध गति से यह पत्रिका निर्धारित समय पर होती आ रही है और होती रहेगी।

अततः इस पत्रिका के कॉलम पर काव्य पंक्तियों में गुम्फित भाव मेरी कलम से

समस्या पूर्ति करूँ मैं कैसे ?
वर्ग पहेली भरूँ मैं कैसे ?
माथापच्ची होती है भाई ?
इसीलिये संस्कार सागर पत्रिका मंगवाई।
संस्कारों पहने हम बाना
यह पत्रिका को घर में लाना
नहीं चलेगा कोई बहाना
प्रश्नोत्तरी भरकर पहुँचाना।

क्रमांक-31 वरिष्ठ नागरिक

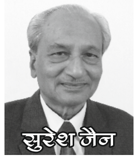

ढलती उम्र में भक्ति-प्रार्थना

प्रभु हम सबको ऐसी शक्ति दे कि हम निरन्तर प्रार्थना के साथ जुड़े रहे।

प्रार्थना जीवन का आवश्यक तत्व है। सच्चे मन से की गई प्रार्थना आश्चर्यजनक कार्य करती है। प्रार्थना के समय हमारा विश्वास होना चाहिये कि हमारी प्रार्थना सुनी जा रही है। संकट निवारण में भी प्रार्थना आवश्यक रूप से सहायता करती है। हम सस्त कार्य व्यवहार नित्य ही करते हैं, जैसे भोजन करना, सोना, लेन-देन इत्यादि। इन सबके साथ-साथ प्रार्थना भी नित्य ही होना चाहिये। तीन प्रकार के शरीर माने गये हैं । स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर। भोजन से स्थूल शरीर स्वस्थ रहता है और प्रार्थना से अंतः शरीर पुष्ट रहता है। जीवन में हम जो व्यवहार करते हैं, वह चलते-फिरते शरीर अर्थात् स्थूल शरीर के माध्यम से ही संभव हैं। जब हम निद्रा में होते हैं, उस समय स्थूल शरीर से कोई भी काम नहीं हो रहा होता है और सूक्ष्म शरीर क्रियाशील हो जाता है। उससे भी परे कारण शरीर में केवल वासना रहती है, जैसी वासना अंतिम समय में होगी वैसा ही शरीर मिलता है। उच्च चिन्तन में उच्च जीवन में चला गया तो उसे श्रेष्ठ जीवन मिलेगा, अंतिम क्षण तक जीवन सुधारने के लिये प्रार्थना एक साधन है। प्रार्थना बुराईयों का दमन करती हैं। वह अच्छे विचारों को उत्पन्न करती है, जो नित्य प्रार्थना करते हैं वह प्रार्थना के बिना नहीं रह सकते। जब कभी ऐसी स्थिति आ जाती है कि जिस दिन वह प्रार्थना न कर पायें वह दिन उन्हें अपूर्ण लगता है। ऐसा लगता है कि आज कुछ महत्वपूर्ण छूट गया है। कर्मो के वशीभूत होने से परिस्थितियां प्रभावित करती हैं, लेकिन प्रार्थना के द्वारा विपरीत परिस्थितियां भी प्रभावित नहीं कर पाती। परमात्मा ने हमें प्रसन्न जीवन जीने के लिये भेजा है। इसलिये हमें दुःखों में भी ईश्वर का ध्यान करते हुये प्रसन्न चित्त रहना चाहिये। प्रार्थना से हमें दुःख सहन करने की शक्ति मिलती है। जिस प्रकार वर्षा में हम छाता लेकर निकलते हैं तो हमारे ऊपर पानी की बूंदे नहीं गिरती। वर्षा तो हो रही होती है लेकिन हम उससे प्रभावित नहीं होते। उसी प्रकार प्रार्थना भी दुःख में हमारे ऊपर छाते का काम करती है। दुःखों का हम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। प्रार्थना (दुःख) में छाते की तरह है। जीव को प्रायः परमात्मा का ही आश्रय लेना चाहिये। क्योंकि वह इतना दयालु है और करूणा करने वाला है कि जीवन पर करूणा किये बिना नहीं रह सकता। प्रार्थना करते रहने से हम में बड़ा बल आ जाता है। जब तक जीवन में अहम् की भावना रहती है। तब तक वह परमात्मा को नहीं पा सकता। जब मनुष्य में यह भावना आ जाये, मैं कुछ नहीं मेरा कोई अस्तित्व नहीं तब परमात्मा दौड़े चले आते हैं। शबरी के जीवन में राम नाम के बिना कुछ नहीं था, इसलिये मार्ग में स्वागत के लिये खड़े ऋषियों को छोड़कर भगवान राम शबरी की कुटिया में पधारे। शबरी की प्रार्थना में बल था। नित्य ही अन्तः मन से की गई प्रार्थना आराध्य को स्पर्श करती है। प्रार्थना मानव को जागृत करने का क्षण है। जीवन

निरर्थक भ्रमित न हो, इसलिये प्रार्थना अन्तः विश्लेषण करने का अवसर देती है। महात्मा गांधी भी प्रार्थना में अधिक विश्वास रखते थे और प्रार्थना उनके जीवन की अभिन्न अंग थी।

वैसे तो हम जब बाल्यकाल से स्कूल जाना आरंभ करते हैं तो सब से पहले स्कूल में पड़ाई शुरु होने से पूर्व प्रार्थना करवाई जाती है, जिस में हर क्लास के बच्चे को भाग लेना अनिवार्य होता है। परंतु स्कूल से निकलने के बाद हम प्रार्थना करनी सदैव के लिये भूल जाते हैं, और सारी जिंदगी फिर कभी प्रार्थना करते ही नहीं। प्रार्थना को अपनी पूरी जिंदगी का हिस्सा बनाईयें।

अब अपने ही शरीर की ओर आईए, स्थूल शरीर की चिकित्सा, चिकित्सकों को द्वारा होती हैं। सूक्ष्म शरीर की चिकितसा योग साधना के माध्यम से की जाती है। कारण शरीर की चिकित्सा ध्यान की गंभीर स्थिति में संभव होती है। यह स्थति योगियों और संतों को भी कभी कभी मिलती हैं जो जीवन ॐ का उच्चारण करते समय उसके अर्थरूप का चिन्तन करते हुये शरीर का त्याग कर जाता है।

वह परम गति को प्राप्त हो जाता है, परमात्मा माँ हैं। प्रार्थना करते समय हृदय शुद्ध होना चाहिये। किसी के प्रति छल, क्रोध इत्यादि की भावना नहीं होनी चाहिये। क्योंकि भगवान कहते हैं कि मुझे वहीं जीवन पा सकता है जो छल-कपट इत्यादि से दूर रहता है।

निरमल मन जो सो मोहि पावा, मोहिम कपट छल-छिद्र न भावा।

प्रभु हम सबको ऐसी शक्ति दे कि हम निरन्तर प्रार्थना से साथ जुड़े रहे।

कविता

शिरपुर तीर्थ महान

संस्कार फीचर्स

अंतरिक्ष प्रभु पार्श्वनाथ का शिरपुर तीर्थ महान
ढ़ेरों अतिशय इस तीरथ के देव करें गुणगान
मूल स्वरूप दिगम्बर सुन्दर पार्श्वनाथ की है मूरत
आवरणों आभरणों से शून्य रहित विरागी है सूरत
संकट मोचक पार्श्वनाथ का शिरपुर तीर्थ महान
श्वेताम्बर ने माया जाल रच छल से लेप चढ़ाया
मूल स्वरूप बदल कर प्रभु का असली रूप छुपाया
सत्य स्वरूप दिखेगा इक दिन भक्तों का श्रद्धान
कुन्द कुन्द गुरु विद्यानन्द ने शिरपुर तीर्थ बताया
मदनकीर्ति गुरुवर ने ही महातीर्थ गुण गाया
सदियों का इतिहास बतायें शिरपुर तीर्थ महान
शिल्प कला में पाषाणों पर दिखता रूप दिगम्बर
चीख चीख कर कहे जिनालय मेरा रूप दिगम्बर
अतिशय क्षेत्र मोक्ष पथ दृष्टा, शिरपुर तीर्थ महान

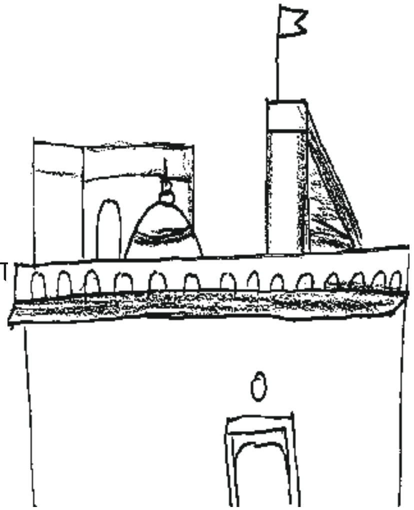

कब्ज की नब्ज कारण व नियंत्रण उपाय

❋ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❋

हम जो कुछ भी मुख द्वारा सेवन करते हैं उसमें अधिकांश सार भाग शरीर के पोषण के लिये आवश्यक होता है जो पचकर रस के रूप में खून में शोषित हो जाता है। पावन व शोषण के पश्चात् भोजन के अनावश्यक अंश मल के रूप में रोज कनल जाते हैं यही स्वाभाविक नियत है। जब ऐसा न होकर मल आंतों में रूका रह जाये, जो रोज न निकले या कष्ट से निकलता हो अथवा बहुत जोर और चेष्टा करने पर थोड़ा निकलता हो उसे कब्ज या कोष्ठबद्धता कहते हैं। कब्जियत ही ऐसा रोग हे जो लगभग हर घर में दूसरे या तीसरे व्यक्ति में पाया जाता है जो औसतन 63% कब्ज व पेट संबधित रोगों का होता है।

कब्ज होने के कारण: कब्ज होने के जो प्रमुख कारण हैं 1. प्रतिदिन अधिक मात्रा में गरिष्ठ चीजें खाने और उसमें जलीय अंश कम होना, तेल मसालेदार भोजन, चिकनाई युक्त फाइवर युक्त भोजन न करना, पानी कम पीना। 2. समय पर भोजन न करना, पूरी तरह से भोजन न चबाना, जल्दी-जल्दी भोजन करना। 3. नियमित समय पर शौच न करना, शारीरिक परिश्रम नहीं करना। 4. अधिक मानसिक तनाव, डर, नींद न होना, अल्कोलिक पदार्थों का सेवन करना। 5. बहुत दिनों तक पेट साफ करनी वाली दवाईयाँ व अन्य रोगों संबंधित अधिक समय पर औषधियों का उपयोग करना। 6. रक्त हीनता, पक्षाघात, अतिसार, भूख बढ़ जाना, शुगर रोग, फेफड़ों से संबंधित रोग, पाचक रस कम निकलना, पेट में कीड़े होना, बवासीर, फिस्टूला होना यदि मलाशय से पूरा मल विर्सजन नहीं होता है तो कब्ज हो जाता है।

कब्ज के लक्षण: कब्ज से कई तरह की बीमारियाँ आपको घेरने को तैयार खड़ी है आंतों के भीतर बहुत दिनों तक मल जमा होने से सड़ना आरंभ हो जाता है, जिससे एक प्रकार का विषैला पदार्थ खून में मिल जाता है और उसमें निम्नलिखित लक्षण प्रकट होते हैं। 1. सिरदर्द, आँखों में ऐसा दिखाई देता है मानो सब कुछ उड़ रहा है, पाचन शक्ति का नाश, अरूचि, भूख न लगना, मुंह का स्वाद बिगड़ना, जीभ सफेद व मैली, पेट फूलना, कलेजे में धड़कन, चिडचिडापन, कमजोरी, नींद न आना, हल्का बुखार बना रहना, शरीर में दर्द। 2. आंतों में बहुत दिनों तक मल जमा रहने से 1. आंतों की हाइपर ट्राफी (आंत की पेशियों की वृद्धि) आंतों का भीतरी आयतन बढ़ जाना (डाइलेशन), आंतों का घाव, आंतों का प्रदाह व कभी-कभी आंतों में छेद हो जाना। 2. हाइपोगैस्टिक वेन पर दबाव पड़ने से बवासीर होना 3. प्यूविकवेन पर स्वान्नाय-दबाव पड़ने से -वीर्यक्षय होना 4. इलियक वेन पर दबाव पड़ने से पैर का तलबा फूलना 5. सेक्रेल प्लेक्सस पर दबाव पड़ने से स्वान्नियविक दर्द और सायटिक होना।

कब्ज होने की पहचान: भोजन व पाचन व शोषण के पश्चात् भोजन को अनाश्यक अंश मल के रूप में शरीर से विसर्जित हो जाते हैं इसलिये पावन संबंधित अधिकांश रोगों के निश्चित निदान हेतु मल की भौविक व रासायनिक परीक्षा अति आवश्यक होती है।

इतना ही नही कभी-कभी परीक्षण से दूसरो रोगों की ठीक प्रकृति समझने में भी सहायता मिल सकती है जैसे प्रैक्रिया ज, आंत्र संबंधित रोग आदि।

1. साधारणतया स्वस्थ अवस्था में मल धन या अर्घधन अवस्था में होता जो अर्घ ठोस गोलाकार वेलन के रूप में निकलता है जो हल्के बादामी गहरा बादामी तक हो सकता है।

2. मल सूखी गांठों के रूप में निकलने का मतलब है कि आंतों में जलीय अंश का शोषण अधिक या रोगी पानी की उचित मात्रा नहीं ले रहा है।

3. मल के साथ खाये हुये पदार्थों का अंश निकलना जो अधिक भोजन करने से पाचन शक्ति कमजोर हो गई है।

4. मल पतले वेलन के रूप में निकलना मलाशय की संकोचन पेशी के संकोचित होने जिसका कारण मलाशय में मस्से या फिस्टूला है।

5. पतले पीले दस्त का समान मल-मलद्वार के केंसर, सिफलिस या गनोरिया होने के कारण है। पतले द्रव रूप में मल निकलना बड़ी आंत की विकृति हो।

6. मल का रंग राख समान वर्ण रहित, काले रंग, मल के साथ शुद्ध रक्त, हरे पीले दस्त, झागदार पीले, मटर के समान हरे दसत आदि लिवर, पाकाशय बबासीर या कोलाइटस छोटी आंत रोग, अपच, ट्रयफाइड या आंत ज्वर के संकेत होते है।

7. माड समान मल- विभिन्न कृमि, लार्वा, आंत शूल, रक्त हीनता, भूख बढ़ जाना, सुस्ती, अग्नि की मन्दता, आंत रोध के लक्षण प्रकट करते है।

8. जरायु की विवृद्धि या जरायु का हटना, आंतों के भीतर पथरी, फल के बीज गुठली आदि फस जाने पर भी कब्ज हो जाता है।

सावधानी व नियंत्रण उपाय- इस रोग में प्रमुख तीन बातों को अच्छी तरह लक्ष्य बनाकर पालन करने से कब्ज में बहुत कुछ लाभ मिल जाता है।

1. आहार की सुव्यवस्था, नियमित दिन चर्या व्यायाम, औषधि उपयोग, कब्ज होने कारणों का पालन करना चाहिये। सुबह उठने के बाद एक गिलास कुनकुना पानी व रात को सोने के पूर्व कुनकुना पानी पीने से कब्ज दूर होता है।

2. सूर्य उदय के बाद पाचन शक्ति तेज रहती है व सूर्यास्त से कम पड़ जाती है अतः भोजन इसके पूर्व सबुह 11.30 तक शाम 6.30 के पूर्व करना चाहिये।

3. भोजन करने के बाद आमाशय में भोजन बहुत समय तक रहता है अतः भोजन के 1.30 से 2 घंटे बाद तक बीच में कुछ भी नही खाये व एक गिलास कुनकुना पानी पीने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

4. सुबह शाम भोजन करने पश्चात् तत्काल सोने से पाचन शक्ति प्रभावित होती है व आमाशय में पाचक रसों का निकालना कम हो जाता है अतः 2 घंटे बाद आवश्यक होने पर सोना चाहिये।

जब भी चिक्तिसा पद्धति से समय पर आराम हो जाता है किन्तु रोग की तीव्रता होने पर ऐलोपद्धति व जांच आदि कराना आवश्यक है।

होम्योपैथी चिक्तिसा पद्धति भी बिना किसी दुष्परिणाम के कम लागत पर बहुत सी लाभदायक है जिसमें रोगी के लक्षणों के आधार पर नक्स वोमिका, सल्फट, एल्यूमिना, ब्रायोनिया, साइलिसिया, ग्रेफाइट, नेट्रमम्यूर, ओपियम, एस्कुलस, थूजा, लाइकोपोडियम आदि का उपयोग किया जाता है।

जिन्हें प्रकृति द्वारा प्राप्त वरदान से पावन अग्नि तीव्र होती है उन्हें एक ही बार शौच को जाना पड़ता है। पुरानी कहावत है एक बार योगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी। कोई-कोई मनुष्य एक बार शौच पर जाने के बाद भी मन में शांति नही रहती किन्तु इसके अलावा कोई एक दिन के अंतर से कोई 2-3 दिन के अंतर से शेच जाने पर भी पूर्णतः स्वस्थ्य रहते हैं ।

अतः समय पर कब्ज की पहिचान करके आवश्यक नियमों का पालन करके स्वस्थ्य व निरोगी रहकर जीवन को सुखी रख सकते हैं । स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन ही निवास करता है।

हास्य तरंग

1. चतुर्वेदी जी ने मकान बेचने के लिये प्रॉपर्टी ब्रोकर्स से बात तय कर ली किन्तु दूसरे दिन उन्होंने मकान बेचने से प्रॉपर्टी ब्रोकर्स को मना कर दिया जिसका कारण उन्होंने बताया है कि आज जो मेरे मकान बेचने का विज्ञापन छपा है जिसे पढ़कर मुझे मालूम पड़ा कि मेरे मकान में इतनी सारी विशेषतायें हैं।

2. चौधरी जी रिटायर होने के बाद दो माह तक पेंसन न मिलने से परेशान होकर कार्यालय गये । वहाँ उनसे संबंधित पूर्व परिचित कर्मचारी से बात की तो उन्होंने पहचानने से ही मना कर दिया व बाद में सभी रिकार्ड लेकर आना। चौधरी जी ने उसके हाथ में पांच सौ के चार नोट रखते तो कर्मचारी ने मुस्कुराते हुये बैठने के लिये ईशारा किया और पूंछा कैसे हो यार, भाभी बच्चे कैसे हैं , थोड़ी देर रूके। आपका काम हो जावेगा।

3. पति-पत्नी को हमेशा टोकता रहता था कभी तो पूरा काम किया करो । एक दिन पति ने गुस्से में कहा मैं पागलखाने में कार्य करते-करते आधा पागल हो गया हूँ। तभी पत्नी बोली कभी तो पूरा काम किया करो।

4. बाहार से आवाज आई सौ रूपये में 10 लोगों को भोजन तभी तेजी से सीमा ने आवाज लगाकर उस व्यक्ति से पूंछा तो व्यक्ति ने कहा यह सौ रूपये कि चटाई पर 10 लोगों को बैठाकर भोजन करा सकते हैं।

5. एक बच्चा घर के बाहार रो रहा था, पड़ोसी महिला ने उसे पुचका कर गोद में उठा लिया और कहा रोते नहीं हैं, रोने से बच्चे बदसूरत हो जाते हैं। बच्चे ने महिला को गौर से देखते हुये कहा अंटी आप भी बचपन में बहुत रोती होगी ना।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

रसमलाई

सामग्री

गाय का दूध (छेना बनाने) एक किलो

1 किलो फुल क्रीम दूध

शक्कर दो कटोरी लगभग (केसरी दूध में मिलाने के लिये व पानी में पकाने के लिये)

फिटकरी पौना चम्मच

केशर दस पत्तियाँ

विधि- 1 किलो गाय के दूध या टोन्ड दूध को उबाल लीजिये। फिर नींबू रस या फिटकरी से पनीर बना लीजिये । बिल्कुल वही तरीका जो रसगुल्ले का है। उसी तरीके से फाड़ना है। दूध में उबाल आते ही फिटकरी का पानी डाल लीजिये व पनीर फटते ही एक गिलास ठंडा पानी डालिये व छेना की पोटली से निकालकर बिखेर लीजिये मक्खन जैसा हो जायेगा। अब एक तरफ कुकर में तीन कटोरी पानी व एक कटोरी शक्कर डालकर उबाल लीजिये।

एक किलो फुल क्रीम दूध में केशर डालकर पकाये व शक्कर डालिये उसमें 1/2 आधा कटोरी जब पक जाये गैस बंद करिये । उसमें 1/2 कटोरी जब पक जाये गैस बंद करिये। आपका केसरी दूध तैयार है अब इसे ठंडा होने रख दीजिये।

जैसे ही कुकर में पानी उबल जाये, तब उसमें छेना की छोटी-छोटी टिक्की या बॉल्स बना कर डालें व कुकर को बंद करके दो सीटी लगा दे। कुकर में सीटी लगायें और कुकर खुलने पर इन टिक्कियों को केसर वाले दूध में डाल ले। स्वादिष्ट रसमलाई तैयार है। ऊपर से पिस्ता बादाम बुरक कर सजा लीजिये। यदि शक्कर नहीं डालनी है तो मत डालिये फीकी भी चला सकते है।

बाल कहानी

हिन्दी माध्यम का कमाल

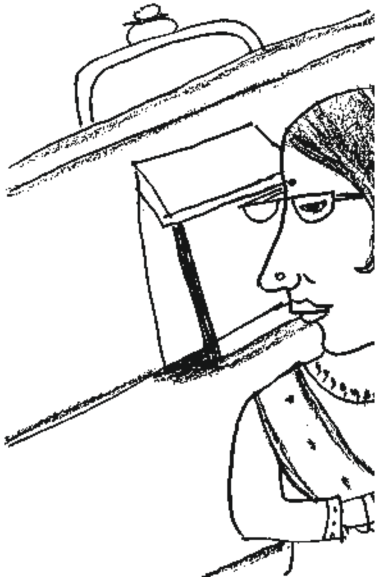

पिछोर महाविद्यालय, शिवपुरी जिले का श्रेष्ठतम महाविद्यालय माना जाता है। इस स्नातकोत्तर महाविद्यालय में विज्ञान निकाय की बहुत अच्छी भूमिका रही है। सन् 2009 में इस महाविद्यालय में रसायन विज्ञान, कार्बनिक एम.एस.सी की कक्षा में 25 विद्यार्थी अध्ययनरत थे, उनमे से 24 विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम के थे। वे अपने आपको स्मार्ट और श्रेष्ठ समझते थे। एक बालिका जिसका नाम राजुल जैन था वह हिंदी माध्यम से एम.एस.सी की पढ़ाई कर रही थी। कक्षा के विद्यार्थी उसे फिसड्डी और पिछड़ा हुआ मानते थे। क्योंकि अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई राजुल को समझ में नहीं आती थी तथा उसने कई बार ऐसा भी सोचा कि पढ़ाई छोड़कर घर बैठ जाया जाये, परंतु उसके पिताजी जयकुमार जी हमेशा एक ही बात समझाया करते थे बेटी कभी भी कोई मातृभाषा में पढ़ने वाला असफल हो जाये ऐसा कोई जरूरी नहीं है। अंतर्द्वंद चलता रहा और इन्हीं अंतर्द्वंद्वों के बीच में हिम्मत करके राजुल ने परीक्षा भी दी। सबको यह विश्वास था सफलता अवश्य प्राप्त करेगी क्योंकि वह हिंदी माध्यम से पढ़ने वाली एकमात्र छात्रा है। 24 छात्रों को ध्यान में रखकर प्राध्यापकगण अंग्रेजी माध्यम से ही अध्ययन कराते थे और वे हमेशा राजुल के कुछ भी पूछने पर कहा करते थे कि यदि आपको अंग्रेजी में समझ में नही आता है तो आप अपना विषय परिवर्तित कर सकती हैं कक्षा में तो अंग्रेजी माध्यम से ही पढ़ाया जायेगा। एक बार फिर प्रयास प्राचार्य मुकेश गुप्ता जी के पास जाकर किया। वहां से भी वो टूक जबाब वही मिला जिसकी उम्मीद थी परंतु राजुल ने हिम्मत नहीं हारी। अपने हौसले और इरादे को बुलंद रखा और हिन्दी माध्यम से अपनी संपूर्ण परीक्षा दी। जब 19 जून 2009 को परिणाम आया तो अंग्रेजी माध्यम के समस्त 24 विद्यार्थी फेल हो गये और एक मात्र हिन्दी माध्यम की छात्रा कु. राजुल ने पास होकर महाविद्यालय के सम्मान को बरकरार रखा। आश्चर्य में डूब सभी लोगो ने कहा कि ये तो कमाल हो गया।

संस्कार गीत

दानी भामाशाह

उस राणा की बात सुनो तुम
जिसने शान बढ़ाई थी
मातृभूमि की की रक्षा हेतु
सूखी रोटी खाई थी

1.
मुगलों की सेना पर जो नित
सदा सिंह झपटा था
जिसके शव पर अंत समय में
केशरिया ध्वज लिपटा था
भारत भूमि गरिमा पर ही
जिसकी सदा लड़ाई थी

2.
भामाशाह बना था दानी
जिनशासन संस्कार से
जिन गुरुओं की मिली प्रेरणा
जिन आगम व्यवहार से
राष्ट्र हेतु सर्वस्व न्यौछावर
जिनवाणी नित गई थी

3.
आजादी की ठानी जिनने
उनने दी कुर्बानी है।
देश प्रथम जिनने माना है
वे ही सच्चे दानी हैं
क्रांतिकारी राष्ट्रभक्त ने देश की
महिमा गाई थी

बाल कविता

स्वाद भरा आम

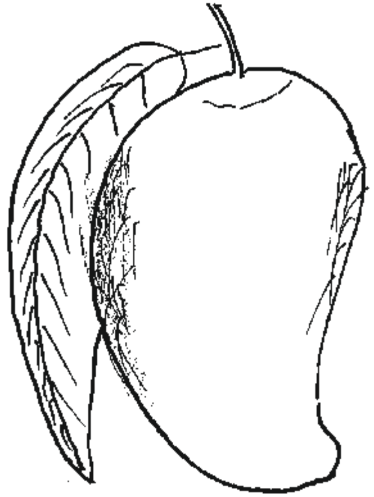

कितना सुंदर मेरा नाम
लोग मुझे कहते हैं आम
ए विटामिन का मैं धाम
मुझ को खाते थे प्रभुराम
हरा पीत है मेरा रूप
मैं हूँ रे सब फल का भूप
मीठा खट्टा रस है मेरा
घना हरा परिवार है मेरा
चूँस चूँस कर सब जन खाते
खाते खाते नहीं अघाते
खाके मुझको रटना राम
कितना सुंदर मेरा नाम

समाचार

समाधिमरण

इंदौर-ब्र. मोतीलाल जैन नंदानगर इंदौर जिन्हें आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा दस प्रतिमा के व्रत ब्र. अनिल भैया के माध्यम से डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ में 27 जुलाई 2023 दोप. 3 बजे दिलाकर आचार्य श्री ने उनका नाम परीतसागर रखा। जिनका समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम इंदौर में 28 जुलाई 2023 को रात्रि 7.45 पर ब्र. भैयायों के सान्निध्य में हुआ।

डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री प्रेमचंद जी कुप्पी वाले छतरपुर का समाधिमरण 19 अगस्त 2023 प्रातः 7.21 बजे हुआ।

डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लकश्री अह्लादसागर जी महाराज का समाधिमरण 08 अगस्त 2023 को हुआ।

शिकोहपुर- श्री दिगम्बर जैन सिद्धांत तीर्थ शिकोहपुर में आचार्य श्री बाहुबली सागर महाराज जी के शिष्या आर्यिका श्रुतदेवी माताजी का समाधिमरण 07 अगस्त 2023 को हुआ।

नवकार तीर्थ- आचार्य श्री देवनंदी महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका श्री पद्ममति माताजी का समाधिमरण 17 अगस्त 2023 को दोप. 12.32 बजे हुआ।

दीक्षायें सम्पन्न

उदयपुर- आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज के करकमलो से हुमड़ भवन उदयपुर राजस्थान में श्री टेकचंद जैन उदयपुर की मुनि दीक्षा 14 अगस्त 2023 को हुई जिनका नाम मुनिश्री पार्श्वयशसागर जी महाराज रखा गया।

फरीदाबाद (हरियाणा)- आचार्य श्री वसुनंदी महाराज जी के करकमलों से श्री आदिनाथ धाम लाल मंदिर फरीदाबाद हरियाणा में श्री दयाचंद जी कोशीकला की क्षुल्लक दीक्षा 04 अगस्त 2023 सायंकाल हुई को हुई जिनका नाम क्षुल्लक श्री करूणानंद जी रखा गया। तथा 04 अगस्त 2023 को ही रात्रि 9.34 मिनट पर एलक दीक्षा हुई एलक श्री करूणानंद जी रखा गया। तथा उन्हीं को मुनि दीक्षा 09.45 मिनट पर दी। जिनका नाम मुनिश्री निःशेषानंद महाराज रखा गया।

णमोकार तीर्थ- आचार्य श्री देवनंदी महाराज जी के करकमलो से रतनबाई पांडे गजपंथा नासिक की आर्यिका दीक्षा 28 जुलाई 2023 को हुई जिनका नाम आर्यिका श्री नियमश्री माताजी रखा गया।

डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के करकमलों से चंद्रोदय तीर्थ डोंगरगढ़ में श्री बालचंद काका संघवी (हूमड़) को दसम प्रतिमा के व्रत 26 जुलाई को प्रातः क्षुल्लक दीक्षा 05 अगस्त 2023 को दी गई जिनका नाम क्षुल्लका श्री अह्लादसागर जी महाराज रखा गया।

संस्कृत पुरुस्कार

जयपुर- डॉ. शीतलचंद जी जैन जयपुर को निर्देशालय संस्कृत शिक्षा राजस्थान जयपुर से राजस्तरीय संस्कृत दिवस समारोह 2023 में संस्कृत विद्वत् सम्मान से सम्मानित कर 31000 रूपये की राशि भी प्रदान की गई। संस्कार सागर परिवार की ओर से बहुत-बहुत बधाई।

वतन की उड़ान प्रतियोगिता सम्पन्न

इंदौर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की महती कृपा एवं आशीर्वाद से भारत को भारत ही बोलो इंडिया नहीं का नारा देना वाले राष्ट्हित चिंतक की भावनानुसार पुस्तक सोने की चिड़िया और लुटेरे अंग्रेज की ऑनलाईन

प्रतियोगिता, www.vidyasagar.guru, इंस्टाग्राम, फेसबुक,ट्विटर, व्हाट्सअप, यूट्यूब, एप स्टोर, प्ले स्टोर आदि के माध्यम से लगभग ग्यारह हजार लोगों ने फार्म भरे तथा 7500 व्यक्तियों ने परीक्षा देकर पुण्यार्जित किया। तथा इस पर अनेक स्थानों पर संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें आजादी के 77वें स्वतंत्रता दिवस 77 आकर्षण पुरुस्कार दिये जायेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय मूकमाटी प्रश्न प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कार वितरित हुये

डोंगरगढ़ (विश्व परिवार)- आचार्यश्री के 56वें दीक्षा दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता विजेताओ का सम्मान आचार्य श्री ससंघ के सान्निध्य में गुरु पूर्णिमा को सानंद सम्पन्न हुआ। उज्जवल पाटनी दुर्ग व वेबसाईट www.vidyasagar.guru के संचालक सौरभ जैन जयपुर एवं विनोद बड़जात्या रायपुर के द्वारा वितेजाओं ने पुरुस्कार प्राप्त किये। ज्ञातव्य हो कि इस प्रतियोगिता में भारत, दुबई, जर्मनी, रोम, आयरलैंड, जापान, हांगकोंग, यू.एस.ए (अमेरिका) सहित 12 देशों के 1800 प्रतियोगी थे। जिनमें 104 प्रतियोगी के शत-प्रतिशत अंक प्राप्त किये, जिनमें लक्की ड्रा सिस्टम से 11 प्रतियोगी चयनित हुये, मीनू भोपाल, विनोद दिल्ली, सपना भोपाल, संध्या इंदौर, किरण हांसी, वसुंधरा बंडा, अग्रिम महरौनी, संगीता मुम्बई, मोनिका टोक्यो जापान, सुरेखा धूलिया व अनुप्रिया ललितपुर, ऑनलाइन इस प्रतियोगिता की विशेषता रही कि इस महाकाव्य को 11 वर्ष से लेकर 95 वर्ष तक आयु के प्रतियोगी लाभान्वित हुये पढ़ने में रूचि दिखाई। बाद में 45 प्रतियोगी को भी सांत्वना पुरुस्कार प्रदान किये गये। स्वाध्याय करवाने का अनूठा एवं अनुपम प्रयास हेतु आचार्य श्री जी ने आयोजकों को व पीयूष गोंदिया को आशीर्वाद प्रदान किया।

चन्द्रयान 3 में महत्वपूर्ण भूमिका

अशोकनगर में जन्मे वैज्ञानिक जी.सी. जैन ने चन्द्रयान 3 में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने सैटेलाइट कैमरे फेब्रिकेशन किये हैं, जिनसे सैटेलाइट को ट्रेक किया जा रहा है और अब वहां से फोटो भेजेगा। अशोकनगर वासियों को इस पर गर्व होना चाहिये।

प्रधानमंत्री संदेश

जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के 2800वें मोक्ष कल्याणक पर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन। भगवान पार्श्वनाथ की मोक्ष सप्तमी की सभी जैन धर्मावलंबियो और अनुवाइयों को हार्दिक शुभकमानायें।

भगवान पार्श्वनाथ ने चातुर्मास के रूप में सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह को सार्थक जीवन का मार्ग बताया। उन्होंने लोगों को अपने भीतर छिपी अनंत शक्ति और असीम क्षमता को पहचानकर पुरुषार्थ और परिश्रम के माध्यम से अपना भाग्य बदलने की सीख दी। उन्होंने अंधकार, अज्ञान और आडंबर से परे लोगों को एक नये आध्यात्मिक प्रकाश की ओर मोड़ा।

मानवता और जगत कल्याण का उदात्त संदेश देते भगवान पार्श्वनाथ के जीवन मूल्य एवं विचार आज भी अत्यधिक प्रासंगिक है। विश्व की जटिलतम समस्याओं का समाधान उनके द्वारा सुझाए गये मार्गों में छिपा है।

स्वतंत्रता की शताब्दी तक की यात्रा का अमृत कालखण्ड, देश के विकास की दिशा में अपने प्रयासों को और तेज गति प्रदान करने का अवसर है। मुझे विश्वास है कि भगवान पार्श्वनाथ जी की शिक्षा व संस्कारों से प्रेरणा लेकर हम एक भव्य, विकसित और समावेशी भारत का निर्माण करेंगे।

इस विश्वास के साथ भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक की एक बार फिर बहुत-बहुत शुभकामनाये।

वर्ग पहेली 287

1		2	3		4	5	■	6
	■	7		■	8		9	
10	11		■	12	■	13		
14		■	15		16	■	■	
■	17	18		■	19	20		■
21	■		■	22			■	23
24	25		■	■	26		■	
27		■	28			■	■	
	■	29		■		■	30	

ऊपर से नीचे

1. संसार के प्रभु, परमात्मा, भगवान -4
2. शुभ्र, सफेद -3
3. जंगल अरण्य -2
4. ग्रुप, समूह -2
5. कार्य, कामकाज -3
6. पंजाब की एक नदी -4
9. आने वाला दिन, बीता दिन -2
11. यान, गाड़ी -3
12. पग, चरण, चतुर्थाश -2
16. उपचार, पट्टी, ड्रेसिंग -6
18. प्रयत्न प्रयास कोशिश -3
20. बिहार, जाना -3
21. धवल टीका के रचयिता -4
23. राम की मोक्ष भूमि -4
25. स्कंध वृक्ष का अंग -2
28. बुद्धि, बोधि, ज्ञान -2

बाये से दाये

1. कषाय पाहुड ग्रंथ पर लिखित एक टीका -7
7. विपिन, जंगल -2
8. हरे रंग की एक मणि -4
10. भित्ती, भीट -3
13. नीरज, कमल, पंकज -3
14. समर्थन, ताकत -2
15. सरोज, कमल, जलज -3
17. दृष्टि -3
19. रूचि, लगाव -3
22. दया, करूणा -3
24. रत्न, रयण -3
26. चित्त अंतःकरण -2
27. वाहनी, देल -2
28. आलाप, व्यर्थकथन -3
29. आदेश, आर्डर -2
30. तह मत, नीचे का वस्त्र -2

वर्ग पहेली 286 का हल

1 मू	2 क	मा	3 टी	4 म	5 हा	का	6 व्य	■
7 ला	त	■	8 स	हा	रा	■	9 य	10 ति
11 चा	रा	■	■	भा	■	12 म	■	मि
र	■	13 बा	14 जा	र	■	15 हा	16 जि	र
■	■	17 ज	ग	त	■	■	र	■
18 ग	19 ली	■	र	■	■	20 म	ह	21 ज
22 ज	न	23 ग	ण	24 ना	■	हा	■	स
रा	■	म	■	25 दा	26 न	वी	27 र	■
28 ज	र्म	न	■	29 न	ट	रा	ज	■

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

कस्तूरी का गंध कहाँ

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

श्री 1008 अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान

श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र शिरपुर (जैन)
ता. मालेगांव जि. वाशिम (महाराष्ट्र)

प.पू. संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा से श्री 1008 अतिशय क्षेत्र पार्श्वनाथ शिरपुर (जैन) में दिगम्बरत्व के ऐतिहासिक वैभव को जीवंत बनायें रखने के लिये आचार्य श्री के वचनामृत से साकार होने जा रहा है शिरपुर (जैन) की तीर्थ भूमि पर भव्य समवशरण मंदिर एवं सहस्रकूट जिनालय एवं यात्री निवास का निर्माण। हम आचार्य कुंदकुंद देव की परम्परा को मूर्त रूप देने जा रहे हैं । अतः इस पुण्य पावन तीर्थ में आप भी अपना यथायोग्य अवदान देकर धर्म प्रभावना को चिरस्थायी बनाने के लिये सहयोग प्रदान करें।

पावन प्रेरणा व आशीर्वाद
आचार्य भगवन श्री 108
विद्यासागर जी महामुनिराज

मार्गदर्शन
पूज्य एलक श्री 105
सिद्धांतसागर जी महाराज

निर्देशन
प्रतिष्ठारत्न
बाल ब्र. विनय भैया "सम्राट"

9 लाख वर्ग फुट के विशाल परिसर में 270×567 फुट आकार में भव्य समवसरण मंदिर एवं सहस्रकूट जिनालय (जिसमें मंदिर की ऊँचाई 207 फुट एवं सहस्रकूट जिनालय की ऊँचाई 126 फुट) जैन इतिहास की एक अनुपम कलाकृति के साथ पीले रंग के पाषाण में होने जा रहा है निम्नलिखित योजनाओं के माध्यम से आप अपनी स्वीकृति प्रदान कर सकते हैं ।

सहस्रकूट के मानस्तंभ पर कुल 16 प्रतिमायें	108 कलश (प्रत्येक)	त्रिकाल चौबीसी कुल 72 वेदियां	11 कलश (प्रत्येक)	मुख्य अन्तरिक्ष शिला	रु. 5100 (प्रत्येक)
सहस्रकूट के मध्य में कुल 48 प्रतिमायें	51 कलश (प्रत्येक)	सहस्रकूट की कुल 4030 वेदियां	रु. 1,11,111 (प्रत्येक)	जिनालय में भूखंड दान 1×1 फुट	रु. 3100 (प्रत्येक)
त्रिकाल चौबीसी कुल 72 प्रतिमायें	21 कलश (प्रत्येक)	त्रिकाल चौबीसी के छत्र, चंवर, भामंडल कुल 72 सेट	रु. 2,51,000 (प्रत्येक सेट)	सामान्य समवशरण शिला	रु. 2100 (प्रत्येक)
समवशरण की अन्य कुल 216 प्रतिमायें	11 कलश (प्रत्येक)	सहस्रकूट के छत्र, चंवर, भामंडल कुल 4032 सेट	रु. 55,555 (प्रत्येक सेट)	[illegible] पाषाण निर्मित कक्षों की कुल संख्या 150	रु. 50,5000 (प्रत्येक)
सहस्रकूट की कुल 4032 प्रतिमायें	रु. 2.02.202 (प्रत्येक)	नक्काशी युक्त स्तंभ कुल 350	रु. 2,22,222 (प्रत्येक)	धर्मशाला के आवासीय कक्ष कुल संख्या 400	रु. 2,51,000 (प्रत्येक)

Mo: 9422616167, 9820288445, 8830644451, 9970709011

दानदाता लिखे हुये मोबाईल नंबर पर फोन करके विस्तृत जानकारी एवं स्वीकृति प्रदान कर सकते हैं।

दान राशी जमा करने हेतु खाता क्रमांक

Beneficiary Name: Shri Digamber Jain Sarvopyogi Dharmik Nyas
Beneficiary A/c No: 697705601767, Bank Name: ICICI Bank Ltd.
Bank Branch: Andheri (East), Mumbai, IFSC Code: ICICI0000544

आपकी उपस्थिति तीर्थ रक्षा का आधार है। शिरपुर पधारकर अभिषेक कर पुण्यार्जित करें।

दिगंबर पंथ के लिये पूजन एवं अभिषेक के लिये समय सारणी

वार	सुबह	दोपहर	शाम रात
रविवार	06:00 से 09:00	12:00 से 03:00	06:00 से 08:00
सोमवार	09:00 से 12:00	03:00 से 06:00	08:00 से 10:00
मंगलवार	06:00 से 09:00	12:00 से 03:00	06:00 से 08:00
बुधवार शुदी	09:00 से 12:00	03:00 से 06:00	08:00 से 10:00
बुधवार वदी	06:00 से 09:00	12:00 से 03:00	06:00 से 08:00
गुरुवार	09:00 से 12:00	03:00 से 06:00	08:00 से 10:00
शुक्रवार	06:00 से 09:00	12:00 से 03:00	06:00 से 08:00
शनिवार	09:00 से 12:00	03:00 से 06:00	08:00 से 10:00

निवेदकः श्री दिगम्बर जैन सर्वोपयोगी धार्मिक न्यास

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/08/2023, पोस्टिंग दिनांक : 03/09/2023